शुद्ध प्रति मर्सियम्मा ...२

पिपरामठ का घंटा वज चुका था । पिता ने उसे नहलाकर भेज दिया था । सुवह साढें ६ वजे आरती होती थी । वह आरती में पहँच चुक था । उसके साथ उसका सहपाठी भी था । करीव आधें घंटे तक एक वडे घंटे के स्वर के साथ वहुत से साधु छोटे-छोटे घरी घंट वजा रहे थे । यह रोज का नियम था । उसके वाद सभी लोग तालियों के साथ राम धुन गाने शुरु करते थे । सभी घंटे तव वन्द हो जाते थे ।

"भये प्रकट कृपाला दिन दयाला कौशल्या हितकारी "

उसके वाद प्रसाद बाँटा जाता था । केले के प्रसाद के साथ वे देनों कुँलाचे भरते हुए स्कुल मैँ पढने जाते थे । स्कुल सुवह सात वजे शुरु होता और १ वजे चिलचिलाती धुप में खतम होता था । वे दोनों घर लौटते समय अपने वागीचे से होते हुए जाते थें । तवतक उसके पिता खेत सें वैलों को खुलवा कर चले गये होते । यह प्रक्रिया सात सालों तक चली । रोज की आरती और स्कुल की पढाई उनमें कौन चीज को भरती उनको नहीं मालुम । वे दोनों आरती के वाद स्कुल में जाते । प्रार्थना की घंटी लगती तो दोनो स्कुल की प्रार्थ्रना में शमिल होते ।

" हे प्रभो, आनन्द दाता ,ज्ञान हमको दीजिये,

फिर एक दिन प्रार्थना वदल गयी और उन्हे वह गाना पडता

, ज्योति की पंख उजाली,गाउँछौं गीत नेपाली ,

उनको यह पता नहीं चला कि प्रार्थना क्यों वदल गयी ? पर यह वदलाव वहुत वडा था । इसके वाद पिपरा मठ कितना वदला इसे कौन कहेगा ?

पिपरापठ - एक आलिशान गम गम करता हुआ मठ जिसमें सैकडों साधु एक साथ आरती करते और एक साथ पंगत करते ।

इसकी प्रसिद्धि दुर-दुर तक थी । इसमें अयोध्यासे लेकर काशी तक के साधु आते थे । कभी शंकराचार्य का भी आगमन होता

DO NOT COPY

था । प्रत्येक कृष्णाष्ठमी में यहाँ दुर-दुर से संगीतकार एवं गवैये बुलवाये जाते थें । उन सवको दोनों अपने पिता के साथ देखने सुनने जाते । कृष्णाष्ठमी मैँ जव छठियार होता था तव छप्पन भोग लगता था । उन्हे वडे उत्सव से स्कुल के सभी बच्चे खाते थे ।

पिपरामठ अपने सौन्दर्य और विशालता में प्रसिद्ध था । चारों और वाग-वगिचों से घिरा हुआ इस मठ का उँचा गुम्वदनुमा घर इसका हृदयस्थल था । इसमें राम,कृष्ण, महावीर आदि सभी देवता ओं की मुर्तियाँ रखी गयी थीं । दरवाजे की एक तरफ पहले हो गये महन्थों के खडाउँ रखे गये थे । भगवान की पुजा के वाद उन खडाउ ओं की पुजा भी होती थी । उन पर फुल चंदन चढते थे । उसके वाद एक वडा सा आंगन था । इसी आंगन में सभी साधु इकठ्ठे होकर आरती करते थे । आंगन के पहले एक वरामदा था । वारमदे के मुल गेट पर महन्थ के लिए एक चौकी रखा रहता था । उस चौकी पर साफ चमकता विस्तर लगा रहता था । उसी पर महन्थ रामकिसुन दास वैठते थे । उसके वगल में एक वडा सा दरी विछाया रहता था जिस पर गण्यमान्य व्यक्ति आते और वैठते थे । महन्थ जी उनसे वातचीत एवं छलफल करते थे । वरामदे के दक्षिण एक कोठली में एक आयुर्वेदिक दातव्य औषधालय था । स्कुल के एक शिक्षक जगदीश लाल उसकी देख रेख करते थें । इलाके में एक मिशनरी डंकन अस्पताल को छोडकर दुसरा कोई उपचार का केन्द्र नहीं था । यह दातव्य औषधालय स्थानीय लोगों के लिए वडा सोच समझकर वनाया गया था । स्कुल के सभी विधार्थीयों का प्राथमिक उपचार उसी में होता था । महन्थ रामकिसुन दास भारत के थे । वे महात्मा गाँधी से वहुत प्रभावित थे । उन्होने ही वह स्कुल भी खोला था जो अगर नहीं होता तो इलाके भर के विधार्थी कहाँ जाते पता नहीं । परन्तु यह महन्थ रामकिसुन दास की दुर-दृष्टि थी । २००८ में यह स्कुल एक फुस के घर में चलता था । एक दिन उस घर में आग

लग गई और स्कुल जलकर स्वाहा हो गया। उसकी लपटों को वह अपने मामा के घर से देखा था। उसके वाद स्कुल लीची के पेड के पास के एक धनसर के वरामदे में लगता था। स्कुल बनकर २००८ में एक नया विल्डिंग का रुप धारण किया और नाम पडा " श्री नृसिंह मिडिल इंगलिस स्कुल "। तव जाकर वे लोग वहाँ पढने लगे।

मठ के चारों ओर वगीचे थें जिसमें सभी प्रकार के पेड लगे थें। उनके फलों को स्कुल के वच्चों को भी खिलाया जाता था। एक वहुत वडे अंहाते के अन्दर प्रायः सभी प्रकार की सव्जियाँ पैदा होती थी। वगीचे के वीच में मठ के द्वार से कुछ दुरी पर एक वडा तालाव था जिसमें कमल के फुल खिले रहते थें।

मठ की स्थापना कव हुई नहीं मालुम। पर दरवाजे पर रखे गये दश खडाउँओं की जोडी से पता चलता था कि महन्थों की दस पीढियाँ समाप्त हो गयी हैं। इस धर्मस्थल में आखिर इतने धन कहाँ से आये,यह पता लगाना भी मुश्किल है क्योंकि यहाँ पर कोई चढावा वगैरह भी नहीं होता। यह मात्र -साधुओं का विशुद्ध पडाव था और वहाँ पर कुछ गन्य-मान्य व्यक्ति ही जाते थें। फिर भी राम किशुन दास के मठ में दो सौ वीघे खेत, चारों ओर हुए धनसर, हाथीं घोडे सव थे।

साधुओं में एक दुवले पतले एवं तेजवान साधु थे - जगरनाथ दास। वे महन्थ राम किशुन दास के चेला थे। महन्थ राम किशुन दास के वाद इन्ही को महन्थ की पदवी मिलने वाली थी। वे इतने नेक एवं सीधे सरल थे कि इलाके भर के लोग उनसे प्रभावित हुए विना नहीं रह सकते थे। परन्तु उनके इसी सीधेपन का फायदा उठाकर कुटिल चतुर दास उनसे कंठी लेकर उनका चेला हो गया। उसको यह आशा थी कि उनके वाद राजगद्दी हासिल कर लेगा। कितना आसान है राजगद्दी हासिल कर लेना। किसी का मात्र चेला

हो जाइए, राजगद्दी हासिल । परन्तु तत्काल वह उनकी चेलागिरी में मठ के विशाल चकवन्दियों को जोतना शरु कर दिया ।.उसके वाद मठ की सम्पति में चुहे लग गये । धनसर खाली होने लगा । हाथी , घोडे, विकने लगे । वकुलिया के सभी खेतों की फसलें आनी वन्द हो गयी । तवतक भुमिसुधार लागु हो गया । वकुलिया में चतुरदास का भाई गाँजे की खेती करता था और थोडी राजनीति जानकर किसानों को भडकाते रहता था । किसानों ने उनसे जागरुक होकर धान देना वन्द कर दिया । लोगों ने जहाँ चाहा वहा खेतों को भुमिसुधार में लिखवा लिया । पता नहीं गुठी की कितनी जमीन थी पर सभी पर लोगों का कव्जा हो गया । मठ अव विपन्नु हो गया । चतुर दास अव इतने सम्पन्न हो गये कि गाँव भर के खेत को अपने नाम पर करा लेने के वाद भी इतना नहीं हुआ था । फिर भी वे महन्थ की पदवी का सपना देखते रहते थे जो पुरा नहीं हुआ ।

हुआ यह कि जगरनाथ दास एक दिन अचानक चल वसे । सारा इलाका सन्न रह गया । उनको हुआ क्या था ? सभी लोग आश्चर्य से पुछते । ऐसा जवान और नेक महात्मा कहाँ मिलेगा ? महन्थ रामकिसुन दास दहाडे खाकर एक साधारण आदमी की तरह रो रहे थे । उन्होंने उनमें एक सच्चे महन्थ होने का लक्षण देख लिया था । उनके मरने के वाद उनका एक घनिष्ठ साधु महात्मा विदुर दास अयोध्या चले गये । पर वे कभी - कभी वसुदेव से मिलने के लिए आते रहते थे । वासुदेव ही उन दोनों वच्चों में एक के पिता थे जिसको पिपरा स्कुल में पढा रहे थे । मठ की सम्पती का कोई मोह उनमें नही था । वे इलाके भर में इमान्दार ही नहीं थे वल्कि अपनी इमान्दारिता के चलने महन्थ राम किसुन दास के सच्चे सलाहकार भी हो गये थे । जव चतुर दास जगरनाथ दास का चेला वने तो उन्होने रोका था । वे उसकी कुटिलता के वारे में जानते थें । परन्तु जगरनाथ दास इतने सुधे थे कि किसी का मन दुखाना उनको पसन्द

नहीं था । उन्होने माथुर भगत को कंठी दे दिया और उनका नाम चतुर दास रखा । चतुर दास पुजा आरती में जाते और वगल में खडे वसुदेव को कनखियों से देखकर हँस देते थें । वसुदेव तो गउ थें, वे क्या करते ?

उसके वाद महन्थ राम किसुन दास को ऐसा शोक लगा कि उनका लम्वा चौडा वलिष्ठ शरीर दुवला होता गया । उनको चीनी की विमारी ने घेर लिया । उनके वदन में वडे-वडे घाव होने लगे जो टांगे पर वुलाये जाते L.M.T.डाक्टर चक्रवर्ती से भी ठीक नहीं हुआ । जव अन्तिम घडी आती है तो मोह घेर लेता है । वे भावी महन्थ चतुर दास के प्रति उत्सुक नहीं थे । वसुदेव भी यही कहते थे । उन्होने मुफ्फरपुर से अपने नौजवान भतीजे रामचन्द्र शाही को वोलवाया और अपना चेला वनाया । उनका नाम राघव दास रखा गया । वह राघवदास मठ को और ले डुवा । उन्होने अपने चाचा ओमप्रकाश को वुलवाया और स्कुल का हेडमास्टर वना दिया । दोनों अपने-अपने स्तर के उस्ताद थे । स्कुल में हेडमास्टर रंगरेलियाँ करता था और मठ के अन्दर महन्थ राघव दास । धिरे-धिरे मठ और उजाड होने लगा । सभी साधु चले गये । त्योहारों के उत्सव समाप्त हो गये । गरीव दास वेचारे यही मर गये । इतना भर से मन नहीं भरा तो राघव दास ने अपने घर मुजफ्फरपुर में जाकर शादी रचा ली और वालवच्चे पैदा करने लगे । कुछ दिनों के वाद वे मठ की वची खुची जमीन को बेचकर स्कुल के हेडमास्टर के साथ यहाँ से रवाना हो गयें । वे अपने वाल-वच्चों के साथ रहने लगे । स्कुल अव भी चलता था । रामचन्द्र साही भुगोल पढाता था । एक दिन वह भी कूचकर गया । जगदीशलाल अपना घर बनाकर पिपरा गाँव में रहने लगे । कोईरिया मास्टर साहव वेचारे वासुदेव के शरण में चले गये । ये ही दो मास्टर उन दोनों वच्चौं के गुरु थें ।

यह है इस मठ की कहानी जिसमें वे दोनों वच्चे पढते थे ।

DO NOT COPY

वह उजाड हो गया । अव कोई वहाँ नहीं जाता । जहाँ हाथिसार था , वह अव भी है पर हाथी नहीं है । जहाँ घोडासार था, वह अव भी है पर घोडा नही है । पोखरा अव भी है पर पानी नहीं है । जहाँ संगीत वजता था वह घर टुट गया है । मन्दिर का गुंवज भी टुट गया हैं । दिवारें किसी किले की कहानी कहती है । पर आरती अभी भी होती है । एक पहाडी साधु सुदर्शन दास को गुठी ने बन्दोवस्त कर दिया है । वही मठ के पुजारी हैं । स्कुल को सरकार ने ले लिया और चल रहा है ।

दश वर्षों में मठ ध्वस्त हो गया । पर वे दोनो लडके वही पर पढकर जवान होने लगे थे । चारों ओर के वगीचे कट गये हैं । कुछ जमीन नगरपालिका ने हडपकर उसमें एक पार्क वना दिया है । पर उस पार्क में कोई नहीं जाता । स्कुल से सटे पश्चिम की ओर वाईपास रोड निकल गया है । स्कुल का रुख पहिले पुर्व की ओर था अव पश्चिम की ओर हो गया है । कुछ दिनों से स्थानिय लोग प्रत्येक शनिवार को हरि किर्तन करते हैं । पर इससे क्या होता है ? पोखरा में विश्व हिन्दु सम्मेलन का स्मारक वना दिया गया है । वही पर राजा ज्ञानेन्द्र ने जव कवुतर उडाया था तव वे कवुतर उड ही नहीं सके । लडखडाकर खेतों में गिर गये । उपस्थित लोगों ने इसे उनके लिए शुभ संकेत नहीं माना था । उसके वाद ही राजा ज्ञानेन्द्र ने इमर्जेन्सी लगाया और उनका तख्ता पलट हो गया ।

२

वैशाली राज्य के वाद गणन्त्रका लोप हो गया । लिक्ष्वी पता नहीं कैसे दो हजार साल के वाद काठमाण्डु में प्रकट हो गये । उनके खुन में राज्य करने का संचार तो रहा था पर गणतन्त्र को वे लोग भुल गये । फिर उनके नाक,कान, काट कर नेपाल उपत्यका से वाहर

DO NOT COPY

निकला और गंगा तक की यात्रा कर ली । फिर वापसी यात्रा में महदेवा के पोखर पर रुक गये । भीम सेन थापा ने अपने अपार देश द्रोह का जो दण्ड भोगा उसके फलस्वरुप नेपाल अभी तक शापित है । उसके वाद जँग वहादुर आया । उसने अंग्रेजों के तलवे चाटकर एक टुकडा हासिल कर लिया । सुर्योदय से सुर्यास्त के राजा को अपने कुत्ते के लिए एक टुकडे का क्या विसात था ? समुद्र से एक वुँद चला जाय तो भी समुद्र उतना ही रहेगा घटेगा नहीँ । उसके वाद अंग्रेजों ने कुत्तों की वफादारी पहँचानी और वहादुर बफादारों को ले जाने लगे । जंगवहादुर नेपोलियन वोनापार्ट से छुरी माँगकर लाया और कोत के घर और महाखालके चौर में घुसेड दिया । इसी छुरे को उनके वहादुरों ने हिटलर के सीने में भी घुसेडने चल दिया । गनीमत हुई कि वोलसेविकों ने वचा लिया । कितना वढिया शाशन था जंगवहादुरों का । लोगों को स्कुल जाने की तकलीफ नहीं थी । सभी अखाडे में जाते और अपने वलिष्ठ शरीर से अपने माँ वाप की एवं लाठी , भालों से अपने अगल वगल के लोगों की सेवा करते थे । खुन के वदले खुनकी परिपाटी रखी थी तथा लोगों को चौराहे पर वकरी की तरह छ्प से काट दिया जाता था । ऐसी सुन्दर व्यवस्था भी पता नहीं क्यों कुछ लोगों को पसन्द नहीं आयी । चार लोग वेमतलव फाँसी पर झुल गये । फिर भी उनका शाशन कितना अपार स्नेह के लायक था कि मन गदगद हो जाता है । उन्होने व्राह्मणों को फाँसी नहीं दी । यही उनकी फाँसी का कारण वन गया । वी.पी.कोइराला का व्राह्मण निकला और राणशाही को फाँसी लगा गया । अव उनके वदले वी.पी.कोइराला के समाजवाद के घोडे टुडी खेल में मोर्निग वाक करने लगे । राजा महेन्द्र को अपने ही खुन के घोडे पर चढे मुर्तियों का यह अपमान लगा । उन्होने मोर्निग वाक करते हुए समाजवाद को वनारस का रास्ता दिखा दिया । वी.पी.कोइराला मोदिआइन वगैरह लिखते हुए अपने सहयोगियों के

DO NOT COPY

पास चले गये । वे अपने साथ व्रह्मचारी कृष्णप्रसाद भट्टराई और गणेश मान सिंह लोहे को भी लेते गये । फिर अन्होने इस व्रह्मचर्य की आग में लोहेको तपाकर हथियार वनाया और राजा पर चला दिया । पर वेचारे मुह की खा गये क्योंकि भारत में तो उनके सहयोगी ही मुँह को खा गये थे । अलवत्ता दुर्गानन्द झा को ब्राह्मण होने के बावजुद भी फाँसी पर लटका दिया गया । उन्हे राणाओं से एक कदम आगे जाना था । कम कैसे रहते ? कितना वढिया राजपाट चल रहा था । मधेशी और पहाडी भाई-भाई की तरह रहते थें । इससे क्या होता हैं कि पहाडी उनके हाकिम हो गये ? आखिर वे हैं तो भाई-भाई ही । वाघ और वकरी जव एक घाट पानी पीते हैं तो फिर आदमी को पीने में क्या हर्ज है ? पर लोगों को पता नहीं हर्ज लगा । ३६ साल में उनके हर्ज को ठीक कर दिया गया । गजव हैं, फाँसी की सजा पाने के वाद भी एक ब्राह्मण राजा से कैसे मिल गया । उन्होने कहा कि ब्राह्मण को फाँसी देने से नर्क में जाना पडेगा । हम शहीद हो जायेंगे याद रखिये, दुर्गानन्द झा की ही तरह । राजा नर्क में जाने से डर गये । परन्तु सुर्यवहादुर थापा भी भीमसेन थापा का औलाद था । वह इतना नहीं डरा । फिर समाजवाद का घोडा टुडीखेल का सारा घास खा गया । उनकी मृत्यु के वाद नोवेल पुरास्कार विजेता गिरजा प्रसाद कोईराला सामने आये । आखिर वंश का कोई प्रभाव होता है कि नहीं हमारे यहाँ ? वह तो रामराजा प्रसाद सिंह ने सव गुण गोवर कर दिया । नहीं तो समाजवाद २०४२ में ही आ जाता । वह समाजवाद जाकर २०४६ में आया । परन्तु लिक्ष्वीयों का गणतन्त्र कहीं पर छटपटा रहा था । राजा तो समाजवाद को पचा गये पर गणनन्त्र को नहीं पचा सके । वे अपने जड्मुल सहित स्वर्ग लोक चले गये । जाते-जाते वे अपने चचेरे भाई को अपने देश की जिम्मेवारी सम्भालने के लिए दे गये । परन्तु अपने पुत्र के मुँख पर भिनभिनाती हुई मखियों को देखकर उनको

क्रोध हो आया और स्वर्ग से ही अपने भाई को श्राप दे दिया । फिर क्या था समाजवाद नारायणहिटी से निकलकार सिंहदरवार में चला गया । गिरजा प्रसाद वेचारे को नोवेल प्राइज तो नहीं मिला परन्तु अपने कन्धे पर माओवादियों को दिल्ली से विठाकर ले आये ।

माओवादी आये तो कहना ही क्या ? लिक्ष्वीयों का हजार साल पुराना गणतन्त्र पहुँच गया । गिरिजा वावु विराटनगर से डकैती में नौ लाख कमाये थे तो वे नौ अरव कमायेंगे । समाजवाद से गण्तन्त्र कोई कम थोडे ही है । आखिर १६ हजार लोगों को हमने शहीद वनाया है । उनके खुन के एक-एक कतरे का दाम जोडिए तो कितना होता है ? अभी बहुत दिन और लगेगा उतना कमाने में । गणतन्त्र फिर वाद में आयेगा । अभी सत्ता काविज ,पीछे सवकुछ लेंगे । वेचारे रामवरण यादव कैसे भैंस चराने शितल निवास चले गये । उनको लगता है कि भले जनकपुर में लीला करते थे । कहाँ आकर फँस गये हैं इस मदारी के नाच में ? उनको मालुम है कि न समाजवाद और न गणतन्त्र आयेगा । वे छटपटा रहें हैं कि भाई हमको भैंस चराने के लिए छोड दों । मधेशियों को तो कुछ मिला नहीं, रामवरण को इससे अधिक क्या मिलेगा ? अगर मैं राष्ट्रपति शाशन भी लागु कर दुँ तो ये मिलेटरी वाले क्या मान जायेंगे ? उसी दिन मेरा राम नाम सत्य हो जायेगा । टोपी लगाता हुँ तो भी मुझे कोई मानेगा ? इन अखवारों एवं पत्रिकाओं में किसी तरह अपनी छवि वचाकर भाग जाउँ तो गनीमत है । नहीं भाई, हमको राष्ट्रपति शाशन लागु करने के लिए मत वोलो । नारायाणमान दरभंगा में नुन तेल खाया हुआ आदमी है । वह मुझे फँसाना चाहता है । पर है तो पते की वात , सिमरौनगढ से हम लोग भी काठमाण्डु आये थे । हम लोगों का खुन मिल जुल गया है । इसलिए वह वोलता है । पर मोहन वावु को ही देखिये । जो हिन्दी सिनेमा को वन्द करता है ,वह हमारा धोती कुर्ता

खोल देगा । नहीं चाहीए राष्ट्रपति । हमको भैंस चराने जाने दो, निकल जाने दो मुझे यहा से ।

पर कुछ मधेश के सपुत नहीं निकलने देते । आखिर उन्होने एक होकर मुझे जिताया है । रामराजा जैसे जमिन्दार को उनलोगों ने लात मार दिया । एक किसान के वेटे को राष्ट्रपति वनाया । मधेश के सपुतों को पहली वार लग रहा है कि मधेश स्वतंत्र हो रहा है । मधेशीयों को ऐसा नहीं लगता । रामवरण यादव कितना समझा रहे हैं । पैदल जाकर रामराजा वावु को देखते हैं कि अरे भाई मैं नहीं रामराजा वावु देश के राष्ट्रपति हैं । पर ये मधेश के सपुत क्यों मानेंगे ? उन्होने तो कसम खा ली है । जो होगा देखा जाएगा । हम माओवादियों से मिलकर उतनी सम्पती पैदा करेंगे ही । पर जय प्रकाश गुप्ता जव दिन दहाडे जेल चले गये तव उनको लगा कि हम आग्नि सापकोटा नहीं हैं । माओवादी तो खुन कर देते हैं तव भी शान से संसद में जाते हैं । क्या जरुरत है ओखलढुगां जाने की जो वे हमारी खुन करेंगे ? काठमाण्डु में तो आलिशान महल है ही रहने को । सभी लोगों को आलिशान महल है तो हमारा क्यौं नहीं हो ? आलिशान महल तो हमारे कवि हृदय मोदनाथ प्रश्रित का भी है । वह जो जेल में चटाई पर सोते थें और सेव वाँटकर खाते थे उस कविता की कुछ कीमत होनी चाहिए । काठमाण्डु में क्या चटाई पर वैठकर कविता लिखंने से मर नहीं जायेंगे ? एयरकंडिसन महल चाहिए । भार्गव वावु दो जगहों से हार गये । तो क्या ? झापा के वेकसुर लोगों को मार देने का कुछ मोल होना चाहिए कि नहीं ? वेचारे के पिता इन्डिया से टीचरी करते - करते रौतहट आये । उनका मन कैसे भरेगा ? ज्ञानेन्द्र ने इस कातिल को प्रधानमन्त्री नहीं वनाया तो क्या हुआ ? माओवादियों ने तो वना दिया । आलिशान वील्डिंग हमारा भी होगा । यह सव कम्युनिज्म की कमाई है, कुछ मत वोलो । वेचारे ओली वार-वार दिल्ली जाते हैं,पर झलनाथ खनाल उनको

ओल धुकवा दिया । उनकी विमारी ठीक ही नहीं होती । मदन भण्डारी और आश्रित को नारायणी ने लील लिया । अव विद्या भण्डारी वेचारी ओली के पीछे तो रहेगी ही ।

और चाहे जो भी हो पर मधेशको वहुत फायदा हुआ । उसने ऐसी छलांग लगाई कि ५० जवान शहीद हो गये । गजव हो गया । २५० वर्षो में ऐसा कभी नहीं हुआ । यह माओवादीयों की देन है । इस वात को हम मानेंगे । २५० वर्ष की राजशाही भी हवा खायी तो माओवादीयों के कारण । हम माओवादीयों को ही वोट देंगे । भले ही वे मधेश को कोचिला छिछ्छला में चिथडे कर दें तो क्या हुआ ? चिथडा भी तो शरीर में लगाने को होगा । अभी तो हम नंगे हैं । चिथडा मिलेगा तो फिर हम उसे सी लेंगे पहनने के लिए ।

इस आन्दोलन का फायदा यही हआ कि वर्षों के सोये मधेशी जाग गये । फिर से वे सो नहीं जायें इसी की कोशिश करनी होगी । इसलिए वे दोनों इस आन्दोलन में शामिल हुए । वे दोनों कौन थे उसकी चर्चा वाद में करेंगे, दुसरे अध्याय में । उपर के कारुणिक शाव्दों में उनका, वर्णन नहीं हो सकता । उनके लिए कुछ अलग शव्दों को गढना होगा ।

-O -

३

नारायणी नदी नहीं नारायणी नहर के किनारे एक अभुतपुर्व काम हुआ है । गण्डक के शिशम वृक्षों से घिरा हुआ सिंगहाँ नदी के एवं गण्डक नहर के वीच एक आश्रम अपनी मनोहरता विखेर रहा है । इसमें वने सभी घरों का नाम मधेश के शहीदों के नाम पर रखा गया है । सभागार का नाम मधेश के पहले शहीद रमेश महतो सभागार । लान में एक छोटा गोलघर है जिसका नाम वारा के शहीद के नाम पर अमजद-मजीद विश्राम गृह है । भान्सा कोठा का नाम वावा रामजन्म तीवारी भोजनालय रखा गया है । पुस्तकालय का नाम

गजेन्द्र पुस्तकालय और अतिथि गृहका नाम गांधी अतिथि सदन एवं खेल के मैदान का नाम जिन्दा शहीद जितेन्द यादव खेल मैदान रखा गया है । करीव १० कठ्ठा जमीन में फैला यह आश्रम सवका मन मोह लेता है । एक ओर एक गुशलखाना और एक स्नानागार वना है । वही एक हैंड-पाइप गाड दिया गया है जिससे पथिक अपनी प्यास वुझाते हैं ।

पदम रोड के वीरगंज और कलैया खण्ड के वीचोंवीच यह आश्रम बना है । मुख्य सडक से सटा हुआ यह आश्रम भावी मधेश की राजनीति का केन्द्र होने वाला है । गजेन्द्र वावु ने अपने आश्रम का नाम सप्तरी सेवा आश्रम रखा । वहाँ उस मसीहा की ज्योति वैसे ही जलती है जैसे भारत में महात्मा गाँधी की जलती है । पर उनको इसका नाम अपने जिल्ला के नाम पर ही रखना पडा । मधेश शव्द से ही पहाडीयों को उस समय इतनी चीढ थी जितनी राजा महेन्द्र के समय पंचो को काँग्रेस शब्द से थी । हारकर गजेन्द्र वावु को अपने परिषद का नाम सदभावना परिषद और पार्टी का नाम सद्भावना पार्टी तथा अपने आश्रम का नाम सप्तरी सेवा आश्रम रखना पडा था । अव जाकर मधेश का नाम उपर हुआ और सभी लोग मधेश शव्द का प्रयोग खुलकर करने लगे थे । इस लिए इस आश्रम के संस्थापक जितेन्द्र सोनल ने इसका नाम मधेश सेवा आश्रम रखा । मधेश के लोगों के लिए यह मधेश आन्दोलन का पुरस्कार है । इसमें मधेश की सम्भावनायें वोलती हैं ।

वावा राम जन्म तिवरी ने एक परंपरा कायम की थी । उनका कहना था कि वे व्राह्मण हैं । प्रवचन का महत्व वे जनते हैं । पहले धार्मिक प्रवचन होते थे । पहले गाँव में भागवत या रामायण की कथायें होती थीं, राम लीला होती थी । अव हमारे देश में उनके साथ राजनीतिक प्रवचन भी आवश्यक है । वे अपने घर में कुछ नवयुवकों को इकट्ठा करके प्रत्येक शनिवार राजनीतिक प्रवचन देते थें । साम

DO NOT COPY

सुन्दर उसे सुनने जाता था । तीवारी वावा का कहना था कि इसी राजनीतिक प्रवचन से मधेश में जागृति आयेगी । इसी में से हमारे युवक आगे आयेंगे । जितेन्द्र सोनल उसी प्रवचन से वना हुआ नेता है ।

जितेन्द्र सोनल ने वावा के उस परंपरा को इस आश्रम में कायम रखा है । इसके लिए उसने सीताराम और सामसुन्दर को नियुक्त किया हैं । दोनों इस मामले में पुराने और अनुभवी हैं । सीता राम नेपाली कांग्रेस का पुराना नेता है । वह कांग्रेस छोडकर इस में आ गया है । सामसुन्दर सद्भावना में ही रहते हुए उसमें शामिल होता है । यह परम्परा उसी की पार्टी की वनायी हुई थी ।

४

सिरखिण्डी गाँव : धर्मिनया स्टेसन से उतर कर सीधे नहर से होते हुए एक दस मिनेट का पैदल रास्ता है । धर्मिनिया स्टेसन - अंग्रेजों की वडी कृपा है, नहीं तो इस गाँव तक पहुँचने क लिए कितना दिन लगता । अंग्रेजों ने विशाल भारत के सारे जंगलो को काटकर उसपर लोहे का रेल लाइन विछा दिया । यह रेल लाइन भारत के एक कोने से दुसरे कोने तक को एक कर दिया । इसको देखने नेपाल से भी लोग जाते हैं कि आखिर यह अजुवा है क्या ? इससे दो फाइदे हुए । भारत जो फैला हुआ था वह सिकुड कर छोटा हो गया । नहीं तो महात्मा गाँधी एक कोने से दुसरे कोने तक किस तरह जाते ? लंगोटी लगाये पैदल चलते - चलते जीन्दगी वीत जाती । प्राकृतिक चिकित्सक वे मरियल आदमी घोडे पर चढते तो कैसा लगता ? पाकिस्तान कटने के वाद तो भारत सिकुड कर और छोटा हो गया । जंगल विनाश का दुसरा फाइदा यह हुआ कि आदमियों को एक गाँव से दुसरे गाँव में जाने का रास्ता निष्कंटक हो गया । नहीं तो वीच के

DO NOT COPY

जंगल में उन्हे वाघ भालु खा जाते थे । अव वाघ- भालु कहाँ चले गये पता नहीं । मुझे तो लगता है कि इंगलैण्ड से अंग्रेजों को फिर वुला लिया जाय । वे काले अंग्रेजों को छोडकर चले गये । उनसे काम नहीं होता । अव जंगल नहीं है तो कोयले खोद खोद कर धरती में गढ्ढे वना रहे हैं । मैं तो कहता हुँ कि अंग्रेजों को नेपाल में भी वुला लेना चहिए । परन्तु फिलहाल उनकी जरुरत नहीं है । उनका काम हमारे राजा महेन्द्र और सुर्यवहादुर थापा ने वखुवी कर दीया है । उनकी कोई जरुरत नहीं है । उनहोने जो काम ३०० वर्ष पहले किया वह अव जाकर नेपाल में सम्पन्न हुआ हैं । सारे वाघ भालु यहाँ भी पता नहीं कहाँ गायव हो गये । अव ल्हासा से लुम्विनी तक चाइना रेल लाइन भी विछ्रा रहा हैं । हम अंग्रेजों से कम नहीं हैं । चीन ने तीव्वत की अंगुली को अच्छी तरह पहचान लिया है । अव रेल देखने भारत नहीं जाना पडेगा । अव भारत हमारी एकता की कडी को छिन्न - भिन्न नहीं कर सकता । अव पहाडी - मधेशी भाई - भाई की तरह रह रहे हैं । किसी जमाने में केवल पहाडी जमीन्दार मालिकों के ही दर्शन होते थें । परन्तु थे वे वडे दयावान । गरीवों का ताँती लगा रहत था उनके पास । विना मजदुरी उनके खेतों में काम करने को मिल जाता था । खाने को भी एक टाइम मिल ही जाता था । उनके खाली स्थानको हमारे झुण्ड के झुण्ड पहाडी भाइयों ने आकर भर दिया है । वे अपने को मालिक भी नहीं कहते । हम भाई भाई हैं । भाई - वहिनी मिलकर एक नयी नस्ल तैयार करेंगे जिनकी मातृभुमि नेपाल नहीं कुछ और होगी । जव होगी तव देखा जायेगा । अभी से उसका नाम क्या रखना । तीसरा और सवसे वडा फाइदा तो भुल ही गया । उन जंगलो में दो हाथ पैर वाले कुछ जानवर और रहते थे । वे लोगों की सम्पती लुट लेते थें । अंग्रेजों की सम्पति भी वे लुटते थें और उन्हे मार भी डालते थे । जंगलो के कटने से अंग्रेजों को उनसे छुटकारा मिल गया । पर पता नहीं उनकी औलाद नेपाल

में कहाँ से प्रकट हो गये ? जंगल तो यहाँ भी सव कट गये । हो न हो वे चीन के जंगलों से आये होगें, वही छुपते भी होगे । हम भुल करते हैं शायद । उनकी औलाद हिन्दुस्तान में भी वहुत हो गये हैं । अव तो उन्होने एक रेडलाइन भी वना लिया है । अव वे उसी जंगल में रहेंगे ।

तो सिरखिण्डी वही एक गाँव है जो सुगौली और धर्मिनिया स्टेसन के नजदीक पडता है । पहले यह गाँव नेपाल में पडता था । उसके पहले मोगलान में पडता था । उसके पहले यह गाँव कहाँ पडता था पता नहीं । पर सुगौली संधि के वाद यह गाँव इन्डिया में पड गया । जव से यह गाँव वसा है तव से उसी तरह है । ५० - १०० से वढकर अव तीन सौं घर हो गये हैं । जनसंख्या तो उतनी वढती न थी फिर भी वढती तो थी । चारों ओर वाग - वगैचा, वाँस, खर और सरेह में एक पोखरा जो प्राय: हिन्दुस्तान के सभी गाँवों में होते हैं, यहा भी हैं । कुछ खर के और पक्के मकान के अलावा सभी घर फुस की, दिवारे भीत की । जव वाढ आती है तो उसके लिए जगह जगह पर कुछ नौकायें भी रखी हुई हैं । उसी में वैठकर वाढ के पानी में गाँव के आदमी एवं औरतें नित्य क्रिया करने जाते हैं । भीत सभी ढह - वह जाते हैं । पर पानी घटने पर सभी फिर से वना दिये जाते हैं । खेतों में चौगुना फसले लहलहाती हैं । धान नहीं भी होता तो उसके चौगुना गेहुँ हो जाता है ।

इसी गाँव के वीच में भीत का एक घर हैं जों सिता का घर है । उसका जन्म १५ साल पहले हुआ और अव वह जवानी की दहलीज पर है । उसके वगल के घर में उसकी सहेली सावित्री का जन्म हुआ । अव दोनों सहेलियाँ कुदकते - फुदकते चने एवं मटर के खेतों में जाती, साग वगैरह खाती और हँसते गाते दिन व्यतित करती । जवानी के पदार्पण के साथ उनके पाँव जमीन पर नहीं पडते

थे । दोनों भाव विभोर होकर कमी अपने पति की वातें करती, कभी मनचले युवकों को गालियाँ देती । माँ वाप ने दोनों को पढाइ,लिखाई से दुर रखा नहीं तो वे भी देश दुनियाँ की वातें करती । विल्कुल निश्छल,निष्कपट जवानी थी उनकी । अंग्रेजी राज के वावजुद भी उनपर अंग्रेजियत का कोई असर नही था । अल्हड, संगेमरमरी देह पर मखियाँ भी फिसल जाये । नाक-कान ऐसे तीखे,आँखें ऐसी चहकती जैसे हिरनी खोतों में कुदकती जा रही हो । होठ ऐसे रसदार कि वोली भी उससे निकल मधुर मुस्कान से भरकर कानों में माधुर्य घोल देती । भारतीय संस्कृति का जीता-जागता नमुना थी वे दोनों ।

एक दिन दोनों धर्मिनिया स्टेसन की ओर गयी । लौटने तक शाम का धुँधलका हो गया । घर लौटी तो अकेले सीता । सवितरी कहाँ है ? पुछने पर उसने सव वताया । सावित्री का मुँह वन्द कर कुछ लोग उठा ले गये । उसका अपहरण कैसे हो गया ? लोगों ने पुलिस में खवर की । पुलिस खोजवीन करने लगी । लोग तकादे करते पर पुलिस को कुछ पता नहीं चला । शायद लोग देर से पुलिस में खवर दी थी । फिर पुलिस का भरोसा क्या है ? सावित्री के वाप गरीव थे । पैसे नहीं थे पुलिस को देने के लिए । वेटी से मन मार कर, संतोष कर घर वैठ गये । उस समय चारों ओर जागृति का भी कोई केन्द्रं नहीं हुआ करता था । कुछ लोगों ने तो यहाँ तक कह दिया कि वह किसी के साथ भाग गयी होगी । इसी साल दोनों सहेलियों का गौना होनेवाला था । सीता के वचपन की सहेली छिन गयी थी । वह हमेशा उदास रहने लगी । उसने एक कुत्तिया पाल रखी थी । उसी के साथ अव सम्भलकर खेतों में जाया करती थी और शाम होने से काफी पहले चली आती थी । दुसरी लडकियाँ से वह उतनी घनिष्ठता नहीं स्थापित कर सकी । पर मेलों - ठेलों में वह उनके साथ आती-जाती थी । मेले में वह अपने अनदेखे पति के लिए विभिन्न प्रकार की चीजें खरीदती थी । एक वार उसने एक

पीतल की अंगुठी खरीदी और उस पर राम लिखवाया । अपने वायें हाथ पर उसने सीता रामका गोदना गोदवा लिया । सवेरे उठकर वह राम-राम नहीं कहती थी । हे शिव कहती थी । रामचन्द्र उसके पति का नाम था । हिन्दु नारी अपने पति का नाम नहीं लेती ।

५

चीकनी चैनपुर - यही इस गाँव का नाम है । चारों ओर से यह गाँव भी वाग-वगीचों, एवं पोखरों से भरा है । उँचे - उँचे टीले एवं गढ चारों तरफ विखरे पडे हैं । यह नेपाल के वारा जिल्ला में पडता हैं । सुगौली संधि के वाद यह नेपाल में चला आया नहीं तो यह भी कभी मोगलान का ही हिस्सा था । उसके पहले यह एक अति सम्पन्न सिम्रौनगढ राज्य का हिसा था । चारों ओर फैले उँचे-उँचे टीले एवं गढों को देखने पर ऐसा आभास होता है कि किसी जमाने में यहाँ वहुत ही उन्नत एवं सभ्य संस्कृति का वास था । इसके नजदीक ही एक विशालकाय पोखरा हैं - झरोखर पोखरा । यह एक मील लम्वे - चौडे झील की तरह फैला है । यहाँ के स्थानिय लोग कहते हैं कि इसे एक ही रात में किसी दानव-दैत्य ने खोद दिया था । इसके चारों आँट पर विशाल जंगल फैले हुए हैं जिसमें सभी प्रकार के जंगली वृक्ष मिल जाते हैं । सिम्रौन गढ के मुख्य राजधानी गढ में अभी भी उस राज्य की कुल देवी कंकाली माई का मन्दिर विराजमान है ।

इसी जगह से विस्थापित होकर या खेती पाती करने के लिए वीरगंज के पास के गाँव अवधापुर में आकर एक आदमी वस गये थें । उसके मुखिया का नाम बन्धु था । उन्होने अवधापुर में अच्छी जमीन जायदाय वना ली थी । चारों ओर वाग- वगीचों से यह गाँव भी भरा हुआ था । करीव एक मील की दुरी पर एक ईनार था और

DO NOT COPY

करीव उतनी ही दुरी पर सिंगहा और मरलहिया नदी थी। लोग अन्य काम इन्ही दो नदियों से करते थे। मरलहिया नदी का अव अता पता नहीं है । वह सुख गयी है । सिंगहा नदी अभी भी है । नौतन में किसी दनवा दैत्य ने एक विशाल पोखरा खोद दिया । लोग उसका पानी भी प्रयोग करते थे । वहुत वाद में लोगों ने इस गाँव में भी एक पोखरा वनवा लिया । अव उन्हे पानी के लिये उतनी दुर नहीं जाना पडा । पर पीने के लिये पानी उसी इनार से लाया जाता था जो गाँव से एक मील की दुरी पर था । औरतें वहाँ पहाड की पदेरो की तरह पानी लाने जाती थी । फर्क इतना ही था कि पहाड के पदेरों में औरतें एक एक कर पानी भरती हैं जवकि यहाँ कई औरतें एक साथ पानी भर सकती हैं। वहुत वाद में यहाँ एक इनार पास ही वनवा लिया गया जिसे वाथ का इनार कहते हैं। यह इनार अभी भी है। वाद में वनने वाले कई इनार अव वेकार पडे हैं या भर दिये गये हैं । उसकी जगह घर घर में अव चापाकल आ गया है । पर गाँव घर के किसी भी शुभ कार्य में वाथ के इनार का पानी ही आता है । अगर वह नहीं आये तो कोई भी शुभ कार्य सफल नहीं होता । चापाकल आ जाने पर इनार से पानी लाते समय औरतों मे ंजो भला कुसारी होता था वह सभी समाप्त हो गया है । औरतों के भला कुसारी के लिये इनार एक सस्कृति था । वह संस्कृति अव खतम हो गयी है ।

राम जीवन एवं कारी , वंधु के दो लडके थे । बन्धु अपने इन दोनों वेटों के झगडे से परेशान थें । वे अपने परिवार को अलग होता देखना नहीं चाहते थे । परन्तु वे नहीं माने । दोनों के अलग होने पर बन्धु रावत मार्माहत हो गये । उस समय के लोग संयुक्त परिवार को विखरने देना नहीं चाहते थे । कुछ लोग इस प्रकिया में थोडा ज्यादा मर्माहत हो जाते थे । बन्धु राउत इतने मर्माहत हुए कि उन्होने घर को ही त्याग दिया । वे फिर कभी वापस नहीं लौटे । कही साधु

DO NOT COPY

संन्यासी हो गये या क्या हुआ कुछ पता नहीं चला । कहाँ , कव वे दुनिया से चले गये कुछ मालुम नहीं ।

रामजीवन के वेटे का नाम था लाल विहारी । अपने एक मात्र इस पुत्र का विवाह उन्होने गढ के इस चकुली चीकनी में वडे धुम-धाम से किया । कुंजा देवी डोली में चढकर गौना में आयी और घर को सम्भाल लिया । परन्तु भगवान को कुछ और मंजुर था । चढती जवानी में ही एक दिन पति का देहान्त हो गया । कोई वाल वच्चा अभी नहीं हुआ था । वज्रपात हो गया कुँजा देवी पर । २५ वर्ष की उम्र मे वह विधवा हो गयी ।

परन्तु विधाता भी क्या-क्या खेल खेलता है यह किसे मालुम ? उस समय कुँजा देवी की सास गर्भवती थी । सती प्रथा का तो अन्त हो गया था पर विधवा विवाह नहीं होता था । पर संजोग से समाज ने व्राहमणों को छोड और वर्णों के लिए कुछ छुट दे दी थी । विधवा विवाह हो सकता है । परन्तु यह छुट एक दायरे के भीतर ही था । कोई विधवा विवाह करना चाहे तो अपने देवर से कर सकती है । अव कुँजा देवी का तो कोई देवर भी नहीं था । वह क्या करे ? उसने वडी अजीव वात सोची । इस पर आज के लोगों को विश्वास नहीं होगा । उस समय कठिन पातिव्रत्य को छोडकर कुछ नहीं किया जा सकता था । समाज के नियमों को तोडकर कोई कुछ नहीं कर सकता । समाज के नियमों को तोडकर आज भी कुछ नहीं कर सकते लोग । अगर करते हैं तो समाज उसे आज भी मान्यता नहीं देता । नयी शिक्षा के आलोक में आज लोग इन नियमों को तोड रहे हैं, पर पुरी तरह से नहीं टुटा है ।

कुँजा देवी ने निर्णय किया कि उसके सास के गर्भ से जो वालक आयेगा उसी से मैं विवाह करुँगी । गर्भ के देवर से ही वह विवाह करेगी । अव गर्भ में लडका है या लडकी यह उस समय कौन

जानता था ? परन्तु वह भगवान से दिन रात प्रार्थना करने लगी कि गर्भका शिशु लडका ही हो । कितनी मिन्नते, कितनी विन्ती,कितने उपवास उसने कर डाले । उसने अपने नैहर में जाकर कंकाली माई से भी दर्शन कर यही माँग कर आयी । एक २५ वर्ष की नवयुवती की यह कैसी अगाध श्रद्वा एवं विश्वास था । यह केवल हिन्दु नारियों में ही मिल सकता है, और कहीं नहीं । २१ वी शातावदी के लोग इसे एक महा रुढ विचार मानेंगे । परन्तु यह भी हिन्दु समाज की एक गरिमा उस समय थी ।

चमत्कार हो गया । नौ महीने के वाद जव शिशु पैदा हुआ तो वह लडका ही था । कुँजा देवी की खुशी का ठिकाना नहीं रहा । उसने सभी मनौतियों को पुरा किया । कंकाली माई के यहाँ जाकर चरणों में गिर पडी गदगद होकर । टोले,मुहल्लों में उसने मिठाइयाँ वाँटी । क्यो ? आखिर यह क्या था ?

उसको तो मानों पर लग गये थे । उस वच्चे को पोषने के लिए भरपुर मेहनत करने लगी । अपनी गोद में लेकर वह उसे तेल लगाती , दुलारती और अपने सिने से लगाये रखती । वह उसकी माँ थी या उसकी पत्नी ? पत्नि पति की माँ भी होती है, यह उसका सजीव उदाहरण था । उस जमाने की वात कोई वहुत ताम-झाम नहीं था । पर वच्चा हृष्ट-पुष्ट रहे इसके लिए सभी कोशिशें होती थी । उस वच्चे का नाम चौधुर रखा गया । जव कुँजा देवी अपने नैहर जाती तो भी इस वच्चे को लेकर जाती । उसके नैहर के लोग उसके पति को देख अचम्भित हो जाते । कुँजा देवी ने उस वच्चे को अंगुलिया पकड कर चलना सिखाया । हर खतरों से वचाया । यही नहीं उसने मोगलान से आये हुए शिक्षक को अपने घर रख कर चौधुर को पढाया लिखाया । चौधुर की माँ को तो अव अपने वच्चे से फुर्सत ही मिल गयी थी । हलाकि उसको एक वच्चा और हुआ जिसका नाम था नकछेद ।

चौधुर अव चौधुरी राउत हो गये ,२५ वर्ष का नौजावन । कुँजा देवी ने उनका इस तरह लालन-पालन किया कि वे १२ वर्ष में ही जवान हो गये थे । अव चौधुर वीरगंज का एक नामी मुखतार हो गये । वे मुकदमों को लिखने और देखने वीरगंज जाने लगे । धीरे-धीरे वे वीरगंज का एक ख्याति प्राप्त आदमी हो गये । वे महात्मा गाँधी से प्रभावित थे और गाँधी टोपी पहनते थे । गाँव मे उन्होने कई वीघे जमीन और वनाई । उनका दमखम इतना हो गया कि वे कभी पटवारी के यहाँ जमीन का लगान देने नहीं जाते । पटवारी खुद उनके यहाँ दाम लेने आते थे । जव जमीन्दार आते थे , गाँधी टोपी का कुछ ऐसा प्रभाव था कि जमीन्दार उनसे दरवाजे पर आए रैयतों की व्यवहार नहीं करते थे । नहीं चाह कर भी वे उनसे दोस्ताना व्यवहार ही करते थे ।

परन्तु इन सवसे क्या होगा ? जमीन जायदाद एवं रौव सभी वेकार थे । अभी तक कोई वच्चा उनको नहीं हुआ । जव वे २५ वर्ष के हुए तव तक कुँजा देवी ५० वर्ष को पार कर चुकी थी । पति को पाकर वह सुखी हो गयी थी, पर पुत्र सुख से वह वंचित ही रह गयी । अपने पति के जवान होते होते वह वुढी हो गयी थी । पर जिस तरह उसने पति को पाला पोषा था उसी तरह एक वेटे को भी पालने की लालसा उसमें प्रवल थी । उस समय तो न कोई कृत्रिम गर्भधारन का उपाय था न वह उसके लिए योग्य थी । वह तो वुढी हो गयी । इस का भी समाधान उसने अनोखे ढंग से निकाल लिया । उसने अपने पति की दुसरी शादी रचा डाली । जिस तरह से उसने विधवा होने पर एक अनोखा ढंग अपनाया उसी तरह वह पुत्रवती होने के लिए भी एक अनोखा उपाय निकाला । क्या कोई भी ऐसा स्वयम् कर सकती है ? कौन औरत है जो अपनी सौत को अपने ही हाथों से सजायेगी ? परन्तु उसने ऐसा किया । वह कितना महान एवं विचारवान थी । उसने समाज के नियमों को भी नहीं तोडा और वह

DO NOT COPY

सवकुछ कर दिखाया जो आज भी कोई औरत नहीं कर सकती ।

तवतक वह गाँव भर की वडकी दीदी हो गयी थी । गाँव के सभी लोग उसे वडकी दीदी ही कहते थे । सास-ससुर अव चल वसे थे । उसने अपने छोटे देवर नकछेद को भी पाला-पोषा । उसने गाँव के चौकीदार टुकुर हाजरा को वुलाकर डोकैला वहुअरी गाँव में भेजा । उसको तपेसरी देवी के वारे में मालुम था । वह उसके ही किसी दुर की रिस्तेदार थी । अवधापुर और डोकैला वहुअरी का सम्वन्ध हो गया । यह भी एक संयोग ही था । कुँजा देवी ने अपने पति की शादी बडे धुम धाम से सम्पन्न की ।

परन्तु तपेसरी देवी तव २० वर्ष की नवयुवती थी । पतिव्रता तो वह भी थी पर सौतिया डाह को कुँजा देवी की तरह नहीं मार सकी । या युं कहिये वह महान तो थी पर कुँजा देवी की तुलना में छोटी महान थी । वह जव से आयी तव से चौधुर को कुँजा देवी के पास नहीं जाने दिया । उस पर नये जमाने का रंग था । हाँ उस समय के नये जमाने का । नयाँ जमाना केवल आज ही नहीं होता । नयाँ जमाना उस समय भी होता था । कुँजा देवी इसको निर्विकार भाव से देखती और कुछ भी नहीं वोलती थी । उसने तो स्वयम् उस स्थान को उसके लिए खाली कर दिया था । उसको इसमें क्या एतराज हो सकता था ? पर तपेसरी देवी जव कुछ ज्यादा ही इर्ष्या और डाह से भर जाती थी तव कुँजा देवी कुम्हला जाती थी । तव चौधुर तपसरी देवी को डाँट देते थे । जव कुँजा देवी को पत्नी रुप में स्वीकार कर लिया था तो वे कैसे नहीं डाँटते ? कुँजा ने तो उन्हे अपनी औलाद की तरह पाला भी था । और कुछ तो वे जवान होने के वाद ही सुने, जाने । तपेसरी देवी जव अधिक वेसव्र हो जाती तव स्वयं ही अपनी गलती के वारे मे सोच कर चुप हो जाती । फिर दोनों वहन की तरह या यों कहे एक माँ एक पुत्री की तरह रहने लगती ।

DO NOT COPY

धिरे धिरे दिन वितने लगे । तपेसरी देवी ने दो वच्चों को जन्म दिया : वासुदेव और सहदेव । वच्चे वडे मेधावी एवं तेजस्वी थे । एक सुयोग्य हिन्दु नारी ऐसे ही तेजस्वी संताने पैदा करती हैं । अगर उन्हे रुढियों से अलग कर दिया जाय तो दुनियाँ में उसका जोडा नहीं मिलेगा । वासुदेव अजानुवाहुँ जन्मा था । कुँजा देवी की सारी लालसायें पुर्ण हो चुकी थी । उसने समाज के साथ जिस संघर्ष,साहस एवं धैर्य का परिचय दिया वह काविले तारीफ था । धैर्य की तो वह प्रतिमुर्ति ही थी । कुँजा देवी अव स्थिर शान्त हो गयी थी । अपने इसी परम शान्ति के समय एक दिन उसने अपनी आँखे बन्द कर ली । चौधुर राउत दहाडें मार कर ऐसे रोते थे जैसे कोई उनसे उनकी माँ को छीन लीया था । पता नहीं क्यों उसके कुछ ही दिनों के वाद चौधरी भी भरी जवानी में चल वसे । वज्रपात हो गया फिर इस घर में । शायद भगवान के यहाँ यही नियम है । दुख और सुख,सुख और दुख । वहुत दिनों के वाद उस घर का सुखमय संसार फिर से दुख में डुव गया । अव तपेसरी देवी की वारी थी । वह भी अपनी जवानी में ही विधवा हो गयी । पर वह भी गजव की मजुवुत औरत थी । उसके देवर नकछेद भी चल वसे । उनके वच्चे जसदेव और वाच्चीयाँ छोटी-छोटी थीं । क्या विधि का विधान है ? नकछेद की पत्नी भी एक वर्ष के अन्दर ही स्वर्गवासी हो गयी । अव तपेसरी देवी के सामने अपने दो वच्चों एवं अपने देवर समेत तक के सभी वच्चों का भी लालन-पालन करना पडा जिसमें उसने कोई कमी नही की । इन्ही वासुदेव के छोटे चचेरे भाई जसदेव के लडके का नाम था रामचन्द्र । इसी रामचन्द्र से सिरखिण्डी की सीता की सादी हुई । यही रामचन्द्र और वासुदेव का लडका सामसुन्दर एक साथ नित्य आरती के वाद पिपरा मठ के श्री नृसिंह मिडिल इंगलिस स्कुल में पढने जाते थे । जव रामचन्द्र ने जवानी की दहलीज पर कदम रखा तो सीता गौना करा के आयी । सृष्टिका चमत्कार कैसा होता

है,कैसी मोहक औरत का शरीर होता है । उसका रुप देखकर उसका देवर सामसुन्दर दंग रह गया । वह ठगा सा,ठिठका सा रह गया । विल्कुल कोर्णाक और खजुराहो के भीत्तों में तराशी हुई सजीव मुर्ति । अंग - अंग तराशा हुआ । वदन का उभार न कहीं कम न कहीं ज्यादा । कसा एवं गठा हुआ शरीर सौष्ठव, वडी-वडी आँखे , पतले-पतले होठ, उन्नत उरोज, चौडे ललाट, घुँटनो तक केश लहराते हुए थे । माँग में सेन्दुर,नाक में केवल एक छोटा सा ठोप था जिसमें तीन भालर नीचे लटके हुए होठों के पास भुल रहे थे जिससे सीता कोई महाराष्ट्रियन सुन्दरी की तरह लग रही थी । सामसुन्दर उसके इस सौन्दर्य को देखकर हतप्रभ हो गया ।

सभी की आँखें उसी जगह, कान,नाक भौंहे सव उसी जगह होती हैं । फिर भी सवके अलग अपने सौन्दर्य किस तरह संसार में विखरे हुए हैं ? कोई देश सुन्दरी हो जाती है, कोई विश्व सुन्दरी तो कोई व्रह्माण्ड सुन्दरी हो जाती है । यह भी परमात्मा की कमाल की कारीगरी है, आश्चर्य है । उसने कई सिनेमा देखे थे । वह उन नायिकाओं से सीता की तुलना करने लगा । पर उन में इतनी कसीस,इतनी सादगी, निश्छल और प्राकृतिक आभा नहीं देखा था । ग्रामीण सौन्दर्य का वेजोड नमुना थी सीता :

विधुरी वदन विधु अंचल ढाँकी,
सिय करी सैन नैन कर वाँकी ।

सामसुन्दर अपनी इस भाभी से मिलने-जुलने और हँसी मजाक करने लगा । तवतक वासुदेव और जसदेव अलग हो चुके थे और अलग-अलग घरों में रहते थे ।

गौंना में नयी वहुँ के साथ उसका एक छोटा भाई भी आता है । वडा भाई नहीं आता । छोटे भाइ के साथ वह अधिक घुलमिल सकती है । यह एक वडा ही स्वस्थ एवं उत्कृष्ट परम्परा है । अकेली , अनजान जगह पर जाना नारियों के लिए कितना कष्टदायक हो

DO NOT COPY

सकता है , इसलिए जवतक वह ससुराल में घुलमिल नहीं जाती तव तक इस मानसिक कष्ट को दुर करने के लिए पहली वार उसके साथ उसका छोटा भाई जाता है । जव भाई नहीं होता तो कोई दुसरा उससे जो छोटा हो वह आता है । सीता को कोई छोटा भाई नहीं था । इसलिए उसके साथ उसका छोटा भतीजा आया । सीता स्वयं सवसे छोटी वहन थी । उसका भतीजा उसके द्वारा पाले गये कुत्ते को भी साथ लेकर आया था । गाय,भैंस तो दहेज में मिले थें ।

समय पर कलेवा आया । देहातों में कन्यापक्ष के यहाँ से वेटी पहली वार ससुराल जाने पर कलेवा आना एक रश्म है जो इस वात का सुचक है कि वेटी जवतक घुलमिल नहीं जाये उसकी खोज खवर हो सके । सीता को उसकी सास ने एक वुलाकी मुँह दिखायी में दिया । और लोग रुपये पैसे आदि देते हैं । वहु का मुँह पहली वार देखने के उपहार स्वरुप यह होता है । वहु को पहली वार ससुराल में वहुत दिन रखने का प्रचलन नहीं है । अपरिचित घर में पहली वार वह परिचित मात्र होती है और चली जाती है । यह मनोवैज्ञानिक कारणों से भी ठीक लगता है । दुसरी वार आने पर वही वहुँ उसी परिचय के साथ उस घर में घुलने-मिलने लगती है । कलेवा लेकर आये हरलोग दिनधरायी करते हैं । इसी तरह सीता का भी जाने का दिन रख दिया गया ।

निश्चित समय पर सीता का वुलावा आया । अव वह जाने वाली है । होत भिनसार विदा कर देना होता है । उस जमाने में जव केवल वैलगाडी पर विदाई होती थी तव होत भिनसार ही विदा कर दिया जाता था ताकि वैलगाडी की धीरे चाल पर भी वह समय पर गन्तव्य तक पहुँच जाये । शाम के समय रामचन्दर अपने फुस के कोनवा घर के अपने विस्तर पर गया । आज सीता से जरा भेंट करेंगे । अभी तक सीता से उसका कोई सम्पर्क नहीं हो सका था । सीता

की सास , दोनों मिल न सके इसके लिए वडी पहरेदारी करती थी । दोनों अभी पुरी तरह जवान नहीं हुए थे । इसलिए इनको मिलने नहीं दिया जाता था । शादी कर दीये वचपन में, पर मिलने नहीं देगे । उधर वय:सन्धि पर कदम रखे दोनों को एक दुसरे से मिलने की गहन आतुरता रहती है । वल्कि और जोर से यह आतुरता वढ जाती है । वय:संधि काल में वे दोनों शाम का मौका देखकर सीधे कोनघर में गये । रामचन्दर वैठा था । विस्तर से उठकर उसने सीता का स्वागत किया । सीता ने पति की चरण धुली माथे पर लगायी ।

“ तुम कितनी सुन्दर हो ” रामचन्दर ने कहा

“ मैं कितनी सुन्दर हुँ मैं क्या जानुँ ”

फिर वे दोनों गले मिल गये । रामचन्दर ने कहा, चलो विस्तर पर वैठकर वातें करते हैं । तभी उसकी सास झपट कर आयी और दोनों छिटक कर अलग हो गयें । उसकी सास वाज की तरह झपट कर रामचन्दर को लेकर वाहर चली गयी । इतनी पहरेदारी पर भी नहीं मानते । सीता का कुत्ता सास को देखकर गुर्राया परन्तु सीता ने उसे रोक दिया । उस कुत्ते को भी सास की यह हरकत अच्छी नहीं लगी थी । होत भिनसार सीता वैलगाडी पर वैठकर विदा हो गयी ।

वस अपने पति से उसके केवल दो वातों का परिचय हुआ । स्पर्श का वस एक आलिंगन ही वह जान पायी । परन्तु इसी क्षण-मात्र के संयोग को एक हिन्दु औरत कितना महान वना देती है, रोज-रोज शादी करने वाले लोग इस महानता को क्या समझेंगे ? अरे यौन ही क्यों यह पुरा जीवन ही क्षणभंगुर है । इसमें अगर कोई आर्दश नहीं हो तो सव कुछ मिट जाता है । सीता अपने इसी आदर्श को संजोये चली गयी और सँजोये रही ।

DO NOT COPY

सीता के जाने के वाद एक अप्रत्यासित घटना घट गयी। एक ऐसी हादसा जिसको सामसुन्दर ने पहली वार देखा। सीता के जाने के कुछ दिन भी नहीं हुए थे कि रामचन्दरर का अचानक निधन हो गया। छअंगुरिया वैद्यजी ने कहा कि उसे वुखार के वाद सन्निपात हो गया था। सभी लोग सकते में आ गये। किसी को यह विश्वास नहीं हुआ। पर मुत्यु का यह सत्य घट चुका था। लगता है इस घर में औरतों को जवानी में ही विधवा हो जाने का श्राप मिल चुका था। परिवार की जो हालत हुई सो हुई अव सीता को कैसे कहा जाय ? पर उसे वुलाना तो पडेगा। दोंगा अभी नहीं हुआ तो क्या। आखिरी मुँख तो सभी देखते हैं। फिर वह तो उसकी पत्नी है। सभी सम्वन्धियों के यहा आदमी दौडाये गये। एक आदमी रेलगाडी से सिरखिण्डी भी गया।

सीता वगल के खेत में रखवाली कर रही थी और सव्जी के लिए साग खोट रही थी। आदमी उसका घर देखे हुआ था। उसने सीताको पहचाना ही नहीं न सीता ने उसको पहचाना। वह आदमी सीधे उसके गाँव उसके घर पहुँचा। जव उसने उसके घरवालों को यह घटना सुनायी तव सभी सन्न रह गये। इस घटना को वे सीता को कहे कैसे कि उस किशोरी का मांग उजड गया है। उसे नहीं कहना होगा। एक आदमी खेतों पर जाकर उसे वुला लाया। उसके भाई ने कुछ नहीं कहा। वस केवल यही कहा कि तुम्हे ससुराल चलना है।

वह सपने वुन रही थी कि ससुराल में जव दोंगा में जाउँगी तव क्या करुँगी ? ससुराल से परिचय तो हो ही गया है। पति से दो शब्द परिचय मात्र हुआ तो क्या हुआ ? यह तो जन्म-जन्मान्तर का सम्वन्ध है। इस वार वह क्या-क्या करेगी, सभी के सपने वुना करती थी। पर भाई ने जव यह कहा कि उन्हे अभी जाना है तो वह अचम्भित हो गयी। क्या वात है ? विना दोंगा किये ससुराल तो ऐसे

DO NOT COPY

नहीं जाया जाता । फिर वुलावा आने पर ही कोई जाता है । यहाँ तो वुलावा भी नहीं आया है । आदमी घर पर खवर करके लौट गया था । ऐसे समय में किसी आवभगत या खाना-पिना खाने की स्थिति नहीं होती । फिर भी उस किशोरी को जाना ही है तो वह तैयार होले । वह तैयार होने घर में जाने लगी । उसके भाई ने कहा कि तैयार होने कि कोई जरुरत नहीं है, चलो इमर्जेन्सी है । अव सीता को किसी वहुत वडी विपत्ति की आशंका हो गयी । फिर भी वह भाई के साथ धर्मिनया स्टेसन पर आयी । ट्रेन पकड कर जव ससुराल पहुँची तो सभी लोग दहाडे खाकर रो रहे थें । ऐसा रोना तो किसी के मरने के कारण होता है । इस घर में कौन मर गया ? उसको क्या पता था कि वही विधवा हो गयी है ? सामसुन्दर ने उसे वताया कि रामचन्दर अव इस दुनियाँ में नहीं रहा । अव क्या था । काटो तो खुन नहीं । उसे तो वही ठकुआ मार गया । लोगों ने उसे झकझोरा तो वह परकटे पक्षी की तरह गिर पडी । एक कटे पेड की तरह गिर पडी वह । जिस पति से उसका परिचय मात्र था उस पति की वेदना में एक हिन्दु औरत का हाल यही होता है । यह सम्वन्ध जन्म-जन्मान्तर का होता है । लोगों ने उसके मुँह पर पानी का छीटा मार-मार कर उठाया तो कहीं जाकर वह उठी । जिस नवेली का मुँह भी नहीं किसी ने देखा था वह सवके सामने वैठी थी । कलिला किशोरी । अभी तो जीवन में कदम रखा था । अव वह पति के शरीर पर लोट-लोट कर रोने लगी । नयी, नवेली दुल्हन सास ससुर के सामने पति से वात भी नहीं करती । वह अव सारी दुनियाँ के सामने अपने पति को सिने से लगाती, कभी उसका मुँह चुमती, कभी दहाडें खाकर गिरती । फिर उसकी चुडियाँ फोड दी गयी । मांग के सिन्दुर पोछ दिये गये । एक किशोरी अभी जवानी की दहलीज पर पहुँची ही थी कि एक विधवा श्वेतवस्त्रधारिणी हो गयी । संयासी गेरुआ वस्त्र लगाते हैं,विधवा श्वेत वस्त्र लगाती है । आदमी गेरुआ वस्त्र लगाकर

संयासी वनता है । औरत श्वेत वस्त्र लगाकर घर के भीतर की संयासिनी ही तो होती है । सीता के सभी अरमान, ,सभी , सभी खुशियाँ, सभी चहक खतम हो गयें, मर गये ।

अव वह रोज-रोज रोती और विलाप करती थी । उसे चुप भी कराये कोई तो कैसे कराये ? एक दिन सामसुन्दर गया, उसे चुप कराया । काफी रोकर, आँसु वहाकर वह चुप हुई । सामसुन्दर ने कहा

“ भाभी , यह क्या हो गया ? ”

“ ”

“ ”

“ भाभी अव क्या होगा ? ”

“ ”

“ ”

“ वैधव्य वडा अगम है इस उम्र में । ”

“ ”

सीता ने कोई उत्तर नहीं दिया । वह किशोरी उत्तर दे भी तो क्या उत्तर दे ? वह दुनियाँ को तो कुछ जानती नहीं थी कि नियति ने उसको इस कटु सत्य से परिचय करा दिया था । सामसुन्दर वापस मुडकर जाने लगा तो उसने सिर उठाकर देखा । अव तक वह सिर नीचे किये मिट्टी को देख रही थी और कुरेद रही थी । उसकी जवानी , उसके अरमान, उसकी लालसायें सव मिट्टी हो गयी थीं । सामसुन्दर दरवाजे से वाहर चला गया और सीता देखती रही । इसके वाद जव भी वह विलाप करती तव सामसुन्दर उसके पास जाता,उसे चुप कराता और कुछ वातें करके चला आता । अन्य कोई उसके पास नहीं जाता ।

यह अन्य कोई उसके पास नहीं जाता , उसका भी एक कारण है । ऐसा नहीं है कि उसके वियोग को घर के लोग किन

DO NOT COPY

शब्दों से सान्तवना देते, वे तो स्वयं ही वियोग में थे ? नहीं इसका कारण कुछ दुसरा था। उसका कारण हिन्दु जाति पर एक कलंक है। ऐसा तो किसी धर्म-शास्त्र में नहीं लिखा है। परन्तु हिन्दु समाज में तीन प्रकार की रुढियाँ चलती हैं। एक तो वह जो शास्त्र में लिखा होता है। दुसरी वह जो परिवार और समाज में कुछ दुर्घटनाओं से पनप जाती हैं। वह पारिवारिक या सामाजिक रुढियां होती हैं। तीसरा वह जो केवल किसी परिवार की ही मान्यता होती है। शास्त्र समाज या परिवार जिस रुढी के चलते हो पर घर के लोग उसके पास चुप कराने भी नहीं जाते थे। अव उसके सास एवं ससुर को यह अवधारणा हो गया कि उसी के साथ शादी करने के कारण उसके वेटे की मृत्यु हो गयी। कुछ औरत मर्दखउक या मर्दमारी भी होती है। जो कोई उससे शदी करेगा वह मर जायेगा। अव उसके सास ससुर उसको एक मर्दमारी के रुप में देखने लगे थे। जिस घर में कभी कुँजा देवी की जो हैसियत हासिल थी वह सीता को नसीव न हो सकी। परन्तु अभी सीता को इस वात का पता नहीं था। उसको यह वात वहुत वाद में पता चला जिसका वाक्या एक अलग हिस्सा है। पर कोई उससे सहानुभुति दिखाने नहीं जाता था। केवल सामसुन्दर जाता और थोडा वोल वतिया कर चला अता। फिर वह अपनी पढाई करने वाहर चला जाता। अव वह पिपरा स्कुल से पास करके रक्सौल चला गया था। जव वह रक्सौल चला जाता तो क्या होता उसे नहीं पता। लेकिन जव भी वह घर आता सीता के पास जाकर कुछ वोल जाता है । पर अव हँसी मजाक तो विदा हो गये थे।

कामक्रिया के वहुत दिनों वाद वह नैहर चली गयी। कुँजा देवी के घर में आयी यह नयी विधवा थी। परन्तु इसका हाल कुँजा देवी की तरह नहीं था। कुँजा देवी तो गर्भ के वालक की सुहागिन हो गयी थी। वह वाद में गाँव के लोगों की वडकी दीदी हो गयी थी

। परन्तु सीता का भाग्य तो वैधव्य की श्वेत स्याही में डुव गया था । अव तो समाज और दकियानुस हो गया है ।

७

म्धेश सेवा अश्रम में प्रवचन शुरु था । प्रवचन सिताराम दे रहा था :

कुलानन्द झा के समय से देश की राजनीति परवान चढने लगी थी । वेदानन्द झा चुनाव हार गये । काँग्रेसियों ने प्रचार कर दिया कि तराई कांग्रेस यहाँ पाकिस्तान वनाना चाहता है । पाकिस्तान उसी समय वना था । लोगों में इसकी वडी टीस थी । फलतः वेदान्नद झा का जमानत जव्त हो गया । तव वे राजा से जाकर मिल गये । परन्तु वावा रामजन्म तीवारी ने तराई काँग्रेस को नेपाली काँग्रेस में मर्ज कर दिया जो कभी भी अलग किया जा सकता था । मधेश में आक्रोश बुलबुला रहा था । रघुनाथ ठाकुर आदि को मरवा दिया गया था । राजा महेन्द्र ने स्टालिन के तर्जपर पहाडियों को भीतरी मधेश में वसाना शुरु कर दिया । पद्म रोड न वनवा कर तराई के जंगलो का विनाश कर पुर्व-पश्चिम राजमार्ग वनाया गया । पहले हुलाकी मार्ग जिल्ला के सभी सदर मुकामो से होकर गुजरता था । पुर्व-पश्चिम राजमार्ग प्रत्येक सदर मुकाम से २५।३० माईल दुर पर है । पार्टियों को प्रतिवंधित कर दिया गया । भीतरी मधेश में पहाडी छा गये । थारु लोग पहाडीयों के हलवाहा हो गये । थारुओं को पहाडीयों का वंसज सावित करने के लिए कोशिश की जाने लगी । उन्हें वाहरी मधेशियों के खिलाफ भडकाया जाने लगा । वे अपने ही भाइयों के विरुद्व होने लगे । भुमिसुधार के नाम पर मधेशियों की सारी जमीन हडपी जाने लगी । मधेशियों में आक्रोस वढने और फलने फुलने लगा । मधेशियों को अपनी पहचान की, आस्तित्व की रक्षा करने की जरुरत आन पडी । कोई इस आक्रोस को नियोजित करने वाला नहीं था । तराई काँग्रेस वी.पी.कोइराला की पार्टी में मर्ज

DO NOT COPY

हो गया था । काँग्रेस पार्टी कहती थी कि प्रजातन्त्र आने पर सव ठीक हो जायेगा । पर उनकी भी मंशा को कुछ लोग समझते थे । वे आवाज उठाने की ईच्छा रखते थे किन्तु मजवुर थे । पार्टियों पर प्रतिवन्ध था । जवतक प्रजातन्त्र लाकर पर्टियों पर से प्रतिवन्ध नहीं हट जाता तव तक वे चुप थे । आखिर तराई की वात तभी तो उठ सकती थी जव पार्टी प्रतिवन्ध हटे । तवतक राजा ने वे सभी काम कर डाले जिससे मधेशयों को विस्थापित किया जा सके । ये मधेशी इन्डियन हैं । ये नेपाल में नहीं रह सकते । इनको इन्डिया खदेडना होगा । इनको नागरिकता मत दो । इनको सभी राजकीय सुविधाओं से वंचित कर दो ।

मधेशी तो वैसे भी २५० वर्षो से वंचित थे । न पुलिस में, न कार्यालयों मे, सभी जगह वे वंचित थे । परन्तु अव नागरिकता नहीं देने का तो साफ मतलव था कि मधेशी इस देश के नहीं हैं । इनको अन्य कहीं जाना होगा । परन्तु वर्मा, भुटान आदि जगहों से आने वाले विदेशियों को भी नागरिकता मिल जाती थी । उनका तर्क था कि भारत की खुली सिमाओं के चलते वहाँ के लोग यहाँ आकर नागरिकता ले लेते हैं । उसी के वहाने वे पुरे मधेश के लोगों को नागरिकता से वंचित करना चाहते थे । वे हिन्दुस्तान के कमजोर होने का इन्तजार कर रहे थे । वे दार्जिलिंग , शिमला, कुमाउ, गढवाल आदि सभी जगहों को लेना चाहते थे । परन्तु गंगा के किनारों तक का भु-भाग नेपाल का ही है, यह कहना वे नहीं चाहते थे । उनकी जन शक्ति एवं महात्मा गांधी के द्वारा स्वतन्त्रता से प्रशिक्षित लोगों को वह लेना नहीं चाहते थे । वे मधेश के अप्रशिक्षित लोगों को भी निकाल वाहर कर देना चाहते थे ।

परन्तु हिन्दुस्तान कमजोर नहीं हुआ । अव हिन्दुस्तान तोडना असम्भव था । इंन्दिरा गांधी के नेतृत्व में हिन्दुस्तान केवल जवरदस्त शक्ति के रुप में ही नहीं प्रकट हुआ वल्कि वह तीसरी दुनियाँ का

नेता भी वन गया । राजा महेन्द्र का सपना सपना ही रह गया । याहिया खाँ का स्वागत एवं इन्दिरा गांधी की अवहेलना करने वाले राजा महेन्द्र को भीगी विल्ली की तरह वंगला देश को मान्यता देना पडा । आशा थी कि चीन कुछ करेगा । लेकिन उसने कुछ नहीं किया । वह चुपचाप तिव्वत को निगलकर उसे पचाने में और अपने आर्थिक सुधारों में लग गया । राजा महेन्द्र को चीन को कोदारी राजमार्ग देने का कोई फायदा नहीं हुआ ।

नेपाली कांग्रेस से तराई कांग्रेस अलग नहीं हुआ परन्तु वी.पी.कोईराला के स्वदेश आने के वाद मधेश की आवाज वुलन्द करने के लिए गजेन्द्र वावु ने सद्भावना परिषद वनाया । सामसुन्दर इसका संस्थापक सदस्य वन गया । निर्दलिय के जीत जाने के वाद प्रजातन्त्रवादी पता नहीं क्यों छटपट कर रहे थे ? उनका सारा काम तो राजा वखुवी कर ही रहे थें वल्कि अधिक सख्ती से । तुम होते तो प्रजातन्त्र की आड में आन्दोलन होता । तुम कुछ नहीं कर सकते थे । राजा ने वह काम निश्चिन्त होकर किया । मजाल नहीं कि कोई आन्दोलन कर दे । अव सारे पहाडी तराई में छा गये तो दुसरा चाहिए क्या ? तुम जो चाहते थे और अव भी करना चाहते हो,वह तो हो ही गया । क्या तुम मधेश को एक मधेश,एक प्रदेश देना चाहते हो,उसे उस रुप में देखना चाहते हो ? अगर नहीं तो राजा जो कर रहे थे वही ठीक था । तुम क्यों छटपट कर रहे हो ? क्या राजा जो कर रहे हैं उसमें तुम्हे कुछ कमी लगती है ? अरे इस देश में लडाई केवल पहाडी मधेशी और जनजातीयों की है और किसी की नहीं । नहीं तो सभी पार्टियाँ मधेश के वारे में एक हैं यह कैसे हो सकता है ? अरे भुगोल को झुठलाने वाले इतना लडने की जरुरत क्या है ? प्रकृति ने इतना सुन्दर विभाजन कर दिया है कि कोई काल्पनीक पीलर युक्त सीमा वनाने की जरुरत नहीं है । हिमाल एक तरफ है, वीच में पहाड और फिर मधेश एक तरफ । क्या इसमें

DO NOT COPY

कोई पीलर गाडने की या सीमा वनाने की जरुरत है ? वितरण प्रणाली को विकसित करो । प्राकृतिक विभाजन से कोई रुकावट है ? क्या उसमें यात्री चितवन से होकर नहीं जायेंगे ? क्या वे सभी रास्ते वन्द हो जायेंगे । अरे भारत तो दुसरा देश है तो आजतक रास्ता बन्द नहीं हुआ । अपने ही देश के लोग तुम्हारा रास्ता वन्द कर देंगे ? पर यहाँ ये प्रजातन्त्रवादी और नवजनवादी इसे नहीं मानेंगे । फिर ये देश को एकता की डोर में वाँधना चाहेंगे । राजा ने अपनी एक भाषा एक भेष में एकता की । प्रजातन्त्रवादीयों ने अपने समाजवादी वृक्ष पर एकता को टंगवा दिया । अव नवजनवादी लोग अपने हँसिये और हथौडे से पीट-पीट कर, काट-काट कार एक करेंगे । यही लोग हैं देश को वनाने वाले । अरे जिन्हें मधेश की सरल एवं सीधे सवाल से चिढ है वे क्या नवजनवादवाले होगे ? इस देश का दुर्भाग्य है कि जितने भी नये विचारों के लोग आये उनमें केवल पहाडी लोग ही अगुवा हो गये । और वे अपने ओछे संकीर्ण भाव को भी नहीं हरा पाये । न वे ब्राह्मणत्व को हरा पाये न धर्मान्धता हटा पाये, न साम्प्रदायिकता को हटा पाये । क्या मधेश उनके देश में नहीं है ? क्या मधेश फलेगा, फुलेगा तो उनको कोई चीढ है ? अगर चीढ है तो छोडिए अपने विचारों को और हमको आगे आने दीजिए । फिर देखिये कि हम देश कैसे सवाँर देते है । एक भाई को वढते आप देख नहीं सकते, आप देश चलायेंगे ? जाकर देखिए अमेरिका को, ५० राज्य एक साथ हैं । जाकर देखिये ब्रिटेनको, कोई संविधान नहीं है । फिर भी दुनियाँ का सर्वोत्तम प्रजातन्त्र है । देश वनाने चले हैं । नहीं वनाने आता है तो हटिए रास्ते से, हमें आने दीजिए ।

गजेन्द्र वावु ने सद्भावना परिषद को सदभावना पार्टी वनां गये । सामसुन्सद सद्भावना पार्टी का भी संस्थापक सदस्य वना । पर उससे क्या हो सकता है ? मधेश की समस्या इतना व्यापक और उलझा हुआ है कि वहुत कुर्वानियाँ देनी होगी । कुर्वानियाँ देने की

DO NOT COPY

वात गजेन्द्र वावु उतना नहीं करते थे परन्तु धीरे-धीरे उन्होने इसका जड रोप दिया । लोगों को हिन्दी को मानना पडा । मधेश को पहाडियों ने थोडी तीरछी निगाहो से ही सही देखना शुरु किया । फिर वहुदल आया । समाजवादी प्रजातन्त्र वालों को अपना हिस्सा मिल गया । देश वैसा ही रहा । इससे विल्कुल स्पष्ट हो गया कि वी.पी. कोइराला का समाजवाद केवल अपना हिस्सा खोज रहा था और कुछ नहीं । इससे यह विल्कुल साफ हो गया । कोई संदेह नहीं रह गया । फिर दुसरा अपना हिस्सा क्यों नहीं खोजेगा ? मधेशी तो निरीह थे, कमजोर थे । उतने जोर से नहीं खोजा । पर माओवादियों ने जोर से खोजा । पर वे तो मधेश को और भी छिन्न-भिन्न करके रख देने वाले थें । उनके प्रदेश विभाजन में भी प्राकृतिक और भौगोलिक विभाजन को नहीं माना गया था । मधेश के ६ जिल्लों को वे पुरी तरह निगलकर उसमें नये नेपाल के गठन का लाल मोहर लगा दिया । इसलिए मधेश को अपना आन्दोलन चलाने के अलावा कोई रास्ता नहीं हैं । यहा मुख्य लडाई मधेश और पहाड की ही है । दुर्भाग्य से इसके विकास के सारे अगुवाई करने वाले पहाडी हैं और ये पहाडी इतने संकीर्ण कि इनसे देश भी चलता है । इस २१ वी शताब्ती में यह एक आश्चर्य है । क्या इतना संकीर्ण मानसिकता किसी देश को चला सकती है ? अरे अपने संकीर्ण विचारों से उपर उठो । राजा हटे । मधेश को थोडा घाम लगा । आखिर घाम आयेगा तो वह सवको लगेगा । पर ये घाम को भी छेक लेने की ताकत रखने लगे । तुम मिल गये, और हम क्या करें ? फलतः मधेश को अलग से आन्दोलन करना पडा । यह आन्दोलन कैसे हुआ,इसका हाल अलग है ।

सामसुन्दर सद्भावना परिषद से सदभावना पार्टी और सभी आन्दोलनों में सहभागी था ।

सीता विधवा हो गयी ।

काम क्रिया के कुछ दिनों के वाद वह मैके चली गयी । किसी ने उसे पुछा भी नहीं । उसके माँ वाप भी चल वसे थे । उसके भाइयों ने सोचा कि उसकी दुसरी शादी कर दी जाय । परन्तु उसने मना कर दिया । वह अपने पति के दो वाक्यों के स्पर्श को याद करती रहती, उदास उदास । उसकी अन्तरंग सहेली भी अव नहीं थी । दुसरों से वह उतनी घनिष्ठता नहीं वना सकी । कोई भी उसके दुख के चलते नहीं कहता था ।

उसकी जिद के सामने उसके भाइयों की एक न चली । तव कुछ वर्षों के वाद उनलोगों ने सोचा कि उसका देवर नागमणि अव जवान हो गया है । उसी से ही उसकी शादी कर देनी चाहिए । उनलोगों ने सीता से इसके लिए पुछा । वहुत सोच विचार कर ४५ दिनों में उसने अपनी रजामंदी दे दी । उसके भाई खुश हो गये और एक दिन उसे अवधापुर पहुँचा गये । उनलोगों ने जव उसके सास ससुर से यह पुछा तो उसके ससुर जसदेव आग ववुला हो गये । वह एक अभागन मर्दमारी औरत है । यही रुढ विचार उसके मन में था । वह जिससे भी शादी करेगी वह मर जायेगा । वे इस डायन से अपने लडके का व्याह नहीं करेंगे । लेकिन वे सीता की मर्जी के खिलाफ उसे वापस भी नहीं भेज सकते थे । वह उसी घर में रहती रही क्यों कि उसका वह घर था । अव वह पुरी तरह जवान हो गयी थी । परन्तु उसका भाग्य उसके ही परिवार की विधवा कुँजा देवी की तरह न था जो फिर से सधवा हो गयी थी । सीता को वे लोग प्रताडित करने लगे । उन्होने उसके देवर को भी भडका दिया कि वह मर्दमारी औरत है । अगर वह तुमसे विवाह करेगी तो तुहारा भी हाल रामचन्दर की तरह हो जायेगा । फिर भी वह कुछ कहता तो नहीं

DONOT COPY

था, पर उससे दुर-दुर रहता था। घरवालों की प्रताडना जव सीता नहीं सह पाती तो वह नैहर चली जाती। परन्तु कुछ दिनों के वाद फिर चली आती। लोग कहते कि वह दुसरा विवाह कर ले। अभी पहाड जैसी पुरी जिन्दगी पडी हैं। पर उसने वैसा नहीं किया।

उसके भाईयों ने अपने सगे सम्वधियों से भी उसके सास-ससुर पर दवाव डलवाया। पर सुनते ही उसके सास-ससुर आपे से वाहर हो जाते। घर का सारा काम काज तो वही करती थी। पर अव उसे मारा पिटा भी जाने लगा। वह सुवुक-सुवुक कर रोती और रातों को सो जाती। अव उसका देवर भी कभी-कभार उसको पिटने लगा। यह थी हिन्दु समाज में एक विधवा की नियति। जिस दिन उसके देवर ने भी पीट दिया तो वह विल्कुल वेआड हो गयी। अव उसका सपना टुट गया। वह अपने मैके चली गयी परन्तु कुछ दिनों के वाद फिर चली आयी। यह सिलसिला कई वर्षों तक चलता रहा। वह अपने मैके चली जाती और फिर चली आती। उसकी प्रताडना से पीघलकर एक दिन सामसुन्दर उसके पास गया। उसने पुछा..

" भाभी यह जवानी वडा अगम हो गयी "

" तो मैं क्या करुँ देवर जी ?"

" अव तुम्हारे देवर नागमणि से तुम्हारी शादी नहीं होगी।"

" तो मैं क्या करुँ ? फिर थोडी देर सोचकर वोली "

" मैं उससे शादी करना भी नहीं चाहती। उसके मार पिट एवं व्यवहार से मैं तंग आ चुकी हुँ। उससे शादी कौन करेगा ? "

" तो तुम दुसरी शादी कर लो। तुमको देखते ही कितने लोग पसन्द कर लेगें। यह तुम्हारा देवर अभागा है। इतनी सुन्दर एवं लावण्यमयी औरत को ठुकरा रहा है।,,

" ऐसा न कहिए देवर जी। मैं इस घर की इज्जत हुँ। यह इज्जत दुसरे के घर नहीं जायेगी। "

जव सीता ने यह कहा तो सामसुन्दर आश्चर्य से उसका मुँह

ताकता रह गया । तो यह अपने को इस घर की इज्जत समझकर आती है ? इस घर की इज्जत किसी दुसरी जगह नहीं जायेगी ? इस कलियुग में भी वह ऐसी भावना से ओत-प्रोत है । इतनी प्रताडना के वाद भी वह इसी विचार को लेकर चल रही है । यह तो आज की सीता ही है । अव इसको वह क्या कहे ? उसने पुछा ।

" लेकिन भाभी , यह जवानी की उत्तेजना किसी के संभाले से नहीं सम्भलती । ,,

" कैसी उत्तेजना देवर जी ? इस देह ने तो कभी यह जाना ही नहीं । पति की यादों एवं दो शब्दों के अलावा स्नेह मैंने कुछ जाना नहीं । यह उत्तेजना तो उनके साथ ही जल गयी । मैं उनकी यादों के उन दो वाक्यों के सहारे यह जिन्दगी काट लुंगी । पर इस घर से दुसरे घर में नहीं जाउँगी । "

श्याम सुन्दर क्या उत्तर दे ? वह वहुत कुछ सोचता हुआ चला आया । वह मन ही मन उस पर रीझ गया था । इस महान औरत से शादी करके कौन पुरुष धन्य नहीं हो जायेगा ? परन्तु उसकी प्रताडना को वह देखता रहा । सीता सवकुछ सहकर चुप थी ।

एक दिन उसके सास-ससुर ने उसके देवर की शादी दुसरी जगह कर दी । जवानी में कहीं उसके पैर फिसल ही न जाये । अव एक नयी वहु आ गयी । अव प्रताडना में एक और कडी जुड गयी । उसकी पत्नी रीता को सव वात मालुम थी । औरतों को उसके ससुराल की वहुत सी वातें नैहर में ही मालुम हो जाती है । उसने आते ही पति को और अधिक भडकाना शुरु किया । वह सव कुछ जानकर भी सशंकित रहती थी । कहीं यह जवान डायन उसके पति पर डोरा नहीं डालने लग जाय । उसका पति तो पहले से ही भडका रहता था । अव उसकी पत्नी के नमक मिर्च मिलाकर आने वाली वातों से वह उग्र हो जता और सीता को अच्छी तरह पीट डालता ।

DO NOT COPY

सीता वेचारी दिनभर नौकारानी की तरह काम करती और अकेली रातों को सो जाती। खाना तो वही वनाती पर उसको खाने को क्या दिया जाता उसका वह फिक्र नहीं करती। रुखा-सुखा जो मिल जाता वह खा लेती। इस पर भी उसने दुसरी शादी नहीं की। अपने मरे हुए पति के खयालों में ही वह जिये जा रही थी।

अव यह एक हिन्दु औरत का एक उच्च विचार था या उसकी रुढीवादियाँ इसको क्या कहा जाय ? वह कभी कभी अपने मैके भी चली जाती और फिर चली आती। इतनी प्रताडना के वाद , अपने देवर की दुसरी शादी हो जाने के वाद उसने एक विकल्प खोजा था। कुँजा देवी की तरह उसे कोई विकल्प नहीं मिल पा रहा था। एक वार जव वह मैके से आयी तो सामसुन्दर उसके पास गया और वोला।

“ भाभी, आखिर तुम इतना कष्ट क्यों झेल रही हो ? अव तो नागमणी की शादी भी हो गयी है। ”

“ आपके भैया के लिए देवर जी। वे हमें छोडकर चले गये तो मैं क्या करुँ। ”

“ तुमको इतना प्रताडित किया जाता है। तुम्हे एक नौकरानी से भी वदतर सलुक किया जाता है। तुम उफ भी नहीं करती क्यों ?

” इस घर की इज्जत के लिए। ”

“ तुम्हारी इज्जत रहे न रहे पर इस घर की इज्जत के लिए तुम मरती रहोगी ? ”

“ वे छोड कर चले गये तो मैं क्या करुँ ? वे जिन्दा रहते तो भी मेरी यह दुर्गति नहीं होती। उनको यह गँवारा नहीं था। फिर यह मैं मरते मरते एक दिन मर ही जाउँगी। उनके पास चली जाउँगी। तवतक उपर से वे देख लें अपनी लुगाई का मरना। वे जहाँ भी होंगें देख लें। मैं मरती रहुँगी लेकिन इस घर से नहीं जाउँगी। ”

“ यह एक दकियानुस विचार है भाभी। ”

DO NOT COPY

“ इसे दकियानुस विचार मत कहो देवर जी । आखिर संसार से किसी को लेकर क्या जाना हैं ? क्या थोडी मौज मस्ती कर ली जवानी में तो दुनियाँ का उदेश्य पुरा हो गया ? कष्टों और अपमानों को झेलकर जो जिन्दगी वनती है वही जिन्दगी है । मौज मस्ती के लिए तो आपके गाँव की कितनी लडकियाँ लडको को लेकर भाग गयी । क्या मैं उन्ही की तरह भाग जाउँ तो आपके विचार की तुष्टी हो जायेगी ? ”

“ पर भाभी .... । ” साम सुन्दर कुछ भी वोल न सका । वह उसके विचारों से सहमत था । वह सीता के और नजदीक गया । उसकी आँखों में आँसु छल-छला आये थे । सामसुन्दर ने उन आँसुओं को पोंछा । सीता ने उसकी वाँह पकड ली ।

“ रहने दीजिए देवर जी, इसे वहने दीजिए ”

“ नहीं भाभी, तुम्हारे आँसु मुझसे देखे नहीं जाते । ”

“ अगर नहीं देखे जाते तो इस वाँह को मत छुडाइए । इस वाँह का सहारा दीजिए मुझे । ”

सामसुन्दर ने भाभी की मन की वात को समझा । उसने अपनी वाँह छुडाने का प्रयास नहीं किया । सीता ने उसकी वाँहों को अपने सिने से लगा कर दवा दिया और भरी आँखों से अपने सामसुन्दर को देखने लगी , देखती रही ।

“ आप भी तो हमारे देवर ही हैं । मैं इस घर से कहीं नहीं जाउँगी । ”

“ पर भाभी मैं एक शादी शुदा .... ”

“ मैं जानती हुँ देवर जी । मैं देवरानी जी की दासी वन कर रह लुँगी । हम दोनों बहनों की तरह दिन गुजार लेंगे ”

“ सामसुन्दर ने कोई उत्तर नहीं दिया । वहुत देर तक दोनों की वाँहे एक दुसरे की वाहों में थी । फिर सामसुन्दर “ जाना है ” कह कर वापस हो गया । सीता उसे घर के दरवाजे की ओट से देखती रही ।

DO NOT COPY

ए ए ए

उसके वाद वे दोनों रोज-रोज मिलते और मन का वोझ हल्का करते । वे एक दुसरे से कई वार लिपट-लिपट कर रोये । पर नियति को कुछ और मंजुर था । एक दिन सामसुन्दर ने अपनी माँ से वोला ।

“ माँ एक वात हैं ? ”

“ कहो । “ उसकी माँ ने कहा

“ क्या तुम राजी होगी ? ”

“ पहले वात तो कहो ”

“ माँ सीता भाभी से शादी करना चाहता हुँ । ”

सामसुन्दर ने वडे निश्छल मन से अपनी वात माँ के सामने रखी । अपनी औरत को उसने यह वात नहीं वतायी । पहले माँ राजी हो जाय तो फिर उसके वाद उसे मनाना होगा । यह विशुद्ध प्रेम नहीं था । इसमें एक मानवीय करुणा भी मिला हुआ था जो सीता के प्रति उस नौजवान के मन में उमडा था । इसके निकास के लिए वह माँ के द्वार से जाना चाहता था । माँ उसकी वात सुनकर सिहर उठी । उसको लगा कि वेटा अपने काल को वुला रहा हैं । उसका भी वही अंजाम होगा जो रामचन्दर का हुआ । उसने कहा -

“ तो तुम भाभी के पास उसको सान्तवना देने नहीं , उस मर्दमारी औरत से प्रेम करने जाते हो ? ”

“ माँ तुम भी इसी दाकियानुस विचारों से सहमती रखती हो ? यह २० वी शताब्ती है । सव तो उसे दुत्कारते ही हैं, तुम भी ...... “ ,नही वेटा, अगर तुम नहीं मानोगे तो मैं यह वात तुम्हारे पिता से कह दुँगी । ”

सामसुन्दर डर गया । उसे पिता का खौफ था । यह वात वह पिता के पास नहीं पहुँचाना चाहता था । पहले माँ से इजाजत ले लेना चाहता था । जो उसे नहीं मिला । पर रोज-रोज वह सीता से

मिलने का मोह नहीं छोडा सका । कुछ दिनों के वाद जव सिता ने एक दिन सामसुन्दर से यह कह दिया कि एक दिन मैं आपके घर में आकर वैठ जाउँगी तव सामसुन्दर ने उसे मना किया । नहीं-नहीं तुम ऐसा नहीं करोगी । मैं माँ से फिर इजाजत लेने की कोशिश करता हुँ । एक दिन फिर सामसुन्दर ने अपनी माँ से वोला -
“ माँ अगर तुम इजाजत नहीं दोंगी तो किसी दिन मैं भाभी को लाकर विठा लुँगा । ”

माँ सन्न रह गँयी । उस समय उसने कुछ नहीं कहा पर इस वात को उसने उसके पिता एवं उसकी वीवी से कह दिया । सामसुन्दर की पत्नी शाम को सरेह में जाते वक्त सीता के उपर झपट पडी । उसने सीता को इतनी गालीयाँ दी जिसकी उम्मीद सीता को नहीं थी । सामसुन्दर के पिता चतुर थे पर वडी दकियादनुस विचार वाले । उन्हे भी वेटे का मोह पता नहीं कैसे घेर लिया । सीता एक मर्दमारी औरत है इसे वह भी मानते थे । उन्होने एक दिन इस वात को धीरे से नागमणी को कह दिया कि वह सीता को रोके । नागमणि को तो इस वात की कोई चिन्ता नहीं थी । परन्तु उसने अपने वडे भाई से वात वतला दी । सीता का जेठ सगुनी तो ऐसा इन्सान था कि वह घर की इज्जत रखना ही नहीं जानता था । उसने इतना हंगमा मचाया कि इस वात को सारे गाँव के लोग जान गये । फिर सीता की ऐसी पिटाई हुई कि उसे कई दिनों तक होस नहीं रहा । सामसुन्दर और सीता के मिलने पर विल्कुल पावन्दी ही नहीं लगा दी गयी वल्कि सीताको उसके नैहर सिरखिण्डी पहुँचा दिया गया । इतनी प्रताडीत होकर भी उसने दुसरी जगह शादी नहीं की । उसके भाई कही अन्यत्र शादी कर सकते थे । पर कैसी रुढ और गजव की औरत थी वह । जवानी उफान पर थी पर वह कौन सी वात थी कि उसने शादी नहीं की ?

एक साल के वाद वह फिर आयी । सामसुन्दर को इतना

DO NOT COPY

साहस नहीं था की वह आगे वढकर वतला दे कि वह उससे शादी करेगा। सीता ने अव अपना हिस्सा लेकर अलग रहने को सोच लिया। इसके लिए वह अपने कुटुम्वियों एवं सामसुन्दर के पिता से भी मिली पर किसी ने इसमें भी उसका साथ नहीं दिया। उस समय जन्म दर्ता या विवाह दर्ता नहीं होता था। किस आधार पर वह नागरिकता लेगी ? नागरिकता के विना वह कैसे अपना हिस्सा ले सकती है ? यह नागरिकता उसे दिलवायेगा कौन ? चारों तरफ वह अरदास लेकर गयी पर किसी ने नहीं सुना। उसका जेठ तो सुनते ही इतना आग ववुला हुआ कि फिर नागमणि के हाथ में लाठी थमा दिया। उसका इतना भुर्ता वना दिया गया कि कई दिनों तक वह विस्तर से नहीं उठ सकी। कायर सामसुन्दर सव देखता रहा, कुछ भी नहीं कर सका।

एक दिन वह मैके चली गयी। और वहाँ से वापस नहीं आयी। दुसरी जगह उसने शादी नहीं की। एक गाय और कुत्ते को वह पाला करती थी। गाय हिन्दुओं की एक पवित्र निशानी है। कुत्ताको वह इसलिए पालती थी कि वह जानवर होकर भी आदमी से अधिक वाफादार होता है। वह उसके साथ रहती , खेतों में जाती और सिलाई बुनायी कर अपना गुजर वसर करने लगी। वह किसी के उपर भी, अपने भाइयों के उपर भी, भार वनना नहीं चाहती थी। यही नहीं उसने सिलाई , बुनायी के पैसे जोड-जोड कर दश कट्ठा जमीन भी वना लिया।

अव वहा से वहुत कम खवर आती थी। एक दिन सामसुन्दर वहुत उदास था। वह यो ही श्रीखिण्डी चला गया। जव वह सीता के दरवाजे पर पहुँचा तव वह गाय को चारा डाल रही थी। वह सामसुन्दर को देखकर चौंकी पर मन ही मन खुश हुई। सीता ने उसे खिलाया, पिलाया और वैठक खाने की चौकी पर वैठा कर मौन हो गयी। सामसुन्दर विस्तर पर वैठा था, सीता एक कोने पर खडी

DO NOT COPY

थी । सामसुन्दर ने ही मौन को तोडा ।
“ भाभी , कैसी हो ? ”
“ जैसी भी हुँ ठीक हुँ । ”
“ पर भाभी , शादी.......”

,,अव इन वातों से क्या फायदा देवर जी ? ,, वह सामसुन्दर की वात को वीच में काटकर विफर उठी । उसने कहना चाहा कि आप भी तो हिम्मत नहीं जुटा सके । पर संयत होकर वोली -
“ अव इन बातों से क्या फायदा देवर जी ? मैंने मन को मार लिया है । मैं आपके भैया की यादें लेकर ही जीउँगी । हाँ अव फिर यहाँ मत आइए देवर जी । वहाँ जो जग हँसाई हुई सो हुई अव यहाँ भी मेरी जग हँसाई होगी । ,,

सामसुन्दर ने इस वात के कटु सत्य को समझा । वह वहाँ से चल दिया । सीता उसे उसी तरह जाते हुए देखती रही । पता नहीं वह उसके प्यार का इजहार था या उस कायर सामसुन्दर पर उसकी कातर दृष्टि थी । सामसुन्दर उससे फिर कभी नहीं मिला । वहाँ कभी नहीं गया ।

o - o

९

मधेश सेवा आश्रम में प्रवचन चालु था :

इधर राजनीति की तो कहना ही क्या ? वह अपनी रफ्तार में चली जा रही थी । सभी लोग देशभक्त और राष्ट्रभक्त हो गये थें । राजभक्त लोग अपनी खोली में घुस गये थें । वी.पी. कोइराला ने तो कृपा नहीं की लेकिन गणेशमान की कृपा से एमाले नाम के राजनेता सामने आयें । पुष्पलाल जैसे भारतीय एजेन्ट को उनलोगों ने किनारे कर दिया था । वे विना शहीद हुए ही मर गये । अव काँग्रेसियों की

तरह एमाले भी इस चारागह पर अपना प्रभुत्व कायम करने लगा था । तराई का एक नेता हुए शशिधर मिश्रा । उनको तराईवासियों ने हरा दिया तो वे वडे उदास हो गये । मधेशवालों को भी अच्छे वुरे की क्या पहचान ? उन्होने ऐसे त्यागी नेता की जमानत जव्त करवा दी । मधेशी लोगों में जागरुकता नाम की कोई चीज है नहीं । इसलिए सभी नहीं नेता भी उनका नेता वना रहता है । मधेशी लोगों को त्यागी,व्यागी नहीं चाहिए । जो वोलता है वही मधेश का नेता होता है । अव शशिधर मिश्रा वेचारे वोलना-ओलना क्या जाने ? किसी तरह मैटीक पास करके एक हेल्थ पोस्ट का हेड हो गये । तभी उनको एमाले से परिचय हुआ । वहाँ के भार्गव नेपाल पहाडी होते हुए इतनी अच्छी हिन्दी वोलते हैं कि मधेशीवादी जो हिन्दी की अपील करते हैं , इतना शुद्ध हिन्दी नहीं जानते । वे जव वोलते हैं तो मधेशी लोग प्रभावित हो जाते हैं । हाँ, यही हैं हमारे नेता । कौन कहता है कि पहाडी हैं ? यह तो हमारा इन्डियन लगता है । शशिधर मिश्रा उनसे इतने प्रभावित हुए कि उन्होने अपना सीट उन्ही को दे दिया । अव इतना त्यागी कौन होगा ? वेदानन्द झा का भी लोगों ने जमानत जव्त करवा दी । वे तो वेदानन्द झा चालाक नहीं होते तो कहाँ गिरते पता नहीं ? पर राजा ने उठा लिया । शशिधर मिश्रा इतने गद्दार नहीं थे । उन्होने त्याग की भावना दिखलाई और भार्गव नेपाल को अपना सीट दे दिया । शशिधर मिश्रा को कुछ नहीं चाहिए । थोडा अहेवयी और राजनीति से जो पैसा आया उससे एक मकान वना कर काडमाण्डु में ही थोडी अपना वास स्थान वना लिया । काठमाण्डु मे तो घर वना पर काठमाण्डु का खर्चा कैसे चलेगा ? अहेवयी से तो चल नहीं सकता । अतः उन्होने एक अकधकचरा नर्सिंग होम वना दिया और अपनी पहडनी वीवी को उसमें लगा दिया । अव मजे से जीन्दीगी कट रही है । भाड में जाय मधेश । अव आप ही सम्भालिए भार्गव वावु । भार्गव वावु ने उनके चुनाव क्षेत्र

को सम्भाल लिया। वे खडे हुए और जीत गयें।

पर कम्युनिष्ट, कम्युनिष्टों का ही इतना दुश्मन होता है वे नहीं जानते थें। २०४६ साल का आन्दोलन तो हो गया। अव विना आन्दोलन का यह देश कैसे चलेगा ? राजा जव अपने भाई को मारकर राजा हुए तो उनका एक छत्र राज कैसे नहीं होगा ? अव कौन है दुशन हमारा ? शेरवहादुर को लोग शेर वनाते हैं। पर वह कैसा गीदड है हम वताते हैं। फिर जंगल के राजा ने इस गीदड को अपने राजकाज से वरखास्त कर दिया। वे गीदड अपने भाइयों के साथ जाकर रहने लगे। जव राजपाट मिल गया था तो गीदड भाई नहीं दिखलाई पडते थे। अव दिखलाई पडने लगे। परन्तु इसी में मधेश के गीदड शशिधर मिश्रा को कुछ माँस खाने को मिल गया था। पर वे भी वरखास्त हो गये। पर उनके गुरु भार्गव वावु को अपने शिष्य की दुर्गति देख कर भी चेत नहीं हुआ। उन्होने भी शेर मंत्रियों में शामिल होने के लिए विन्ती पत्र दे दिया। यह शेर की उदारता थी कि गीदडों को भी विन्ती पत्र देने का अधिकार था। शेर को मालुम था कि इन गीदडों से कुछ नहीं होगा। वे वन्य जन्तुओं का शिकार नहीं कर सकते। ये दुसरे के शिकारों का आनन्द लेते हैं। अतः उसने श्रीलंका के जंगलों में भटकते अपने पुराने शिकारी कुत्ते को वुलाया। कुत्ते ही मेरे साथ असल शिकार कर सकते हैं। गीदड तो हम जो जुठन छोड देते हैं वही खाकर संतोष कर लेते हैं। हम कुत्तों के साथ शिकार करेंगे। वह कुत्ता अपनी जवानी में वी.पी. कोइराला जैसे सिंह को भी काट खाया था। उसके काटे के दर्द से वे ३० वर्षों तक कराहते रहे। पर अव यह कुत्ता बुढा हो गया था। यहाँ से लेकर श्रीलंका तक की इतनी कुत्तियों से उसका नाजायज सम्बन्ध था कि उसकी जीवन उर्जा ही समाप्त हो गयी थी। अव एक नौजवान शेर, दुसरा बुढा कुत्ता। कोई ताल मेल नहीं वैठा। इधर मैंने कहा कि यह देश विना आन्दोलन का तो चलता नहीं। किसी

DO NOT COPY

आन्दोलन का धक्का लगता है तो थोडा घसकता है । फिर पीछे चला जाता है । फिर धक्का लगता है , फिर चलता है, फिर पिछे चला जाता है । होते होते यह इतना पीछे चला गया कि आगे जाने का रास्ता ही नहीं है । परन्तु देशभक्तों ने इसको आगे ले जाने का एक वार और उपाय लगाया । पर इसमें तो गजव हो गया । पुराने कुत्ते तो क्या शेर महराजा भी वेपत्ता हो गये । वह तो मिलावट सहनशीलता या योजना थी कि वे लोग फाँसी पर नहीं चढे ।

पर हुआ गजव ! अव किस-किसका पत्ता साफ हुआ इसको क्या कहें ? शशिधर मिश्रा ने पहले ही हथियार डाल दिया था । इसी वीच एक और मधेश का आन्दोलन हो गया । मधेशी लोग तो जाग गये । ऐसा भी कहीं होता हैं । ये कायर लोग भी जागे कैसै ? अच्छा इनको हम सवक सिखाते हैं । मोटे चश्मे पर भी जव उनको अक्षर दिखलाई नहीं पडते थे तो चश्मा उतार कर देखा । इस वार भी जव कुछ दिखलाई नहीं पडा तो एक वार फिर चश्मा लगाये । फिर भी दिखाई नहीं पडा तो एक आदमी ने पढकर सुनाया । मधेशी लोगों ने इस कदर उनकी आँखो की दृष्टि गायव कर दी थी कि उनको कुछ समझ में नहीं आता था । जब दुसरे लोगों ने समझाया तो उनको समझ आ गयी । उन्होने मधेश के मुद्दे को तो सम्बोधन कर दिया, पर इससे क्या होता है ? गृहमंत्री तक को टस से मस नहीं किया । आखिर मेरा घर कहाँ हैं ? मधेश में । हम भी मधेशी हैं । उनको हम से अधिक कौन जान सकता है ? आखिर हमने मधेश पर सवारी ऐसे ही की है ? चुनाव हुआ तो वे जान गये कि सवारी कैसे की थी । आन्दोलन तो इन गीदडों को जगा दिया । वेकार हमने इनको जगाने का काम किया । हम राजा के साथ ठीक थे । वह तो महापंचो ने हमसे आन्दोलन करवाया । नहीं तो देखते इन मधेशियों को । आखिर महापंच भी गये और हम भी गये । पर गये कहाँ ? हम भी हैं और महापंच भी हैं । वे भी पार्टी खोलकर लोकतन्त्रवादी वन गये ।

लोकतन्त्र सवके लिए होता है हमने यह सावित कर दिया । दुसरा देश होता तो उनको चावोचेस्की की तरह फाँसी हो जाता । लेकिन हम हिन्दु तो एक वैसे ही अहिंसावादी, दुसरे उदारवादी । प्रजातन्त्र सवका है ।

फिर चुनाव आया तो सवका प्रजातन्त्र हो गया । भार्गव वावु दोनों जगहों से हार गये । गजव है मधेश में वे हार गये तो समझ में आता है कि मधेश जाग गया है । पर काठमाण्डु में कैसे हार गये ? पर वह जो राजा को विन्ती पत्र दिया था वह क्या था ? काठमाण्डु की जनता आज से नहीं जानती । वे तो उनके नाक, कान कटे थे तभी से जानती है । मधेशी होने पर भी रामराजा वावु को जीता दिया था । पर आपको हरा दिया । दीजिए और विन्तीपत्र । सुजाता कोईराला हार गयी । पर गजब है भाई । यही लोकतन्त्र का करिश्मा है । भार्गव वावु और सुजाता कोईराला दोनों प्रधानमंत्री हो गये । ऐसा तो राजा के राज्य में भी नहीं हुआ । गिरिजा वावु गये तो गये पर ऐसा चामत्कारिक लोकतन्त्र छोड गये कि संसार में खोजना भी मुश्किल ।

वह जो कंधे पर उठाकर लाये थे वे आपके जैसा नहीं थे । वे अपने को वन्दुक से, कुछ चन्दे-वन्दे से मजवुत वना लिया था । कम्युनिस्ट कम्युनिष्टों का ही दुश्मन होता है । उन्होने तो एमाले को हराकर ५० प्रतिसत वोट लाया । फिर जितने गीदडों ने शेर की पार्टी को छोडा था वे सव जीत गये । कहाँ सभ्य, गोरखा, राणा, महापंच कहाँ ये मदिसे असभ्य, काले ,गँवार, कोई तुलना नहीं । पर गीदड भी वहुत चालाक होते हैं । वे शिकार को अपनी चाकरी से ही खाते हैं । वह रौतहट काण्ड जो हुआ उसे भुल जा , लहानकाण्ड जो हुआ उसे भुल जा । जो शहीद हुए सो हुए । जो वेचारे गरीव मरे तो मरे । अव भाई-भाई हैं । मदेसी-माओवादी भाइ-भाई । फिर क्या था, उसने सवकुछ अपने हाथों में लिया । भार्गव वावु तो वेचारे चले गये ।

DO NOT COPY

वी.पी.गणेशमान, कृष्ण प्रसाद भट्टराई की तीकडी जव थी तव थी । अव सुशिल देउवा और रामचन्द्र की तीकडी है । इनसे कुछ होने वाला नहीं । वेचारे जानते हैं कि चुनाव में सव हारेंगे । इसलिए वेचारे न चुनाव में जाना चाहते हैं न पुनर्स्थापना में । वे अव कहीं नहीं जाना चाहते । न संघियता में न गणतन्त्र में । वेचारे की “ भइ गति साँप छुछुन्दर केरी,, हो गयी है । वे आन्दोलन की भी धमकी देते हैं पर वह भी रिहंर्सल में टाँय टाँय फिस सावित हो गया । एक थोडा मोहन वैद्य फड-फडा रहे हैं । उनको भी चीन का रास्ता दिखा दिया जायेगा । थवांग में वे अपने ही भाइयों की इज्जत उतारते हैं । कुवेर से थप्पड खिलवाते है । और वह जो ए-माओवादी से अपने हिस्से का पैसा माँगते हैं वह क्या है ? वे तुमको ५३ करोड रुपये देंगे ? थवांग में इज्जत उतारते हैं । आइए मधेश में कि हम क्या करते हैं ? अपने ही भाई मातृका यादव को गिडगिडाने पर भी अपनी पार्टी में नहीं लेते । चले हैं दुसरे को सवक सिखाने । नहीं इनको चीन का रास्ता दिखाना पडेगा । जाइए वही पर अपनी सरकार चलाइएगा । यहाँ आपका कोई काम नहीं । गीदड भभकी देते हैं । जंगल में चले जायेगें । फिर जनयुद्ध करेंगे । जाइए कौन रोकता है ? किसको सुना रहे है ? सियासत के लिए सव कर रहे हैं । कोई इनको वुलाकर गद्दी पर वैठा दे तो ठीक हैं । लेकिन त्यागी हैं आप । जव माओवादियों में थे आप तो क्या आपने सत्ता कब्जा का सिद्धान्त नहीं वनाया था ? आज छटपट कर रहे हैं । सत्ता कब्जा दिखालाई पड रहा है । नहीं हटिए वावुराम, वने रहिए । रामवरण वावु कुछ नहीं कर सकते । तुम भी पहाडी, सेना भी पहाडी । मधेशी की औकात क्या है ? सत्ता पर कब्जा तो वनाया, अव सेना पर भी कब्जा वनाकर फिर जंगवहादुर वन जाईये । कम से कम राजा तो नहीं रहेगा जो हम मधेशियों को २५० वर्षों तक चुसता रहा । कम से कम तुम उतना तो नहीं चुसोगे । हम नरोत्तम सिंहानुक जैसे उसको फिर से नहीं वुलायेंगे । पर एक

DO NOT COPY

वात याद रखना । हमारी अभिव्यक्ति पर कब्जा मत करना । मधेशियों को अपने साथ रखना ।

परन्तु मधेश पर कब्जा हो गया । वेचारे सुरेश त्रिपाठी को सद्भावना छोडना पडा । अपने हाथों से वनाये सद्भावना पार्टी में ही रामजन्म तीवारी को रास्ता दिखला दिया गया । कब्जा केवल माओवदि नहीं करते । राजेन्द्र महतो और लक्ष्मणलाल कर्ण ने ऐसा सत्ता कब्जा किया कि सुरेश वेचारे ने तो किसी तरह स्थान वना लिया । पर अनिल झा ? यह वेचारा उसी समय से सद्भावना को वनाया था । छटपट करने लगा । फिर क्या था । गजेन्द्र सिंह का वनाया शख्स क्या ऐसे रहेगा ? उसने भी सुरेश त्रिपाठी से कुछ ज्यादा ही हासिल कर लिया । राजेन्द्र महतो और लक्ष्मणलाल कुण्डली मार कर वैठे रहे ।

नहीं होगी आपसे मधेश की रखवाली । अव आप जाइए पहाड, अपना संगठन मजुवत करिए । धोती खोलकर नहीं भेज दे तो मेरा नाम नहीं । वह पहाड, क्या जनकपुर है ? सरद सिंह भण्डारी को नेता मान लेगा ? आप रहे हैं पहाड कभी ? वे तो रहे हैं मधेश में । मदेशियों का नस-नस पहचानते हैं । आप पहाडियों का नस-नस पहचानते हैं ? वेचारा लक्ष्मणलाल कर्ण जव पार्टी के सम्मेलन में जनकपुर चलने को विमल कृष्ण ने कहा तो उन्होने टका सा जवाव दिया “ हमको सद्भावना फद्भावना पार्टी में जाने कि फुर्सत नहीं है क”

आज उसी फद्भावना में फुदुक रहे हैं । पर जो भी हो ८० लोग जीत गये ।

ए ए ए

१०

अव वह गाना सुनाओ फातिमा

DO NOT COPY

“ ये क्या जगह है दोस्तों, ये कौन सा दयार है ? ”
जव तुम यह गाना गाती हो तव जान न्योछावर कर देने को जी करता है ।
“ हुजुर रहने दीजिए । इस समय वह गाना नहीं गाया जायेगा । आप तो कइ वार इसे सुन चुके हैं । मुझे इस गानाको गाने का मन नहीं करता । ”
“ हाँ मैं जानता हुँ । इस गाने के साथ तुम रोने लगती हो । पर आँसु भरी जवानी भी तुम्हारी कितनी अच्छी लगती है ? ”
“ वह मेरी आँसु भरी जवानी नहीं है हुजुर । वह मेरी आँसु भरी जीन्दगी है । जव भी मैं वह गाना गाती हुँ कमरे में जाकर रो पडती हुँ । मेरे इन आँसुओं को कौन समझेगा ? आप भी नहीं । ”
“ तो चलो वही गाना सुनाओ जो तुमने अपना नथ उतारने के पहले गाया था । फिर मैंने तुम्हारा नथ उतारा था ”
“ हमारा नथ तो हजुर वहुत पहले उतर चुका था । शादी के वाद । ”
“ उतरा होगा फातिमा । पर वेश्याओं की शादी नथ उतरने के वाद होती है । जैसे सभ्य समाज में लडकियों की शादी होती है । वैसे ही वेश्याओं की शादी होती है । उसका नथ उतरता है । ”
“ हजुर शादी होने के वाद लडकियों को वहाँ कोई आँख उठाकर नहीं देख सकता । उसका पति उसका रखवाला होता है । पर क्या आप हमारे रखवाले हैं कि इसे शादी कहते हैं ? आपकी नथ उतारने के वाद हमारा कितना नथ उतरता है इसे क्या आप रोक सकते हैं ? इसे शादी जैसे पाक शब्द से तुलना नहीं करें । ”
„तुलना तो है फातिमा । नथ उतरना वेश्याओं के जीवन की शादी होती है”
“ अच्छा मैं आपका दुसरा पसन्दिदा गाना सुनाती हुँ । आखिर आप हमारा नथ उतारने वाले दुलहा जो हैं ।”

DO NOT COPY

फिर गौहर के समने वह गाने लगी

“ अजीव नाम है तेरा ऐ फातमा हजुर कि आज तक किसी का तु माँ न हो सकी ”...

गीत खत्म होने पर गौहर ने उसे अपने आगोश में समेट लिया । फिर वह उसे धीरे-धीरे उस कमरे की ओर ले जाने लगा जिसमें रात गुजरने वाली थी । उसी कमरेमें फातमा का नथ उतरा था । नथ उतारने वाला लखनउ शहर का अमीर था । अव फातमा एक प्रसिद्ध नर्तकी एवं गायिका हो गयी थी । गीत सुनने के लिए कई जगहों से दिल-जले आते थे । सभ्य कहलाने वाले कुछ लोगों में भी वह प्रसिद्ध थी । वे वहाँ चोरों की तरह आते और अपने पैसे लुटाकर चले जाते । अव इस नर्क में फातिमा ने अपना मन लगा लिया था । अव जव यहाँ से परिन्दे भी पर नहीं मार सकते तो वह कैसे कहाँ जाय ? कहीं जाकर भी उसे क्या मिलेगा ? यहाँ आने के वाद वह मुसलमान हो गयी थी । मुसलमानों ने इतना तो किया कि उसने इन वेश्याओं को भी अपना लिया । हिन्दुस्तान की अधिकतर वेश्यायें मुसलमान होती हैं । फातिमा ने अपने इस जीवन को अपनी नियति मान ली । वह विद्रोह करे भी तो कैसे करे ? इसको कौन सुननेवाला है ? वेश्याओं को अमीरन ऐसी आँखों से सव पर निगाहें रखती है कि हमारी कई लडकियों का हश्र मैंने देखा है । नहीं , नहीं , अव यही हमारा जीवन है । चलिए हुजुर अपने कमरे में । वह रात भर उस गौहर के साथ रही । जो जिसका नथ उतारता है, वह उस वेश्या का पति होता है । वह किसी और की नहीं हो सकती । कई वार इसके लिए झडपें भी होती हैं पर अमीरन उसको अपनी खुवी से निपटा लेती है । नथ उतारनेवाले का ही हक सावित होता है ।

सुवह गौहर चला गया । फातिमा विस्तर पर है । वह दिन को सोती और रातभर जागती रहती है । इतने परिश्रम पर भी वह पिंजरे के पंक्षी की तरह छट-पटाती और जीन्दगी को तरसती रहती है ।

कोई तो उसका वन्धन छुडानेवाला नहीं होता । सव मौज मस्ती करते और मसलकर चले जाते हैं । फातिमा अपनी इस नीयति पर कई वार आँसु वहाये हैं और आँसुओं को खुद ही पोछा है । कोई नहीं है, इन आँसुओ को पोछनेवाला । कोई नहीं होगा इन आँसुओं को पोछनेवाला । जवतक मर्द का संसार है यह आदि काल से चला आया है और अनन्त काल तक रहेगा । मर्दों का संसार, फातिमा ने एक आह भरी , गहरी साँस ली और सो गयी । आँख वन्द करते ही वह सो गयी । दिनको ही वह सो गयी, जैसे रात को कोई दुल्हन सोती है । उसकी निन्द एक ही वार शाम को खुली ।

निन्द खुलते ही वह जल्दी-जल्दी तैयार होकर महफिल मे चली गयी जहाँ कई जवान उसके थिरकने का इन्तजार कर रहे थे । वह इस मुल्क में खो गयी थी । अपने ही मुल्क में वह खो गयी थी । क्या यही वह मुल्क है जिसमें लोग औरत को दुर्गा, जगदम्वा ,सीता और न जाने क्या क्या कहते हैं ? उसने अपने भाव को छिपा लिया और नौजवानों के वीच नाचने लगी । उसकी एक-एक अदा, एक-एक भाव-भंगीमा पर वे नौजवान पैसे लुटाने लगे । उनको पता नहीं कि ये अदायें, ये भंगिमाये नकली हैं या असली ? फातिमा उनके पैसों को उठाती, मुस्कुराती और एक ओर तवलेवादक के पास रख आती । फिर वह नाचती और किसी की गोद में वैठ जाती । यही उसके जीवन का क्रम था ।

ण ण ण

वहुत दिन वीत गये । उसकी उम्र अव ढलने लगी । तव जाकर अमीरन ने उसके वन्धन में कुछ ढील दी । अव उसको यह विश्वास हो गया था कि इस उम्र में वह कहीं भाग कर नहीं जा सकती । उसके वाहर की दुनियाँ अव समाप्त हो गयी होगी । तव उसे कुछ, ढील दी गयी । परन्तु तव पिंजरे का पंक्षी भी वहुत पस्त हो जाता है । वह उडना भुल चुका होता है । फातिमा भी उडना

DO NOT COPY

भुल चुकी थी ।

वह वाजार जाती, खरीद फरोख्त करती । किसी सभ्य घर की लडकी समझ कर कोई उसके पास भी नहीं फटकता । वह स्टेसन जाती । चारों ओर नजर दौडाती कि कोई नजर आ जाये । पर कोई नहीं आता । वह मायुस होकर फिर अपने वेश्यालय में लौट आती ।

इसी तरह दिन वितता रहा । अव वह कहीं भी आती जाती और फिर लौट आती । कोई रोक-टोक अव नहीं था । वेश्याओं के लिए अव नये नियम वन गये थें । वे अपना शरीर नहीं वेंच सकती । केवल नृत्य गान और मनोरंजन कर सकती हैं । फातिमा तो अव नृत्य, भी नहीं कर सकती थी । शरीर सम्वन्ध के लायक भी अव नहीं था । यह नियम पहले वनता तव कोई वात होती । पर अव वन कर क्या होगा ? और अव ही वनकर क्या हो गया है ? केवल कानुन वन गये हैं । पर होता वह सव कुछ है जो होना चाहिए । यहाँ पर मनोरंजन करने , गाना सुनने, कोई थोडे आता है ? वह आता है देह-सुख की भुख मिटाने । गानों एवं मनोरंजन के लिए अव तो सिनेमा आदि आ गये हैं । उसके लिए भी कितने दरवाजे खुल गये हैं । अव तो सभ्य घराने की लडकियाँ इस सुख के लिए उँची कीमतों पर उपलव्ध होती हैं । हाँ जो गरीव हैं , कमजोर हैं वे केवल हमारे पास अपनी हवस मिटाने आते हैं । अव तो हमारा, शरीर विक्री भी दो कौडी की हो गयी है । अव राजाओं , नवावों जैसा कोई हवेली दे देने वाला यह धन्धा नहीं रहा । अव तो यह धंधा नरक का धंधा हो गया है । अव प्रतिष्ठित वेश्याओं या गयिकाओं का जमाना कहाँ है । अव तो चकला घर होता है-व्याधियों और महमारियों का अड्डा । अच्छा हुआ अव मेरी वह उम्र नहीं रही । हम विमारीयों एवं महामारियों से वच गये । यही क्या कम है कि हम अपना जीवन ठीक से ही जी रहे हैं । अव कहीं आने जाने का रोक टोक नहीं है । अमीरन भी अव अशक्त हो गयी है । उसकी माँ चल वसी है । अव

DO NOT COPY

वह भी चल वसेगी । उसने मुझे ही अपनी वेटी वना लिया है । अपने वाद वह मुझे ही अपना राज-पाट देकर जायेगी । उसको मुझ पर ही विश्वास है । पर मैं वह राजपाट लेकर ही क्या करुँगी ? मैं सभी लडकियों को स्वतंत्र कर दुंगी । कहीं चली जाँउगी । पर कहाँ जाउँगी ? वुढापे का सहरा कौन होगा ? आखिर आदमी के जीवन में वालपन, जवानी, वुढापा सव आता है । उस वुढापे का सहारा , तो सव खोजते हैं । उसका उपाय तो सभी करते हैं । एक तो ऐसी ही वेश्याओं को वुढापे में कैसी दुर्गती होती है ? कोई उसको पुछता भी है ? पानी पीला दी लडकियाँ तो वहुत है । अमीरन की माँ मलमुत्र भी विस्तर पर त्याग देती थी । अव लडकियाँ मुजरे में जाय या उसका मलमुत्र धोये ? उसी में कोई भली लडकियाँ मिल जाती हैं करने को । अमीरन तो उसकी अपनी वेटी थी, सव किया । मेरी कौन सी संतान है ? पर नुरजहाँ ऐसी नहीं है । वही मेरी खातीर करेगी । मरने के वाद दफना तो देगी । नहीं-नहीं मैं इन लडकियों को स्वतन्त्र नहीं करुंगी । स्वतन्त्रता भारत के लिए आयी होगी । हम तो और अधिक परतन्त्र हो गयी हैं । भविष्य के लिए कोई जुगाड नहीं । नेता लोग हमारे पास भी आते हैं । हम जाकर उनको वोट भी देती हैं । पर कोई कुछ नहीं करता । अगर हमको कहीं वसा देने का प्रोग्राम होता, हमारी रोजी रोटी की कोई व्यवस्था होती तव तो हम स्वतन्त्र हो सकती हैं । पर इतना होने पर भी हम स्वतन्त्र होगी ? हमसे कोई शादी करेगा ? अगर नहीं करेगा तो फिर वही नर्क । वह वुढापे की कल्पना से ही काँप जाती है । वह सारे विचारों को झटक देती है । वह वगल में सोयी खाँसती हुई अमीरन के पास जाती है ।

“ अव कैसी हैं वानो ?

“ मुझे वानो मत कहो फातिमा, माँ कहो । क्या तुम मेरी पुत्री नहीं हो ? क्या मैने तुमको कभी दुख दिया है ?

अमीरन की वात सुनकर फातिमा कुछ नहीं वोलती । मेरी

जवानी में उसने स्वतन्त्र नहीं छोडा । हमेशा उसकी निगाहें अपनी क्रुर आखों से हम पर पहरा देती रही । अगर वह चाहती तो मुझे मेरे घर नहीं पहुँचा देती ? पर यह सव नहीं किया । अव कहती है कि मैने कोई दुख दिया है ? अगर दुख नहीं दिया तो तुमने मुझे खरीदा क्यों ? जितने में खरीदा उससे पचासों, सौ गुना मेरी जवानी से कमाया । कहती है कि मैने दुख दिया है ? दुख तो इतना दिया है कि अव सात जन्मो तक दुख पीछा नहीं छोडेगा । पर मैं ही कुछ दुसरी मिट्टी से वनी हुँ । मुझे मेरे अनपढ माँ-वाप ने भी दया भाव का संचार किया है । मैं किसी का दुख नहीं देख सकती । मेरी यही कमजोरी कहुँ , खासियत कहुँ तुमारे पास लायी है । उसने प्रकट में कहा -

“ हाँ माँ तुमने मुझे कोई दुख नहीं दिया है । अव उठो यह दवाई खालो । ”

“ हाँ वेटी खिला दो । ” माँ शव्द सुनकर अमीरन का मन खुश हो गया ।

फातिमा ने अमीरन को अपने हाथों से उठाया और दवाई खिला दी । फिर अमीरन ने कहाँ

“ तुम सोचती होगी वेटी कि मैंने तुम्हे इस दुनियाँ में लाकर खडा किया । यह दुनियाँ गलत है । पर एक तरह से मैने उन दरिन्दों से छुटकारा भी दिलाया था । क्या वे दरिन्दे तुम्हे छोड देते ? क्या तुम अपने घर जाने लायक थी ? क्या तुम्हे कोई स्वीकार करता ? तुम तो कुछ दिनों तक उस जीवन को भी देखा है । मैंने तो इसी नर्क में जन्म भी लिया और अव मर भी रही हुँ । तुम यही न सोचती होगी कि मैंने तुम्हे स्वतन्त्र क्यों नहीं किया ? तुम्हारे घर क्यों नही भेज दिया ? तुम दर-दर भटका करती और अन्त में किसी नदी, नाले में मर जाती । लोग हमे गन्दी नाली कहते हैं । पर यह गन्दी नाली नहीं है । हमारा भी अपना समाज है,हमारा भी अपना धर्म है । हम उसी

धर्म में अपना काम करती हैं । वाहर के सभ्य धर्मों का निकास है यहाँ । ”
“ नहीं माँ मैं ऐसा कहाँ सोचती हुँ । मैं उस सभ्यता को थुकती हुँ जो हमें स्वीकार नहीं करती । अगर स्वीकार करती तो हम क्यों पडे रहते ? न तुम पडी रहती, न मैं पडी रहती । अच्छा माँ अव सो जा । ”
“ नहीं वेटी अव हमेशा के लिए सोउंगी । डाक्टर ने मुझे जो वीमारी वताई है उसे सहने के लिए मेरे शरीर में अव शक्ति नहीं वची । लो यह चाभी उस तीजोरी में रुपये पडे हैं उसे सम्भालो । ” फातिमा के माँ कहने पर वह सचमुच गर्व से फुल उठी थी ।
“ चाभी मैं कल लुंगी माँ ”
“ नहीं वेटी यह तो तुझे आज ही लेना पडेगा । कल कौन जानता है ? यह साँस कल रहे न रहे । ”

फतिमा ने चाभी को ले लिया । अमीरन खाँसते-खाँसते विस्तर पर लेटी रही । दम फुल जाने के कारण वह कभी वैठने को कहती । वैठने पर उसका दम फुलना थोडा कम होता । फातिमा इसमें सहारा करती । वह रातभर कहीं नहीं गयी । उसी की सेवा में लगी रही । उसी अमीरन की सेवा में जिसने फातमा के जीवन को नर्क वना दिया था । पर यह कहना भी गलत था । फातिमा के जीवन को तो इस समाज ने नर्क वनाया था । अमीरन तो उसे उस नर्क से उवारा था । माना कि फातमा एक नर्क से दुसरे नर्क में आ गयी थी । पर इस नर्क की यह चहारदिवारी एक तरह से सुरक्षित थी । पुरे हिन्दुस्तान के नर्क में भटकने से अच्छा था लखनउ का वह नरक ।

फातिमा रात भर सोयी नहीं । उसी की खाँट पर सिर टिकाकर सो गयी । कव उसकी आँखें लग गयी पता नहीं । जव

निन्द खुली तो देखा, अमीरनकी आँखें खुली की खुली थी । उसके प्राण उड चुके थे । उस वेश्या के शरीर पर पछाडें खाकर फातिमा तो नहीं रोयी पर उसकी आँखें नम हो गयीं । उसने उसकी दोनों आँखों को बन्द कर दिया । दुनियाँ के सभी हाहाकारों को छुपाकर, सभी अनर्थों को अपने अन्दर जज्व कर काया शान्त हो चुकी थी । लडकियाँ सभी अपने -अपने कमरे में सोयी थी । फातिमा ने सभी को इसकी खवर दी । सभी अमीरन के पास आयी । सभी की आँखें नम हो गयी थीं । कहाँ , किसी को कोई गिला शिकवा था ?

अमीरन की मैयत सजायी गयी । फुलों से सजायी गयी । उन्ही फुलों से जो देवताओं पर भी चढते हैं । उन्ही फुलों से जो वेश्याओं को उपहार दिया जाता था,गजरे सजती थीं । अमीरन की काया क्या देवत्व प्राप्त नहीं कर लिया था ? उस मैयत को लेकर वहाँ की लडकियाँ और वडे गयें । सभ्य समाज के लोग इसे देख रहे थे । पास के कव्रगाह में नमाज अदा करने के वाद उसकी मंटी दे दी गयी । वह मिट्टी में मिल गयी । कव्रगाह की यह मिट्टी चीख-चीख कर सभ्य समाज के मिट्टी के पुतलों से यह कहती रहेगी कि एक दिन तुम भी इसी मिट्टी में आओगे । अमीरन और फातमा के गुनाह क्या हैं ?

११

“ कैसे हैं देवर जी ?”

सुन कर सामसुन्दर वाकस पर सोये हुए था, उठकर वैठ गया । देखा सीता सामने खडी है । वह वहुत वर्षों वाद आयी थी । वह क्यों आयी है ? वह तो अपने मैंके में ही अपना ठिकाना वना लिया है ।

“ नमस्ते भाभी,” कहकर उसके सामने हाथ जोड दिये । ,

,नहीं देवर जी हाथ नहीं जोडिए । मैं उसके लायक नहीं हुँ । ,,

“ ऐसा न कहो भाभी । मैं वहुत लज्जित हुँ । ”
“ लज्जित होने की क्या वात है देवर जी ? ”
“ यही की मैने सामाज के सामने हिम्मत नहीं जुटा सका । उससे विद्रोह नहीं कर सका । मै तुमको .... ”
“ ऐसा नहीं कहिए देवर जी । यह समाज ही ऐसा है । जव पति ही चला गया तव वाकी की मुझे कोई चाह नहीं । वह सव एक निकास निकालने का उपाय था । पर मैं अपने पति की याद में आपको भी झुठी प्रेम देती । अच्छा हुआ जो हुआ । कहिए वाल वच्चें कैसे है ?”

अव सभी के वाल वच्चें हो गये थे । उसने कहा :-
“ सव अच्छें हैं । तुम वोलो कैसे आना हुआ ?”
“ जेठ जी ने नागरिकता दिलवा देने के लिए वुलवा लाये हैं । नहीं नागरिकता मिलेगी तो मेरा हक भी नहीं मिलेगा । ”

अव जाकर समासुन्दर को उसके जेठ की धुर्तता का पता चला । वह धुर्त एवं मक्कार आदमी आखिर उसके प्रति उदार क्यों हो गया है ? उसके घर में रोज दोनों भाइयों में लडाई होने लगी थी । दोनों अपने-अपने वच्चों के मोह में अव परिवार को तोड रहे थे । पर वह अभी टुटने के कगार पर नहीं पहुँचा था । पर उसके जेठ की धुर्तता एवं दुरअंदेशी का वह पता लगा लिया ।

सीता साम के समय वाहर जा रही थी । उसने जाते समय ही रास्ते पर के दरवाजे के सामने की कोठरी में सोये सामसुन्दर को देख लिया था और दरवाजे के भीतर आ गयी थी ।
“ अच्छा तो अव जाओ भाभी । कोई देख लेगा । ”
“ अच्छा तो अभी भी कोई देख लेगा का डर हैं देवर जी ? फिर हिम्मत की वात आप करते है ? ”

भाभी ने पहली वार यह मजाक किया था । यह व्यंग्य उसके भीतर को वेध गया । यह व्यंग्य उसको हिम्मत जुटाने के लिए हो सकता है । पर वह मजवुर था । उसने कहा :-

DO NOT COPY

“ अच्छा भाभी फिर कल वात करेंगे । ”

सीता चली गयी । दुसरे दिन सगुनी ने cdo.कार्यालय में ले जाकर उसे नागरिकता दिलवा दिया । उस अभागन को एक कागज का टुकडा मिल गया । अव उस कागज से अपने पति की सम्पति की मालकिन वनेगी । पर सगुनी से अलग होने की वात नहीं करेगी । सीता ने उसे स्वीकार कर लिया था ।

नागरिकता लेने के वाद वह फिर मैके चली गयी । वहुत वर्षों के वाद वह फिर आयी । उसी तरह वह सामसुन्दर के पास गयी और वोली -

“ तो हिम्मत जुटा लिए देवर जी ? कैसे हैं आप ? ”

इस वार वह भाभी के व्यंग्य वाणों से तार-तार हो गया । उसने आँख उठाकर देखा । क्या यह वही सीता है ? जिसके शरीर पर मक्खी भी फिसल जाती थी ? वह तो वुढी हो गयी है । आँखें धँस गयी हैं । सिर के सभी वाल सफेद हो गये हैं । क्या यह वही सीता है ? जिसके संगमरमरी शरीर पर यौवन का अनोखा फुल खिला था । जिसके स्पर्श मात्र से सामसुन्दर के रोम-रोम तरंगित हो गये थे । हाँ यह तो वही सीता है । पति विहीन सीता असमय में ही वुढी हो गयी है । लोग तो कहते हैं कि जिनके वच्चें नहीं होते उसका शरीर वहुत दिनों तक कसा होता है । पर यहाँ तो ऐसा कुछ भी नहीं था । श्वेत धवल केश,उदास-उदास आखें । पर चेहरे पर अभी झुर्रियाँ नहीं आयी थी । सामसुन्दर अवाक होकर उसके चेहरे की ओर देखने लगा ।

“ घवराइए नहीं देवर जी । अव किसी हिम्मत की कोई जरुरत नहीं । अव सव कुछ स्वच्छ, धवल और सफेद हो गया है । अव कोई रोक नहीं है । मैं अव कहीं भी जाने को स्वतन्त्र हुँ । वैठकर वातें करिए । ”

“ नमस्ते भाभी ” अव जाकर सामसुन्दर का ध्यान भंग हुआ । वह

भाभी से जमीन पर वैठ कर वातें करने लगा। उसकी पत्नी आयी। जलभुन कर चली गयी पर कुछ नहीं वोली। समाज ने उस पर से सभी प्रतिवन्ध हटा लिए थे। अव वह स्वतन्त्र हो गयी थी। अपनी इच्छा से वह कहीं भी जा सकती थी। समाज से प्रतिवन्ध हटने के वाद वह सगुनी के प्रतिवन्ध में वँध जाने वाली थी। वहुत देर तक वातें करने के वाद, गाँव नैहर के सभी कुशल मंगल के वाद सामसुन्दर ने पुछा :

" ठीक है भाभी , अव तुम यह वोलो कि कैसे आना हुआ ? "

" जेठ जी कहते हैं कि मैं उनके लडके को गोद ले लुँ। मैंने भी सोचा कि ठीक है। आखिर वुढापेका साहारा तो किसी को होना ही पडेगा। नागमणि मुझौसा तो मुझे आज तक कुछ गुदाना नहीं। हरदम मारपीट कर खदेडता था। मैं आपसे कहा करती थी सो पुरा हुआ कि नहीं कि मैं इस घर से कहीं नहीं जाउँगी ? लोग कहते थे कि मैं ऐसा कर नहीं सकुँगी। पर देखिये क्या है जीन्दगी में ? वही मेरी ननद अपने ननदोई के साथ भाग गयी है। उसी घर की लडकी भाग गयी और एक वहु ने इस घर की इज्जत रखी। मैं जो कहती थी, वह कर के दिखला दिया।

सामसुन्दर का भी एक वेटा था। वह किस मुख से कहे कि उसका भी एक वेटा है। उसको गोद ले लो। कहने का कोई सवाल ही नहीं था।

" फिर जेठ का लडका भी तो मेरी वहन का ही लडका है। "

सीता अपनी सगी वहन के साथ इस घर में व्याही गयी थी। उसका जेठ उसकी वहन के पति थे। उसके लडके के प्रति उसका मोह होना स्वाभाविक था। सामसुन्दर चुप रहा कुछ नहीं वोला। वोल भी क्या सकता है ? उसने तो सवकुछ देखा है।

" यु ही वैठे रहेंगे या कुछ काम भी करंगे ? "

" खेती गृहस्थी के सिवा एक और काम करता हुँ भाभी। "

“ कौन सा काम ? ”
“ मैं एक राजनीतिक पार्टी में लग गया हुँ । सद्भावना पार्टी, मधेशियों को जगानेवाली पार्टी है । सदियों से ये दवे कुचले लोग जागते ही नहीं । मैं जिल्ला का सदस्य हुँ । ”
“ तो देवर जी, आप राजनीति करने लगे ? मैने नेताओं को देखा है । सव चोर होते हैं । ”
,,नहीं भाभी ऐसी वात नहीं है । सद्भावना पार्टी वही काम करती है जो तुहारे यहाँ महात्मा गाँधी ने किया था । ऐसी वातें मत कहो । ,,
“ अगर महात्मा गांधी जैसा कोई काम करना है तो जरुर किजिए । महात्मा गाँधी,जयप्रकाश,इन्दिरा गाँधी यही तो नेता हैं । इनके जैसा करना है तो ठीक है । ”
“ मैं चाहता हुँ भाभी कि तुम भी इसका सदस्य वन जाओ । महिलाओं की भी इस आन्दोलन में वहुत जरुरत है । तुम्हारे निरुदेश्य जीवन को भी एक उद्देश्य मिल जायेगा । केवल सरोज (उसके जेठ का लडका ,ही तुम्हारा लडका नहीं है । इस भुमी प्रदेश के सभी वच्चे तुम्हारे लडके होंगे । ”
“ वाह देवर जी, आप तो वहुत वडे नेता हो गये हैं । वैसे मेरे तो सभी लडके हैं । मैं पार्टी में रहुँ या न रहुँ । वे सव मेरे लडके हैं ही । पर उनमें से कोई मेरा सहारा नहीं होगा । उनमें से एक को तो चुनने की स्वतन्त्रता दीजिए । मैं सरोज को अपना लडका वनाउँगी । ,,

सामसुन्दर ने कोई उत्तर नहीं दिया । वह क्या उत्तर दे ? वह एक महान औरत ही नहीं , एक महान माँ भी सावित हो गयी थी । वे लोग वातें करते हुए दरवाजे पर आ गये । एक दुसरे से अलग होने से पहले सीता ने कहा -
“ हाँ तो देवर जी , पति की यादों में तो मैने जीवन काट ली । परन्तु उनको देखने का वहुत मन करता है । उनका कोई फोटो

DO NOT COPY

होता तो उस फोटो को अपने पास रखती और देखती । पर उस जमाने में कोई फोटो ही खिचनेका चलन नहीं था घरों में । न शादी में, न व्याह में लेते थे लोग । मैं इस वार सोचकर आयी हुँ कि मैं इस वात को आपसे कहुँगी । ”

आजकल तो लोग मोवाइल में ही फोटो खिच लेते हैं । उस समय नेपाल में इसकी चर्चा तक नहीं थी । उस समय फोटो खिचवाने का रिवाज भी नहीं था । लोग मरते और उसकी यादों के सिवा सव कुछ मर जाता था । लेकिन अव यह औरतको दुसरों के फोटो को देख कर अपने पति के फोटो की याद आयी थी ।

“ अच्छा भाभी, आपको रामचन्दर का फोटो चाहिए ? उसका कहीं कोई फोटो नहीं मिला । पर एक जगह वह मिल गया अचानक । ”

“ कहाँ मिल गया भाई आप उस जगह का नाम वताइए ? मैं दुनियाँ की कीसी भी जगह से उसको प्राप्त कर लुँगी । ” वह इतनी वेचैन एवं वेताव हो गयी कि देखते वनता था । जैसे अंधे को आँख मिल गया था ।

“ भाभी रामचन्दर मेरा भाई ही नहीं मेरा सहपाठी भी था । मैं भी उसका फोटो ढुढा करता था । एक दिन मैं पिपरा मठ की आरती में गया । आरती के वाद वहाँ दिवाल पर टँगे सभी महन्थों का फोटो देखने लगा । अयोध्या से आये वावा का शिष्य मुझे सव दिखला रहे थे । उनका गुरु मेरे पिता जी से यहाँ भी आकर मिलते थे । मैने राघव दास के महन्थयी का फोटो देखा । उसमें स्कुल के सभी विद्यार्थी शरीक हुए थे । मैं शरीक नही हुआ क्योंकि दुसरे दिन परीक्षा थी । फर्स्ट मारने की धुन में पढाई छोड कर नहीं गया । पर रामचन्दर शामिल होने गया था जिसका फोटो उसमें है । सभी विद्यार्थीयों के साथ उसका भी फोटो है । पुरे शरीर का फोटो नहीं है । केवल चेहरे और शिर का फोटो है । ”

“ तो आपने उस फोटो को लाया क्यों नहीं ? ”

DO NOT COPY

“ किसी दिन लाउँगा, यही सोचता रहा पर ला न सका । तुमने याद दिलाया तो याद आया । ”

अव तो सिता की प्रसन्नता का ओर छोर नहीं था । वह जीवन में पहली वार दिल से खुश हुई थी ।

दुसरे दिन उसे सरोज को गोद लेना था । कलैया में उसकी प्रक्रिया पुरी करनी थी । उसने अपनी वहन से कह कर एक दिन के लिए प्रोग्राम कैंसील करवा दिया । उसकी वहन भी उसकी वात मान गयी । उस वहन ने अपने वेटे के मोह में सव कुछ स्वीकार कर लिया जवकि कभी यह नहीं लगता था कि वह उसकी सगी वहन है । वह आज उसकी वास्तविक सगी वहन हो गयी थी ।

दुसरे दिन सीता पीपरा मठ में गयी और आरती में शामिल हुई । वहाँ औरतों को अव आरती में शामिल होने की पावन्दी नहीं थी । महन्थ रामकिसुन दास या उससे पहले औरत पर पावन्दी थी । अव सीता निडर हो गयी थी । समाज ने उसपर से पावंदी हटा ली थी । उसने अयोध्या के वावा का पता लगाया । उनके सहयोग से वह उस फोटो को उतरवा लिया । वावा से उसने वहुत आरजु मिन्नत की कि वावा उसे वह फोटो दे दें । परन्तु वावा ने उसे वह फोटो नहीं दिया । सीता वावा के पैरों पर सास्टांग दण्डवत की मुद्रा में लेट गयी और कहा वावा इसमें मेरे पति का फोटो है । संसार में कहीं उनका फोटो नहीं मीला । मैं एक विधवा औरत हुँ । मुझे उनका फोटो चाहिए । मैं आपको यह फिर लाकर दे दुँगी इसी तरह ।

अपने चरणों पर पडे एक विधवा औरत की वात से वावा पिघल गये । उन्होने दो दिनों के लिए उसे ले जाने की अनुमति दे दी । वह वडी खुशी से घर लौटी । उसने उस फोटो को सामसुन्दर को थमाकर वोला ।

“ आप तो अपने सहपाठी का फोटो नहीं ला सके पर मैंने ला दिया

DO NOT COPY

है । अव इसे लेकर वीरगंज से इसे वडा वनवाकर लाइए । जव तक आप नहीं आइएगा तव तक मैं कहीं नहीं जाउागी । ”

“ इसे इमर्जेन्सी में देने पर भी एक दिन तो लग ही जायेगा भाभी । ”

“ लग जायेगा तो क्या हुआ ? जितने पैसे लगेंगे मैं दुंगी । ”

भाभी को तो लगता था जैसे उसका पति जिन्दा हो गया हैं । उसकी आँखें ऐसे चहकने लगी जैसे कोई एहवात लडकी हो । जैसे किसी मृग को कस्तुरी मिल गया हो । उसके श्वेत सफेद वाल सिर पर लहराने लगे थें । सामसुन्दर को उसी क्षण सव काम छोडकर वीरगंज जाना पडा । वह भाई स्टुडियो में गया और फोटो का औैर्डर दे आया । उसने सीता को वताया कि फोटो कल वारह वजे से पहले नहीं मिल सकता । सीता ठीक है कहकर चली गयी ।

दुसरे दिन भी सरोज की गोद लेने की प्रक्रिया स्थगित हो गयी । अव उसकी वहन को लगा कि वहन नखरा कर रही है । कहीं कोई कुछ सीखा तो नहीं रहा हैं ? पर कुछ वोली नहीं । उस दिन वारह वजे वह फिर पिपरा मठ में गयी । उस फोटो को दे आयी । वह फोटो मठ पर उसी तरह लगा दिया गया । वह फोटो आज भी लगा हुआ हैं । पिपरा मठ उजड गया, ध्वस्त हो गया । सभी गरिमा समाप्त हो गयी पर महन्थों के फोटो आज भी ज्यों के त्यों लगे हुए हैं । उनके खडाउओं की जोडी आज भी ज्यों की त्यों दारवाजे के एक ओर रखे हुए हैं । आरती पुजा उनकी आज भी होती है । यही उस उजडे हुए शानदार अस्तित्व की कहानी कहते है ।

सीता ने देवर के द्वारा लाये गये उस वडे फोटो को लाया । उसमें से अपने पति के फोटो को वडी वारीकी से काट लिया । उस फोटो को फिर ले जाकर उसमें फ्रेम लगवा लाने को कहा । सामसुन्दर ने वैसा ही किया । उसका वहुत छोटा रुप भी वनवा लाया । एक अपने पास रखा और दुसरा सीता को दे दिया । सीता ने

DO NOT COPY

उस फोटो को पहले अपने सिने से लगाया, फिर छाती से लगाया, फिर माथे से लगाया, फिर छाती से लगा कर पेटी में रखकर जतन से वन्द कर दिया । सामसुन्दर ने उसे शिशे में मढवाकर लाया था । वाद में छोटे से फोटो सीता ने एक तावीज में मढकर अपने गले में पहनने लगी । उसकी पेटी में पहले ताला नहीं लगता था, अव उसमें ताला लगने लगा । अव मानो उस पेटी में संसार भर का खाजाना जमा हो गया था । उसे उस खजाने की चोरी हो जाने का डर हो गया ।

यह थी रामचन्दर की सीता, विधवा सीता । वह पिपरा मठ में वावा को जिस दिन फोटो लौटाने गयी थी उसी दिन उस वावा से कंठी लेकर साध्वी भी हो गयी थी । अव उसके जीवन में एक और अध्याय जुट गया था । साध्वी होना । साधवी नहीं साध्वी । श्वेत वालों वाली साध्वी ।

तव जाकर कहीं उसने सरोज को गोद लिया था । अव उसके जेठ एवं उसकी वडी वहन का पुत्र उसका दत्तक पुत्र हो गया था । अव वह सीता के वाद उसकी सम्पति का कानुनी अधिकारी हो गया था । इस प्रक्रिया के पुरी हो जाने पर वह फिर अपने मैके चली गयी । उसके कुत्ते एवं गाय में एक और साथी आ गया । उसके पति का फोटो । उसने अपने पति के फोटो को सवसे उपर लगाया । वह रोज उस फोटो की आरती करती , धुप अगरवती करती । अव वही उसका भगवान हो गया था । वह अपनी गाय को चारा खिलाती, अपने कुत्ते के साथ खेतों मे आती जाती । वह फोटो अव उसका सव कुछ था । आज की लडकियाँ उसको कितना दाकियानुस समझेंगी । पर उसने तो ऐसा किया । वह महान है या आज की लडकियाँ महान हैं इसका विश्लेषण कौन करेगा ? आज की लडकियाँ ठीक हैं अपने विचारों में पर महान नहीं हैं । आज की लडकियों ने अपने खुद के संसार को फिर से वसा लेने की स्वतन्त्रता तो प्राप्त कर ली है

और यह ठीक भी है । पर वह लैला मजनु, श्री फरहाद, सीता और सावित्री जैसा इतिहास नहीं रच सकती । वह सव अव खो चुका है ।

सीता पर से अव कहीं आने जाने का प्रतिवन्ध हट गया था । अव वह सभी तीरथ, धाम घुमना चाहती थी । कई तीरथों का उसने भ्रमण भी कर लिया । अव वह जो भी हो सुख से ही रह रही थी । सामसुन्दर ने अव उसे अपने सद्भावना पार्टी का महिला सदस्य वना लिया था । पर वह फिर मैके चली गयी ।

ए ए ए

सरोज को गोद ले लेने के वाद अव नागमणि और सगुनी में रोज-रोज महाभारत होने लगा । उनके वच्चे वडे होने लगे थे । सगुनी का मिसन पुरा हो चुका था । अव वह पत्नी को इतना मारता नहीं था । पहले नागमणि के कहने पर अपनी पत्नी को वुरी तरह पीट देता था । अव उसका वेटा भी वडा होने लगा था । नागमणि की वीवी छोटी होकर भी मालकिन थी । नागमणि के पिता ने उसको मालकिन वना दिया था । जेठ होती हुई भी सीता को वर्तन साफ करना पडता था । अव उसकी वहन करती थी । पर वह भी अव मालकिन वनना चाहती थी । रोज-रोज का वखेडा अव नागमणि के वेटे को भी नहीं देखा जाता था । वह इस महाभारत से तंग आकर अपने पिता से अलग हो जाने को कहता । एक दिन यह अलगाव हो ही गया । वँटवारे के नियम के अनुसार सीता का भी वरावर का हक वनता था । नागमणि इस वात को जानता था कि अलग होने के वाद सीता तो अपनी वडी वहन में ही रहेगी । अतः सम्पति का दो तिहाई भाग स्वतः सगुनी का होगा । परन्तु उसे संतोष था । वह कहता था कि कोई वात नहीं वह क्या कर सकता है ? वह विधवा और उसकी किसी चीज से मतलव नहीं रखता था । परन्तु उसे आशा थी कि सीता मरने से पहले कुछ जरुर देगी । अव वे दोनों अलग हो गये । केवल कानुनी प्रकिया पुरी करनी थी ।

परन्तु अभी प्रक्रिया पुरी होने से पहले ही सीता के ससुर का स्वास्थ्य खराव हो गया । ऐसी अवस्था में क्या होगा क्या नहीं ? वँटवारा होने का काम रुक गया । उसकी सास तो एक नम्बर की झगडालु औरत थी जिसको देहातों में कराक्सीन औरत कहते हैं । वह अपने पति की दुसरी पत्नी थी । वह अपने पति के विमार होने पर भी उनकी सेवा नहीं करती थी । वह वडे घराने की लडकी थी । उसको गंदगी से वडी चीढ थी । उसका पति विस्तर पर पड गये थे । वे धीरे-धीरे मृत्युश्य्या पर जाने लगे । अव पैखाना, पेशाव कराना पडता था । सीता की सास उनके पास खाना रख देती और नाक दाव कर चली आती । वैसे ही नाक दाव कर थाल को उठा ले जाती । ऐसी हालते में सीता को वुलाया गया उनकी सेवा करने के लिए । इस गंदगी को साफ करने का काम केवल सीता कर सकती है और कौन कर सकता है ? एक दिन :

“ कैसे हैं देवर जी ? ” फिर वही सवाल । सामसुन्दर ने पलट कर देखा । अव सीता और अधिक प्रौढ हो गयी थी ।

“ ठीक है भाभी, पर अव कोई व्यंग्य मत करना । ”

“ अरे आप तो उसी वात को ढो रहे हैं । मैने तो मजाक किया था । एक आप ही तो हैं जिससे एक मजाक कर दिया । आप ने तो उसे लगता है तीर की तरह चुभा लिया है ।

“ नहीं नहीं भाभी तीर की तरह मैने नहीं चुभाया है । मैं आप से शर्मिन्दा हुँ । ”

“ नहीं आपने इसे अलग समझा है । आपने इसका दुख माना है । आप मेरे सर पर हाथ रख कर वोलिए कि आप शर्मिन्दा नहीं हैं । तभी मैं यहाँ से जाउँगी । अरे मैंने तो एक चींटी का मन भी नहीं दुखाया । फिर भी मुझे वैधव्य का पहाड ढोना पड रहा है । आपका मन दुखाकर मैं और किस गर्त में पडुंगी ? नहीं आप वोलिए कि मेरी वातों से आपको कोई दुख नहीं है । मेरे शिर पर हाथ रखिये । ”

अव सामसुन्दर उस देवी को क्या जवाव दे ? वह तो महानता का शिखर है । मुझे कोई दुख नहीं होना चाहिए । यह कैसी औरत है ? स्वयं अपने आपसे शर्मिन्दा हुँ, अपने आप में गडे चला जा रहा हुँ । मैंने क्यों कोई विद्रोह नहीं किया ? सामसुन्दर रुआँसा हो गया । वह उस महानता का पैर छुना चाहता था पर उसने सर पर हाथ रखने को कह दिया । वह रुआँसा होकर सीता के सर पर हाथ रखा कर वोला -

" नहीं भाभी, मुझे कोई दुख नहीं है । "

" अरे आप तो रो रहे हैं । क्या मैने फिर आपका दिल दुखाया ? "

सामसुन्दर ने उसके सीने में मुँह छुपा लिया

" भाभी अव रहने भी दो । अव भगवान के लिए चुप हो जा । कलेजा वाहर न हो जाय । "

सीता अपने देवर के वालों को सहलाती रही मानों कोई माँ अपने पुत्र को सिने से लगाकर उसें दुलार रही हो । इस कमजोर पुरुष की वह माँ वन गयी थी । फिर दोनों संयत होकर वतियाने लगे ।

" इस वार कैसे आना हुआ भाभी ? विना किसी अवसर के तो वे लोग वुलाते नहीं हैं । "

" हाँ इस वार भी अवसर ही है देवर जी । विना अवसर मैं इस वार भी नहीं आयी हुँ । "

" वह क्या ? "

" आपके काका सख्त विमार हैं । "

" तो क्या ?

, सास को गंदगी से नफरत है । "

" तो क्या तुम उनकी गंदगी साफ करने आयी है ? "

" नहीं देवर जी, ऐसा नहीं कहते । मैं उनकी सेवा करने आयी हुँ । "

" उसी ससुर की सेवा जिसने तुम्हारे सामने वैधव्य का पहाड लाकर

DO NOT COPY

खडा कर दिया ? अगर वे चाहते तो नागमणि से तुम्हारी शादी नहीं कर देते ? ”

“ जाने दीजिए उसे । अव वह सवकुछ वीत गया । यह अगम वैधव्य भी मेरे भाग्य में लिखा था । क्यों किसको दोष दुँ ? ईश्वर को यही मंजुर था । कोई वात नहीं । उन लोगों की अच्छाई-वुराई उनके साथ, मेरी अच्छाई-वुराई मेरे साथ । इस संसार से क्या लेकर जाना है ? यह तन तो मिट्टी हो जायेगी । कुछ तो हो जिसे लोग याद रखे । आप भी याद रखे । ”

सामसुन्दर ने भाभी की ठोढी पकड कर उपर उठाया और उसकी आँखों में देखा । उनमें आँसु उमड पडे थे । उसने उन आँसुओं को अपने हाथों से पोछा । आज दोनों एक साथ उस घर में आये । फिर भी किसी को कोई एतराज नहीं था । वे सरोज के गोद ले लेने पर निश्चित तो थे फिर भी उनके मन में शंका-उपशंका वनी रहती थी ।

जिस ससुर ने सीता को वैधव्य का जीवन जीने के लिए छोड ही नहीं दिया था वल्कि उस मर्दमारी का मुँह भी देखना नहीं चाहते थे वह उन्ही की सेवा में तल्लीन थी । कहाँ थी उनकी और वहुएँ ? कहाँ थी उनकी अपनी पत्नी ? नाक दावकर उनके पास से चली जाती थी । सीता के आने पर लोगों ने राहत की साँस ली थी । अव सव कुछ सीता करती है । उनके वचने की आशा अव क्षीण हो गयी थी । अव उस शरीर में कोई सेवा काम नहीं कर सकती थी । वस उनके विस्तर, घर साफ सुघर रहे यही वहुत था । एक दिन उन्होने सीता को अपने पास वुलाकर कहा :-

“ सीता ”

“ जी पिता जी ”

“ मुझे माफ कर दो ”

“ कैसा माफ ? ”

DO NOT COPY

" यही कि मैने तुम्हारे साथ अन्याय किया । "
" तो क्या जो अन्याय हुआ है उसे आप स्वीकार करते है ? "
" हाँ वेटी मैने अन्याय ही नहीं किया है वल्कि वहुत महापाप किया है । "
" अपके महापाप को ईश्वर माफ करेंगे । मैं कौन हुँ माफ करने वाली ? " सीता विफर उठी पर दुसरे ही क्षण सहज हो गयी । उस समय वह उनको वहुत जली-कटी सुना डालना चाहती थी । पर उसने ऐसा कुछ नहीं किया । नारी सुलभ सहनशीलता उसके अन्दर कुट-कुट कर भरी थी । उसके ससुर ने फिर कहा -
" नहीं वेटी, ईश्वर पर इसे मत छोडो । तुम वोलो कि माफ कर दिया तो ईश्वर भी माफ कर देंगे । नहीं तो वे भी माफ नहीं करेंगे । फिर से तुम्हारे दरवार में भेज देंगे । मुझे मुक्ति नहीं मिलेगी । जव तुम नहीं थी तो मैं तुम्हे ढुंढा करता था । ये वहुएँ एवं स्वयंम मेरी पत्नी मुझसे दुर-दुर रहती हैं । मैंने वुलाने को कहा तो तुम्हे वुला लाये हैं । "

सीता ने सोचा कि अव इस समय मैं इन्हे क्षमा नहीं करुँगी तो इनकी आत्मा भटकती फिरेगी । इतना ज्ञान इन्हे भगवान ने पहले क्यों नहीं दिया ? जव आदमी अपनी गलती स्वीकार कर लेता है तव उस आत्मा को शान्त चित्त होकर कलेवर त्यागना चाहिए । वह अपनी शान्ति का मार्ग ढुढ रही है । अव मैंने ना किया तो अनर्थ हो जायेगा । वह अपने ससुर के और पास गयी और वोली -
" मैने माफ किया वावु जी । अव शान्त हो जाइए "
" ठीक है, अव तुम मेरा कहा सुना सव माफ करना । "
सीता ने उस जाती हुई आत्मा की ईच्छा पुर्ति के लिए और कुछ पुछना चाहा -
" वावु जी वोलिए आपकी और क्या ईच्छा है ? क्या खाना वना कर ले आउँ ? "

DO NOT COPY

" हाँ मेरा मन थोडा माँस भात खाने को करता है । "

अव यह हद हो गयी । एक क्षण पहले जीवन के कटु सत्य को समझने वाला आदमी तुरत यह क्या कह रहा हैं ? माँस भात खाने का मन करता है । क्या जो आदमी निरामिष होता है वह ऐसा ही हो जाता है ? उन्होने वुढापा आने के वाद माँस-मछली खाना छोड दिया था । जवानी में वहुत माँस-मछली खाते थे । अव वह मरने के समय जोर पकडा है । सव कुछ भुलकर माँस याद आ रहा हैं । नहीं नहीं यह ठीक नहीं होगा । ये भ्रष्ट हो जायेंगे । फिर सीता ने सोचा कि अगर यही इनकी ईच्छा है और अगर यह ईच्छा पुरी नहीं हो तो फिर इनकी आत्मा भटकती फिरेगी । वह वोली -

" ठीक है पिता जी । मैं जाती हुँ माँस वनाने आप स्थिर रहिए । "

फिर यह वात उसने वहन को सुनायी । एक आदमी आनन फानन में वाजार गया और माँस लेकर आया । माँस-भात वनाकर सीता उनके पास ले गयी और वोली -

" लीजिए पिता जी माँस भात खाइए । "

उसने उन्हे अपनी गोद में उठाकर माँस भात का एक कौर डाल दिया । वे एक कौर खा गये । दुसरा कौर खाने से पहले ही उनकी गर्दन सीता के हाथों में झुल गयी । उनकी आत्मा माँस-भात से तृप्त होकर आराम से चली गयी । उनकी गर्दन उसी सीता के हाथों में झुली जिसने उसे वैधव्य का महा शुन्य सौंपा था । उनकी शुन्य आत्मा उसी महाश्वेता के हाथों में शुन्य में विलीन हो गयी) उस समय न उनकी पत्नी , न उनकी दुसरी वहु न उनके और कोई वहाँ था । केवल सीता वहाँ थी ।

जव पता चला तो घर में रोना धोना शुरु हुआ । कफन वगैरह लाये गये और उनका दाह संस्कार किया गया । जेठ ने किया लिया । अव वँटवारे का काम कुछ दिनों के लिए वन्द हो गया । लडाई-झगडे भी अभी वन्द थे । सीताको इसे पुरा करना था । उसमें

वहुत दिन लगेंगे । सामसुन्दर ने उसे सद्‌भावना के कितने ही कार्यक्रमों में ले गया । वहुत से नेताओं से भेंट भी कराया । एक महिला सदस्य के रुप में वह उसे पार्टी में सक्रिय देखना चाहता था । पर उसे उन सव में कोई मन नहीं लगता था । उसने वहुत अत्याचार देखे थे और अभी इन अत्याचारों में कोई कमी नहीं होगा वह यह जानती थी । कोई राजनीति अभी तक औरत को समाज में स्थापित नहीं कर सका ।

पिता के मरने के वाद अव भाइयों में युद्ध विराम हो गया था । किसी दिन तो यह हो ही जाएगा । जव सीता ने सरोज को गोद ले लिया तो हमारा काम पुरा हो गया । पहले एक साथ थोडी सम्पति और वढा ली जाये । सगुनी अव खामोश रहता पर औरतें झगडती थी । वर्तन साफ करने, झार-वहार, खाना वनाने आदि का सव काम सीता ही करती अभी तक ।

एक दिन वह पुनःमैके चली गयी ।

-o-

१२

कार्तिक पुर्णिमा का गंगा स्नान

स्नान करने के वाद उसने सुर्य भगवान को जल दिया और वह कपडे वदलने लगी । कपडे वदलने के समय वह इधर उधर देखती और कपडे लगाती रही । उसके एक ओर एक नाव खडी थी । नाव उस पार से आकर इस पार लगी थी । वह इस पार स्नान करने आयी थी । नाँव में एक औरत को वह गौर से देखने लगी । उसके मन में तो वचपन के दृष्य थे । वह वचपन, वह जावनी, वे काले केश, वे मृगनयनी आँखें वहाँ नहीं थी । कल्पना की जवानी की कोई तस्वीर नहीं थी । उसको मालुम नहीं कि उसके खुद के केश भी श्वेताम्य हो गये थे । उधर भी ऐसा ही हाल होगा । तव उसको समझ में आया । वह उसके और समीप गयी और उसे पहचान गयी

DO NOT COPY

।

,, सवितरी ? ,,

सवितरी ने पलट कर देखा यह कौन मेरे वचपन का नाम लेकर वुला रहा है ? उसने वुलाने वाली की ओर पलट कर देखा । वह नौका विहार करती हुई उस पार से इस पार आ गयी थी । वह ठिठकी हुई सी वुलाने वाली की ओर देखने लगी । पहचानने में देर लग गयी । गँगा में जितना पानी वह चुका था उनके शरीर में भी उतना पानी वह चुका था । उफनती जवानी अव निश्छल एवं शान्त हो चुकी थी । उधर गंगा भी शान्त, निर्मल और साफ थी । उसमे वर्षाकालीन वाढ के उमडते-घुमडते गँदले पानी का ज्वार नहीं था । वह पहचान गयी और वोली -

“ तुम सीता तुम ? ”

“ हाँ सावित्री, मैं वही वचपन की तुम्हारी सीता हुँ । ”

फिर तो जैसे गंगा मे वर्षाकालिन वाढ का ज्वार उमड गया । दोनों सखियों की आँखों में आँसुओं की वाढ आ गयी । दोनों एक दुसरे के गले में जो लिपटी तो चुप होने का नाम नहीं । दोनों रोकर अपने मन का भार हल्का कर रही थी । वहुत देर के वाद दोनों चुप हुई । अगल-वगल के लोग देख रहे थे पर ऐसे अवसरों पर दो विछुडे हुए की मुलाकातें होती रहती हैं । इसमें गाँव के मेले-ठेले आदि कहीं भी औरतें रोने से परहेज नहीं करती । यह चलन है, रिवाज है गावों में । इसमें कोई वुरा नहीं मानता । हाँ शहरों में मिलने पर वे केवल गले से गले मिल लेती हैं, रोती नहीं । शहर के लोग इसे असभ्य मानते हैं ।

कार्तिक पुणिमा का दिन था । इस तरह दोनों सखियों का मिलन हुआ था । इस दिन त्रिवेणी, गंगा, हरिद्धार,गाँव, शहर सभी जगह लोग कहीं न कहीं स्नान करने जाते हैं । अपनी आस्था को पुरा करते हैं । सीता भी गंगा स्नान करने गयी थी । वह पटना की

DO NOT COPY

सीढियों में न जाकर इसी पार की रेतीले घाट पर स्नान में शामिल हुई थी । इसके साथ उसका भतीजा था । अपने कुते को वह घर पर छोड कर कहीं जाती थी । पुरा गंगा तट इस पार भी उस पार भी लोगों से भरा हुआ था ।

वहीं वालु की रेत पर दोनों सखियाँ वैठ गयीं और वतियाने लगी । अपने जीवन के सुख-दुख को आज तक खुलकर किसी से कहने का मौका दोनों को नहीं मिला था ।

“ हाँ तो सवितरी, तुम इतने दिनों कहाँ रही ? कैसे आयी यहाँ ?”

“ पहले तुम कहो सीता तु कैसी हो ? गाँव घर के लोग कैसे है ? तुम्हारे माँग मे सिन्दुर नहीं है ?

“ मांग में सिन्दुर तो तुम्हारे भी नहीं है । पहले तुम वताओ । मैं तो अपने गाँव ,घर, समाज में जैसे भी रही हुँ । पर तुम गाँव से विछड कर कहाँ रही यह वताओ ? लोग तो कहते हैं कि तुम मर खप गयी । ”

“ मैं मर-खप ही तो गयी हुँ सीता । मैं अव जिन्दा कहाँ हुँ । यह तो एक नरक ढो रही हुँ मरने के लिए । मन नहीं लगा तो कहा कि गंगा में स्नान कर आँउ । वचपन की स्मृति कहाँ जाती है मन से ? ”

“ नरक तो मैं भी भोग रही हुँ । उस दिन धर्मिनिया स्टेन से दोनों चली । मैं अपने कुत्ते के साथ खेलती, कुदती हुई दुर चली गयी । साँझ हो चली थी । पीछे मुडकर देखा तो तुम नहीं हो । चारों ओर देखा । कुहरा घिरा हुआ था । मुडकर वापस भी आयी पर तुम कहीं नजर नहीं आयी । शाम समय को मुझे डर लगता है । मैं जल्दी घर गयी और अपने माँ-वाप से कहा । वे लोग धर्मिनियाँ गये पर खाली हाथ वापस आ गये । अव तक रात हो चुकी थी । सभी लोग रात भर खोजते रहे पर कुछ पता नहीं चला । सुवह पुलिस को खवर की गयी । पर पुलिस तो पुलिस है न पैसे का भुखिया ? तुम्हारे पिता के पास पैसे कहाँ थे ? पुलिस ने कुछ नहीं किया । वहुत दिनों तक खोज

तलाश करने के वाद लोग हार गये । अगल-वगल के गाँव, तुम्हारे नाते रिस्तेदार , सभी जगह खोजा गया । तुम कहीं न मिली । फिर लोग नियति मानकर वैठ गये । कुछ लोग तो ताने भी कसने लगे कि तुम किसी यार के साथ भाग गयी । परन्तु मैं जानती हुँ कि तुम्हारा कोई प्रेमी था ही नहीं । लोग कहते कि मुझे मालुम नहीं कोई न कोई होगा । ”

“ अव कैसे हैं मेरे वाप ? ”

“ कैसे होगे क्या । १० वर्षों के अन्दर दोनों इस दुनियाँ से चले गये । पहले तुम्हारी माँ गयी फिर एक वर्ष होते न होते तुम्हारे पिता भी उठ गये । अपनी एकलौती वेटी का गम वे वर्दाश नहीं कर सके । तुम्हारे ससुराल के लोगों ने सुना तो वे चुप हो गये । उनको भला विना , दोंगा हुए लडकी से क्या मतलव ? ”

सीता से माँ-वाप की खवर सुनकर सावितरी रो पडी । वह समझती थी कि वे लोग वहुत वुढे हो गये होंगे । मैं उनसे मिलने जाउँगी । पर अव किससे मिलने जाउँगी ? उसके वाद की एक पीढी भी जवान हो गयी होगी । मेरा भाई भी नहीं है । कौन पहचानेगा मुझे ? उसने सीता से पुछा फिर क्या हुआ ?

“ फिर क्या होगा ? तुम्हारे पट्टीदारों ने उनका काम किया किया । कोई वारिस नहीं होने पर तुम्हारी जो जमीन थी १० कट्ठा, वह तुम्हारे चाचा की हो गयी । अच्छा अव वोलो अपने वारे में । ,,

“ नहीं सीता , पहले तुम खतम कर लो । फिर वताउँगी समय नहीं मिलेगा तो पटना में चलकर आज रात वही रहेंगे । ”

“ मेरे वारे में तो तुम देख ही रही हो । माँग मे सिन्दुर नहीं है । भगवान ने मेरा माँग उसी समय सुना कर दिया । गौना होकर गयी और मेरे पति का देहान्त हो गया । उनके साथ किसी प्रकार का सुख नहीं भोग सका । एक वच्चा भी हो जाता तो वहुत सहारा होता । पर भगवान ने मेरे सहारे छीन लिए । तव से मैं वैधव्य ढो रही हुँ ।

DO NOT COPY

”

“ पर तुम इस वैधव्य को क्यों ढो रही हो ? मैं तुम्हारे माँग में सिन्दुर नहीं देख कर समझ गयी थी । मर्द तो यह वैधव्य नहीं ढोते । मर्द सारे हरामजादे होते हैं । तो हम क्यों वैधव्य को ढोती फिरे ? ”

“ चुप , सीता ने उसके होठों पर हाथ रख दिये । ऐसा नहीं कहते । मर्द अगर सव वैसे ही होते हैं तो फिर तुम दुसरे मर्द के पास जाने के लिये क्यों कहती हो ? मर्द अगर हरामजादे होते हैं तो क्या मैं किसी औरत के साथ भाग जाती ? हमें तो उन्ही मर्दों मे से किसी को चुनना पडेगा । फिर तुम जो कहती हो वह हमेशा सत्य नहीं होता । ”

सावित्री ने कुछ नहीं कहा । उसको अव तक हुये लोगोँ के व्यवहार ने उसको ऐसा कहने के लिए प्रेरित किया था । उसे पता नहीं कि सीता की अपनी अलग दुनियाँ थी । उस दुनियाँ और सावित्री की दुनियाँ में कोई मेल नहीं था ।

“ खैर छोडो । अव तुम अपना बताऔ । ” सीता ने सावित्री की चुप्पी तोडी ।

“ मैं क्या वताउँ ? इसी दुनियाँ में हुँ । हिन्दुस्तान में ही हुँ । उस दिन चार लोगों ने मुझे पकड लिया । मेरा मुँह वन्द कर, हाथ पैर पकड एक जगह गाडी में ले जाकर डाल दिया । मेरे हाथ पैर वाँध दिये और मेरे मुँह में कपडे ठुस दिये गये । फिर वे वहाँ से कहाँ से कहाँ ले गये मुझे नहीं मालुम । भुलावना पकड लिया । पुरव कौन, पश्चिम कौन, उत्तर कौन , दक्षिण कौन कुछ जान नहीं पडता था । मेरा गाँव किधर है ? मैं एक कमरे में वन्द हो गयी । फिर उन लोगों ने मेरा शील भंग कर दिया । महीनों तक मेरा वलात्कार होता रहा । मैं सोचती कि कोई मुझे वचाने आयेगा । पर कोई नहीं आया । फिर एक दिन एक दाढी वाला आदमी आया और मुझे उनलोगोँ के साथ जाना पडा । वे लोग फिस्तौल दिखा कर मुझे वोलने पर जान से

मार देने की धमकी देते । जान प्यारी होती है । मैं डर गयी । फिर मुझे एक वहुत वडे शहर में ले जाया गया । मुझे वताया गया कि यह लखनउ है । फिर हमें एक गली में ले जाकर मुझे एक औरत को सुपुर्द कर वे लोग चले गये । वह औरत मुझे लाड - प्यार से घर के अन्दर ले गयी । उसने कहाँ कि यहाँ तुम्हे कोई तकलीफ नहीं होगी । तुमको जो जरुरत हो माँग लेना । मैं क्या माँगती ? मैने उस औरत से कहा कि वह मुझे घर पहुँचा दे । वदमासों ने मुझे यहाँ उठाकर लाया है । "

सीता ने उसका हाथ पकड लिया और कहा

" तुम वहाँ से भाग क्यों नही गयी ? "

" भागना इतना आसान नहीं होता है सीता , औरत के लिए इतना आसान नहीं होता । भाग कर वह जाये कहाँ ? भागकर वह जाये कैसे ? मुझे तो पुरव पश्चिम किसी दिशा का भान नहीं होता था । मैं वहा से भाग नहीं सकती थी । मुझपर कडा पहरा था । उस औरत ने कहा कि अव यही तुम्हारा घर है । यहाँ से भागने की कोशिश मत करना । यह वदनाम गली है । यहाँ औरतें वेंची और खरीदी जाती हैं । मैने तुम्हे ५० हजार में खरीदा है "

सीता अव और उत्सुक्ता से उसकी वातें सुनने लगी । सावित्री वोलती गयी ।

" उस औरत ने कहा कि अगर तुम ठीक से रहो तो तुम्हे सव सुख सुविधा उपलव्ध कराये जायेंगे । नहीं तो भागना तो क्या दिया जायेगा , जान से भी मारा जा सकता है । उसने शाम को महफिल में नाचने वाली लडकियों को दिखाकर कहा- यही तुम्हारी जिन्दगी है । नाचो , गाओ और जीवन का मौज करो । अन्यथा मैं .... । वह वीच में ही चुप हो गयी । "

" फिर ? "

" फिर क्या ? मैं समझ गयी कि मैं लखनउ के वेश्यालय में महुँच

DO NOT COPY

गयी हुँ । अव यहाँ से मैं कहीं नहीं भाग सकती । वहाँ से परिन्दा भी पर नहीं मार सकता था । मैने वुझे हुए दिल से सव स्वीकार किया ।

दुसरे दिन से मुझे नाचने गाने का काम सिखाया जाने लगा । मेरा नाम वदल कर फातिमा रखा गया । उस औरत का नाम अमीरन था । मैं गाँव की गँवारिन, सव सिखने में मुझे वहुत समय लगा । पर अव मैंने उस जीवन को स्वीकार कर लिया था । हमेशा कडा पहरा रहता था ही । पर अव मैं ही भागना नहीं चाहती थी । धिरे-धिरे मैंने सव कुछ सिख लिया । मेरा महफिल लगने लगा । दुर दुर के लोग मुझे पसन्द करने लगे । मेरी जवानी भी अव पुरी उफान पर आ गयी थी । एक दिन उस शहर के एक अमीर ने मेरा नथ भी उतार दिया । तुम तो विवाहित होकर भी अक्षतयौना रही । मैं तो अविवाहित होकर भी क्षत-विक्षत हुँ । ”

“ ऐसी दुखदायी कहानी है तुम्हारी ? यह सव सहने का साहस केवल औरतों में ही होता है । मैंने भी जो कुछ सहा है वह मर्द नहीं सह सकता । तुमने भी जो कुछ सहा है वह मर्द नहीं सह सकता । हम औरतों के भाग्य में सहना ही लिखा है । फिर तुम यहाँ कैसे पहुँची ? यहाँ तो गंगा स्नान करने , पुजा तीरथ करने आते हैं लोग । तुम तो फातिमा ....

सावित्री वीच में ही काटकर वोली

“ हाँ मैं सावित्री से फातिमा हो गयी । एक हिन्दु नारी से मुसलमान खातुन हो गयी । फातिमा खातुन । लोग मुझसे नवाजें पढवाने लग गये । पर वचपन के संस्कार कभी नहीं जाते । मैं भीतर से हिन्दु रही । जवरदस्ती किसी को मुसलमान वना देने से, नवाज पढवा लेने से नहीं होता

दिन वितते गये , वरस वितते गये । धिरे-धिरे अमीरन वुढी होने लगी । उसने मेरे कई गर्भ गिराये थे । लडकियाँ की जवानी वनाये रखने के लिए उसे गर्भ धारण नहीं कराया जा सकता । उस

DoNotCopy

समय गर्भपात का कोई सुरक्षित उपाय नहीं था । हमे गोलियाँ खाने को दी जाती । कभी - कभी उसके वावजुद भी गर्भ धारण हो जाता । तव उसका गर्भ अवैध तरीके से गिरा दिया जाता । कितनी लडकियाँ तो उसी दौरान मर जाती थी । पर मैं नहीं मरी । ”
“ यह सव तो मैं जानती भी नहीं हुँ । इस वुढापे मे भी इससे मैं अनभिज्ञ हुँ । तुम्हारी कहानी तो वडी दुखद है । फिर ?,,
,,अमीरन जव वुढी हो गयी तो मुझे कुछ ढील दी गयी । अव पंछी भाग कर कहीं नहीं जा सकता । एक दिन अमीरन ने मुझे अपनी चाभी थमा दी । वह औरत निपुती थी । उसी दिन वह मर गयी । मैं उस कोठे की मालकिन वन गयी । अव मैं सोचती हुँ किसी लडकी को मैं यह चाभी सौंप कर कहीं चली जाँउ । पर कहाँ जाउँ ? अव तो केवल इस दुनियाँ से जाने का समय है । ”
“ क्यों तुम मेरे साथ मेरे घर चलो । मैं तुम्हे ले जाउँगी । ”
“ नहीं सीता । एक दिन मैंने सोचा कि पटना घुम आउँ । मैं आयी तो यहाँ पुर्णिमा का अवसर था । लोग गँगा स्नान करने आये होंगे । मैं भी गंगा स्नान करने आयी । उस पार स्नान करके इधर नाँव से सैर करने चली आयी । तुमसे मुलाकात हो गयी । भगवान का चमत्कार है । तुम भी तो एक तरह से मुझसे कम दुखी नहीं हो । मैं वहाँ कहाँ जाउँ ? तुम्हारे माँ-वाप ?”
“ माँ-वाप क्या वैठे रहते ? अव तो हमारी मरने की वारी है । वे भी वहुत पहले ही चल वसे । अव भाइयों नहीं एक भतीजे के सहारे हुँ । औरत विना सहारे के रह भी तो नहीं सकती । पर मैं तुम्हे अपने साथ पनाह दुँगी । ”
“नहीं सीता , तुमने ठीक ही कहा है । औरत विना सहारे के नहीं रह सकती । मेरा सहारा भी लखनउ ही है । तुम पर मैं वोझ नहीं वन सकती । ”
“ वोझ किस वात का सवित्री ? ”

DO NOT COPY

" नहीं सीता,अव वहाँ कोई पहचानेगा भी नहीं । जव पता चलेगा कि मैं कौन हुँ , कहाँ से आयी हुँ तव तुम्हारी भी खैर नहीं । तुम मुझे क्षमा कर दो मैं तुम्हारे साथ नहीं जा सकती । चलो आज हम तुम किसी होटल में रहेगें । फिर सुवह तुम चली जाना । "

जव वहुत कहने पर भी फातिमा नहीं मानी तो सीता मजवुर हो गयी । फिर दोनों सखियां नाव में वैठी और गंगा की धारा में उस पार जाने लगी । गंगा की निर्मल धारा में दोनों निर्मल औरतें चली जा रही थीं । गंगा के पार उतर कर दोनों पटना में एक होटल में रुकी । दोनों एक साथ खाना खाकर एक साथ सोयी । जैसे दोनों के वचपन लौट आये थे ।

सुवह दोनों पटना स्टेसन गयीं । फातिमा लखनउ की ट्रेन पकड कर चल दी । सीता दुर तक ट्रेन को जाती हुई देखती रही । यह ट्रेन कितने अपनों को मिलाती है और कितने का विछोड कराती है । सीता वस स्टैंड पर जाकर वस पकडी और अपने गाँव की ओर चल पडी । उसके साथ उसका भतीजा था । गाँव महुँच कर उसने खवर सुनायी कि सवित्री जिन्दा है और लखनउ में है । पर इस समाचार से किसी को क्या मतलव ? उसके माँ-वाप,अपना पराया कोई भी इस खुशी के लिए नहीं था । उसके साथ की लडकियाँ सव ससुराल में थी , प्रौढा , वाल वच्चेदार । दुनियाँ ऐसी होती है । सव लोग अपने में मगन थे । सीता धिरे-धिरे अपने घर में गयी और सो गयी । उस रात उसने खाना नहीं खाया ।

यह है दुनियाँ ।

- o -

१३

आखिर युद्ध कितनों दिनों तक रुक सकता था । जव आपस में मन नहीं मिल पाता तो लडाई होती ही है । फिर अपने-अपने वच्चों

DO NOT COPY

का मोह सवको होता है । सगुनी और नागमणि की लडाई फिर शुरु हो चुकी थी । इधर देश में दुसरा युद्ध छिडा हुआ था । माओवादी लोगों के खेत कव्जा कर लेते थे । दिन दहाडे किसी को भी मार देते थें । उनका जन अदालत लगता था । वडी वेरहमी से लोगों को पीटा जाता । सव लोग चुप थे । राजा विरेन्द्र का वंश नास हो चुका था । वीरगंज के गोपाल गिरी को गाँव के हनुमान मंदिर के अगाडी गाँव मे घुमा घुमा कर गोली ठोक दी गयी थी । कितने प्रधान पंच मौत के घाट उतारे जा चुके थे । पर कोई वडा नेता नहीं मारा जाता था । छोटे-छोटे लोगों को निशाना वना कर पता नहीं वे क्या खोज रहे थे ? अरे मारना है तो वडे नेताओं को मारो । पर नहीं वे तो निरीह जनता को मार रहे थे । उनका कोई रक्षक नहीं था । सभी व्यापारी मुँह मांगे चन्दा देने से परेशान थे । यहाँ तक कि किसानों के पास पैसा नहीं होने पर उनके वखारी से धान निकलवा लेते थे । यह कौन सी क्रान्ति है जिसमें जनता सतायी जाती है ? लडना है तो पुलिस मिलेटरी से लडो । कहाँ लिखा है कि निरीह जनता को दुख दो ? माओवादी हैं ये लोग । माओ तो कहता था कि जनता का एक पैसा भी नहीं लेना है । ये वही माओवादी हैं । कैसे माओवादी हैं ये ?

साम सुन्दर कमा-कमाकर एक जगह १० विगहे का चकवन्दी जमीन लेना चाहता था । यह देख कर उसने इसका विचार छोड दिया ।

नागमणि और सगुनी तो लडते ही रहते थे । अव माओवादियों के खौफ से और किसी के पास अपनी जमीन नहीं होगी । अव इसे जितना छोटा हो कर देना चाहिए । नागमणि और सगुनी में वँटवारे की तारीख तय हो गयी । अदालत , माल का कोई काम रुका नहीं था । हाँ माओवादीयों की समानान्तर सरकार भी थी । वँटवारे के लिए एक दिन सीता को भी वुलाया गया । सगुनी तो इसी के इन्तजार में था । सीता जव आयी तो फिर वही -

DO NOT COPY

“ कैसे हैं देवर जी ? ”
“ ठीक हुँ । तुम कैसी हो ? ”
“ ठीक ही हुँ देवर जी । इस वार सभी तीरथ, धाम घुम आयी । अव दुनियाँ का काम पुरा हो गया । अव चैन से मर सकुँगी । जहाँ जाती हुँ ,आपके भाई की तस्वीर लिए रहती हुँ । सभी तीरथ में अधिक तीरथ ,सभी भगवानों से वडा भगवान । ”
“ क्या इसी में तुम्हारे जीवन की सार्थकता है भाभी ? अरे कोई वाल-वाच्चा नहीं है , स्कुल,कुँवा पोखरा मन्दिर वनवाओ । ”
“ मैं भी यही सोचती हुँ । पर वच्चा नहीं है मत कहिए । सरोज मेरा वच्चा ही है । अव जवान हो गया है मेरा वच्चा । वही मुझको तारेगा । ”
“ वह वच्चा तुम्हारा नहीं होगा भाभी । तुम दुनियाँ को नहीं जानती हो क्या ? ”
“ नहीं-नहीं देवर जी ऐसा मत कहिए । मैं जिसे अपना वनाती हुँ उसे भीतर से अपना वनाती हुँ । वह मेरी सगी वहन की संतान है । ”
सगी वहन भी तुम्हारी नहीं होगी । तुम्हारी होते हुए भी वह उसे अपना ही वेटा मानेगी । वह केवल तुम्हारे धन की लालच में है । ”
“ नहीं हम दोनों सगी वहनें एक साथ इस घर में आयी हैं । उसके मन में कोई दुर्भावना नहीं हैं । ”
“ दुर्भावना है कि नहीं यह तो समय आने पर देखुंगा । पर क्या तुम अपने ही जैसा सरल हृदय सवको समझती हो ? तुम्हारी वहन वैसी नहीं है । तुम्हारे जेठ तो कव से इसी ताक में हैं । ”

” ” ”
“ चुप क्यों हो गयी भाभी ? तुमको लगता होगा कि मैं अनर्गल वातें सिखा रहा हुँ । वे लोग तो समझते ही है कि मैं तुमको मोड सकता हुँ । ”

DO NOT COPY

" तो मैं क्या करुँ देवर जी ? आप ही वताइये । "
" मैं कुछ भी नही कहुँगा भाभी पर मैं यही कहना चाहता हुँ कि तुम जो कुछ भी करो , सजग होकर करो । तुम अपनी जिन्दगी में अपनी जमीन को वेंचना मत । कोई यह कहे कि उसमें से कुछ मेरे नाम कर दो तो मत करना । ऐसा वहुत से कहने वाले मिल जायेंगे । तुम सचेत रहना । इसके वाद तुम्हारी और कठिन घडी आने वाली है । सभी तुन्हारी जमीन को हडपने की कोशिश करेंगे । "
" तो ठीक है । अव सव काम आपसे पुछ कर करुँगी । "
,,नहीं,नहीं भाभी , ऐसा मत करना । सव काम के लिए मुझसे पुछने की जरुरत नहीं । लोग कहेंगे कि मैं तुम्हे वहका रहा हुँ । अच्छा भाभी , अव तुम जाओं । देखते पर लोग कहँगे कि मैं तुम्हे कुछ सिखा रहा हुँ । ,,
" क्यों देवर जी आप यहाँ भी डर गये ? आपको इतनी भी हिम्मत नहीं कि सव वात आपसे पुछ सकुँ ? "
" नहीं भाभी , मैं डरा नहीं हुँ । यह तुम्हारे भले के लिए ही कह रहा हुँ । अच्छा वोलो कि तुम इस वार कैसे आयी ? " सामसुन्दर वात को वदल देना चाहता था ।
" माओवादीओं का हल्ला है । किसी की जमीन नहीं रहने देगें । इस लिए अपने-अपने हिस्सों को अपने अपने नाम करा लेना चाहिए । थोडी जमीन होगी तो कब्जा नहीं करेगें । "
" खैर वह तो वहाना है सगुनी भाई का । नागमणि से कह कर राजी करने का । असल में उनका समय अव हो गया है । माओवादी तो वीच मे आ गये । "
" अव जो भी हो । " कह कर सीता चली गयी ।

दुसरे दिन सभी लोग कलैया गये । सम्पति का तीन हिस्सा लगा । दस्तखत करने वक्त सीता सजग थी । वह सामसुन्दर का सम्मान करती थी । उसने नाम पढवा लिया कि उसके हिस्से पर

उसी का नाम है कि नहीं ? वरावर-वरावर हिस्सा है या नहीं ? तव जाकर उसने सही छ्राप लगाया था । वह अपने दत्तक पुत्र के साथ अपना हिस्सा लेकर जेठ के साथ हो गयी । अपनी वडी वहन के साथ रहने लगी । नागमणि मायुस हो गया । पर उसके लडके सदानन्द को ऐसा लगता था कि मरने से पहले वह उसे जरुर कुछ देगी । पर नागमणि को ऐसा नहीं लगता था । उसने उसको जो तकलीफ दी थी उसके आधार पर उसे ऐसा लगता था । उसके द्वारा एक अति प्रताडित औरत क्योंकर उसे कुछ देगी ? पर सदानन्द को ऐसा लगता था कि वह देगी ।

कुछ दिन तो सवकुछ ठीक था । पर सीता फिर सवका जुठन साफ करने लगी । उसकी वहन और जेठ ने कुछ दिन तो उसे ठीक से रखा पर फिर वही वात । सरोज तो जैसे अपनी माँ समझता ही नहीं था । वह एक आँख से काना था । काना वहुत चालाक होता है । वह अपने वाप से भी अधिक चालाक है । वह जवान होने लगा था । और अपना मनसुवा वनाने लगा था । सीता फिर नौकरानी वन गयी । अव अपनी वहन की नैकरानी । एक दिन सीता फिर सामसुन्दर के पास गयी-

" आप ठीक कहते थे देवर जी । "

" क्या ठीक कहते थे भाभी ? क्या हुआ ? "

" कि तुम सचेत रहना । "

" तो क्या तुम्हारी सम्पति के साथ कोई गडवडी की गई ? "

" जमीन के साथ तो कोई गडवडी नहीं की गयी पर जीवन के साथ गडवडी हो गयी । मैं समझती थी अव मालकिन वनकर वैठुँगी । परन्तु अभी भी मैं वही की वही हुँ , नौकरानी । "

" क्यों भाभी , ऐसी भी क्या वात है ? "

” मैं जुठे वर्तन अव नहीं साफ करना चाहती । मैं अव चुल्हे-चौका करना नहीं चाहती । मैं चिपरी पाथना नहीं चाहती । वे चाहते हैं कि यह सव मैं ही करुँ । ”
“ मैने तो पहले ही कहा था कि अव अधिक कष्ट का दिन आने वाला है । तो तुम अपना काम अलग कर लो । ”
“ वे नहीं करने देंगे । जेठ को तो आप जानते ही हैं । विल्कुल लांगट । इज्जत-आवरु सव ताक पर रख देते हैं । ”
“ तो फिर क्या उपाय है ? ”
“ मैं अव यहाँ नहीं रहुँगी । अलग होने के वाद सोचती थी कि अव आपलोगों के साथ रहुँगी । पर यह सुख नसीव नहीं होगा । मेरे जीवन में कोइ सुख नसीव नहीं होगा । मेरे जीवन में कोई सुख नहीं है । मैं नैहर चली जाउँगी फिर । ”
“ तो तुम ऐसा करो । अपनी कुछ जमीन को वेचकर पैसा लेकर चली जाओ । वही आराम से रहना । या नहीं तो वेचकर नौकर-चाकर रखकर आराम से रहो ।
“ पर जेठ मुझको वेचने देंगे ? “
“ क्यों नहीं वेचने देंगे ? वह तुम्हारा है । तुम उसमें से कुछ वेचकर पैसा वना सकती हो । तम्हारे दत्तक पुत्र के लिए तो रहेगा ही । ”
“ अच्छा देखती हुँ, सोचती हुँ । पर जेठ के आजतक के व्यवहारों से मुझे ऐसा कल्पना में भी नहीं लगता । यहाँ मैं वहुत असहाय एवं निरीह हो जाती हूँ । ”

सीता चली गयी । सामसुन्दर को भी यही लगता है कि यह कठिन है । सगुनी जैसा काहिल आदमी कोई नहीं । वह ईज्जत आवरु सव ताक पर रखने वाला है । समाज में सव लोग हैं पर सव उसके लंगटयी से डरते हैं । लंगट से खुदा डरे । पर अव सामसुन्दर भाभी का दिल तोडना नहीं चाहता था । उसे ढाढस देना चाहता था । वह गयी और विचार किया । उसे वही उचित लगा जो देवर ने कहा था

DO NOT COPY

। परन्तु उसके वाद जो हुआ वह अनुमान के वाहर था । उसने थोडी जमीन वेंचनी है, अपनी वहन से कहा । वहन ने धिरे से इस वात को सगुनी से कहा । सगुनी का असली नंगा रुप देखने को उसी दिन मिला ।

“ क्या वोलती है रे.......... ? ” वह रण्डी वोलने ही वाला था कि छोटी वहुँ होने के लिहाज से रुक गया । वगल मे पडा एक लाठी उठाया और जितना पिटना था उतना पीटा । उसकी वहन उसको वचाने गयी तो उसको नंगा कर दिया । वह नंगी छुईमुई सी वही वैठ गयी । नागमणी और उसके लडके ने सबकुछ देखा पर कुछ नहीं वोला । जिस जेठ की समाज में भावो पर छाया नहीं पडनी चाहिए वह उसे सरेआम पिट रहा था । कितनी भद्दी गालीयाँ उसने दी उन भद्दे शब्दों का वयान नहीं करना चाहिए । फिर उसी समय सीता का वाल पकड कर घसिटते हुए रक्सौल लेकर गया और उसके मैंके पहुँचा दिया । सामसुन्दर कहीं वाहर गया था । आया तव माँ ने उसे रोक दिया । ऐसा नंगा नाच करने वाले के पास तुम मत जाओ । पंचों ने सुना तो कोई कुछ नहीं किया । उसके यहाँ तो रोज ऐसी घटना होती है । वह औरत इतनी दहसत से भरी हुई थी कि पुलिस महकमे में जाकर कोई छिछा-लेदर करवाना नहीं चाहती थी । यह थी हालत उस विधवा की, असहाय, निरुपाय ।

उसके वाद उसके जीवन में प्रताडना दोनों ओर से होने लगी । इधर से सगुनी ने उसको विल्कुल पुछना छोड दिया । जितनी जल्दी हो वह मर जाय अव । उसके मैंके के भाई चल वसे । उसकी भाभी एवं भतिजे उसपर दवाव वनाने लगे कि वह उसको दत्तक पुत्र तो नहीं वनाया पर अव वह अपनी जमीन वेचकर हमारे यहाँ रहे । पर सीता सव जानती थी । सभी लोग उसकी जमीन के लिए ही मानते हैं । सौहर चले गये तो सव चला गया । अव वह जमीन के लिए किसी की कोई वात नहीं मानेगी । वह किसी पुलिस महकमें में नहीं

जायेगी । जिसको जो करना है वह करे । सभी लोग उसे मर्दमारी कहते थे । पर उसकी जमीन मर्दमारी नहीं है । नहीं मैं किसी की वात नहीं मानुँगी । उससे कोई मतलव नहीं । फलतः उसके मैंके में भी प्रताडना सहकर उसे रहना पडा । वह अपने १० कट्ठे जमीन से खाती थी । सिलाई करके गुजर, वसर करती थी । किसी पर वोझ नहीं है । अगर लेना ही है तो यह १० कट्ठा जमीन लँगडा ले ले । उसका भतिजा लँगडा था । लेकिन अव मैं अवधापुर नहीं जाउँगी । उस घर की ईज्जत वनकर मैं रही । जव उसी घर में मेरी इज्जत नहीं रही तो मुझे दुनियाँ में किसी के इज्जत देने की परवाह नहीं । कोई मुझे इज्जत दे न दे क्या फरक पडता है ?

o o o

एक दिन नागमणी का लडका सदानन्द श्रीखिण्डी पहुँच गया और सीता से वोला ,,छोटकी माँ, मैं तुम्हे लेने आया हुँ । ”

“ अच्छा तो आप मुझे लेने आये हैं ? काहे के लिए ववुआ ? ”

“ मै तुम्हारा हक तुमको दिलवाउँगा । ”

“ पर उस दिन तो तुमने मेरा हक नहीं दिलवाया । दोनों वाप-वेटे तमाशा देख रहे थे । उस दिन तुम कहाँ थे ? ”

“ अरे घर में तो यह सव होता ही रहता है । ”

“ हाँ भवे को सरेआम पीटना, भद्दी-भद्दी गालीयाँ देना , एक औरत को नंगा कर देना सव घर में होता है । वहन नंगी हो गयी सवके सामने यह सव घर में होता है । ”

“ वडी माँ ने ही मुझे भेजा है कि जाकर तुम्हे वुला लाउँ । ”

“ वडी माँ ,सगी वहन । खुव देखा मैंने सगी वहन को । जाकर कह दो उसे कि उसे जो कुछ मिलना था वह मिल गया । उस मिट्टी को वही रखे । मुझे उस मिट्टी की जरुरत नहीं । ”

“ नहीं जरुरत है तो उसमें से थोडा मुझे दे दो । ”

" अव आये काम की वात पर भतीजे । तो सिधे क्यों नहीं कहते कि मैं तुमको कुछ जमीन दे दुँ ? इसी के लिए मुझे वुलाने आये हो ? जाकर ले लो मेरी सगी वहन से । "

" अगर तु मेरा साथ दोगी तो मैं तुम्हारा साथ दुँगा । मैं कोर्ट कचहरी ले जाउँगा । मैं पुलिस मिलिटरी को वुलाउँगा । कैसे वे क्या करते हैं ? "

" हम साथ । अरे साथ नहीं दिया होता तो मैं उस घर में रहती ? मैं उस घर की इज्जत रखने के लिए ,अपने सत के लिए ऐसा किया । तुम्हारी पुलिस और मिलेटरी मेरी इज्जत वापस कर देगी ? तुम चले जाओ यहाँ से । तुम्हे यहाँ कुछ नहीं मिलेगा । पुछना अपने वाप से कि क्या उसने मेरी इज्जत रखी ? अरे मैने उसे अपना बनाना चाहा और उसने क्या किया ? मुझे देखकर उसे नफरत थी । और तुम मुझे अपना वनाने आये हो । " सीता विफर उठी । उसे सारे वीते हुए दिन आँखों के सामने नाचने लगे । फिर वह चुप हो गयी ।

उसके वाद सदानन्द ने उसके लंगडे भतीजे से खुसुर - फुसुर करके कुछ कहा कि सव जमीन केवल वडे पापा ले लेंगे । छोटी माँ को वोलो मेरे साथ जाने के लिए । फिर जो कुछ मिलेगा उसे हम लोग आपस में वाँट लेँगे । लँगडे ने कहा कि लेकिन मेरी नागरिकता नेपाल की नहीं हैं । इस पर मनोज ने कहा कि तुम्हे मिल जायेंगे । फिर वे दोनों सीता के पास गये । फिर वही वात । सीता उत्तेजित हो गयी । उसने लँगडे से कहा ।

" ऐ लालची, अगर मुझे अपने यहाँ रखना है तो रखो अन्यथा मैं अपनी १० कट्ठा जमीन पर घर वनाकर रहुँगी । मेरे मरने के वाद वह तुम ले लेना । पर मुझे उस मिट्टी से कोई मतलव नहीं । "

सदानन्द निराश होकर लौट आया । वह लौट तो आया पर सगुनी से लडाई झगडे का हाल वैसा ही रहा । वह भ्रद आदमी था । वह जवान हो रहा था । थोडा वुद्धिमान भी था । अव उसे अपनी

DO NOT COPY

दुनियाँ विल्कुल अलग वनानी थी । अलग होकर भी उस घर में चैन नहीं । उसने अपने पिता से इस घर से दुसरी जगह घर वनाने को कहा । जव उसके पिता ने कहा कि इस घर को छोडकर नहीं जायेंगे तव उसने पिता के सामने प्रतिज्ञा कर ली कि या तो आप दुसरी जगह चलिए या नहीं तो मैं जहर खा लुँगा । नागमणि अपने वेटे की इस प्रतिज्ञा से डर गया । अव यह घर का क्या होगा ? उसका भी हल निकल गया । सामसुन्दर ने उसकी सारी जमीन ले ली और वदले में उसे गाँव से वाहर का खलिहान दे दिया । अव वे लोग वही अपना घर वनाकर रहने लगे । सगुनी को मजवुर होकर दुर सरेह में जाना पडा । अव वे दुर-दुर रहने लगे । अव कलह दुर हो गयी । इसमें सदानन्द की वुद्धिमानी थी । पर उसकी वुद्धिमानी नहीं उसकी लालच थी । यह लालच कितनी तीव्र थी कि जव उसकी शादी हुई और जो वच्चा हुआ उसका नाम अंश रखा । इसका अनुमान इसी से लगाया जा सकता है । इस तरह वहुत दिन वित गये । इधर सीताके मैके वालों ने यह तो नहीं कहा कि जाकर अपने दश कट्ठा जमीन में घर वना लो । पर वे उसकी उपेक्षा करने लगे । अव शरीर भी छिजने लगा था । वह वीमार चलने लगी । उसकी विमारी की खवर सुनकर उसका दत्तक पुत्र उसके पास आया ।

" छोटी माँ , तुम वीमार हो । मैं तुझे वुलाने आया हुं । "

" वीमार हुँ तो वुलाने आये हो नहीं तो नहीं आते ? "

" तो मैं क्या करुँ ? "

" तो अव झगडा नहीं होगा ? "

" नहीं अव झगडा नहीं होगा । मैने पिता जी को वहुत डाँटा है । उनसे मैंने वागडोर ले लिया है । "

,, कैसा वागडोर ले लिया है ? ,,

DO NOT COPY

" यही कि अव वे तुमको कुछ नहीं कहेगे । कहते हैं कि तुम सामसुन्दर से मिलती रहती हो । वे तुम्हे उल्टे - सीधे सिखाते रहते हैं । वे मना नहीं करेगे । "
" मैं वच्ची हुँ कि देवर जी उल्टे-सीधे सिखायेंगे और मान जाउँगी ? मैं नहीं जाउागी । "
मान जाओ माँ आखिर मैं तुम्हारा वेटा हुँ । दत्तक पुत्र ही हुआ तो क्या हुआ ? तुमने वेटा वनाया है । मैं तुम्हारी ही सगी वहन का वेटा हुँ । "
" जो तुम मेरा वेटा हो तो तुम्ही आकर मेरे पास यही रहो । मैं वहाँ नहीं जाउँगी । "
" मन जाओ माँ । मैं वहाँ की जायदाद छोडकर कैसे आ सकता हुँ ।
"

सरोज को अपना प्लान खिसकता हुआ लगने लगा । पर उसने हिम्मत नहीं हारी । वह सीता का दत्तक पुत्र होते हुए भी अपने माँ-वाप के पास ही रहता था । दत्तक पुत्र तो उसे सिर्फ चाचा से दो तिहाई हिस्सा लेने के लिए वनाया गया था । वह तो हो गया । पर अव, अव जो उसने दुसरा प्लान वनाया था, वह दिन रात उसी के वारे में सोचता रहा था । इसलिए वह अपनी दत्तक माँ को वुलाने गया था । उसने कहा :
" माँ, अव हम चाचा से वहुत दुर रहते हैं । वे खरिहानी में और हमलोग चारकठवा खेत में । तुम चल कर नया घर देख लो और वही रहो । " उसने सीता के पाव पकड लिए । जिसको लोगों ने पाँव की धुल भी नहीं समझा उस पाव पर एक नौजवान वेटा पडा है । सीता का दिल पसीज गया । उसने उसे पाँव से उठाकर कहा :-
" अच्छा चलो वेटा मैं चलुँगी । अव कोई कच-कच सुनने नहीं जाउँगी । अव वाकी के दिन शान्ति मे गुजारना चाहती हुँ । मैं अव

DO NOT COPY

वीमार चल रही हुँ । ” सीता के मन में नैहर की उपेक्षा भी काम कर रही थी । सरोज ने कहा -
” वीमार चल रही हो तो उसका इलाज भी होगा तुम चलो तो । ”

सीता अपने दत्तक पुत्र के साथ चली आयी । अव वे दुर सरेह में घर वनाकर रहने लगे थे । कोई आना-जाना नहीं रहा । अव कोई कच-कच नहीं रहा । उसके साथ अव एक वात और हुई । उसे सामसुन्दर से मिलने का अवसर नहीं मिलता था । उसे भडकाया गया कि सामसुन्दर ने तुम्हारी घडारी भी खरीद कर अच्छा नहीं किया । अव उसके पास क्यों जाओगी ? दुर होने पर वह भी गाँव में नहीं जाती थी । सामसुन्दर से उसकी भेंट नहीं होती थी । उसकी विमारी का इलाज खुद उसका दत्तक पुत्र करवाता था । सामसुन्दर को कुछ पता नहीं ।

सरोज अपने वाप की तरह चाण्डाल नहीं थोडा वुद्धिमान और विनम्र था । वह एक आँख से थोडा काना था । काना आदमी थोडा अधिक चालाक तो होता ही है । उसने अपना उल्लु वहुत विनम्र होकर सीधा किया । दिनरात वह सीता की खातिरदारी में लगा रहता था । उसको रंच भर भी दुख नहीं हो, इसका ख्याल रखता था । थोडा भी अपने वाप को इधर-उधर झगडे वगैरह की वातें करते सुनता तो आग ववुला हो जाता था । वह अपने वापको धुर्त तो समझता था पर वेवकुफ और चाण्डाल भी समझता था । उनके चलते गाँव भर में उनलोगों की कोई इज्जत नहीं थी । अव वाप का एक भी नहीं चलने देता ।

धिरे- धिरे दवा से सीता विल्कुल स्वस्थ हो गयी । सीता यह समझने लगी की जिस दिन का इन्तजार था वह भगवान ने पुरा कर दिया । दत्तक पुत्र अव मेरा असली पुत्र है । अव वह खुशी-खुशी अवधापुर में रहने लगी ।

DO NOT COPY

० ० ०

१४

माओवादियों का आतंक तो था ही । अव जनता के उपर एक और आतंक आ गया । राजा ने इमर्जेनसी लगाकर सभी अधिकार स्वयम् ले लिया । जनता त्राही त्राही कर रही थी । एक ओर माओवादी निर्दोष लोगों को मार देते , अपहरण कर लेते, दुसरी ओर इमर्जेन्सी के नाम पर सेना परिचालित कर दिया गया । सेना आती और संदेहास्पद व्यक्ति को माओवादी कह कर पकड कर यातनायें देती और कई को मार डालती । जनता दोनों ओर से मर रही थी । समाचार एवं अन्य संचार माध्यम वन्द हो गये । उन पर पावन्दी लगा दी गयी या उन पर कडे पहरे होने लगे । जनता त्राहिमाम थी । कव क्या हो जायेगा पता नहीं चलता था । पार्टियों पर फिर प्रतिबन्ध लगा दिया गया । गिरिजा ने देउवा को अपदस्त कर दिया तो देउवा ने सत्ता राजा को सौप दिया था । राजा ने देउवा को निकम्मा कह कर निकाल वाहर कर दिया था । सभी पुराने पंचायती के लोग इकठ्ठे हो गये । उन्हे क्या मालुम कि अव यह २०१७ नहीं है । उन वुढे पंचो का फन्दा तो आज की नैजवान पीढी एक ही झटके मे तोड देगी । गिरजा ने देखा कि जिस राजा को हम मानते आये हैं, जिसको हमने २००७ साल से ही वचाकर लाया है वही हमको खतम कर दिया । दरवार का नृसंस हत्याकाण्ड किया । उधर माओवादी हमको खत्म कर रहे हैं । अतः उन्होने अपनी पार्टी से राजा को निकाल फेकने का मनसुवा वना लिया । उन्होने माओवादीयों से समझौता किया और राजा को अपदस्त कर दिया । मदेसियों ने खुलकर उस आन्दोलन में साथ दिया । पर संविधान में मधेशियों का कोई सम्वोधन नहीं । फलतः मधेशियों को अलग से एक और आन्दोलन करना पडा । संविधान को जलाना पडा ।

“ गिरजा, काँग्रेस मुर्दावाद

DO NOT COPY

पहाडी, कम्युनिष्ट मुर्दावाद
सम्पुर्ण मधेश, एक प्रदेश

२०५० वर्षो का लावा जैसे किसी ज्वालामुखी सा फुट पडा था । सवको आश्चर्य हुआ कि मधेश तो सोया हुआ था । यह जागा है तो किसी से रुकनेवाला नहीं । सडकों पर पत्थर विछा दिये गये । कोई सवारी आ-जा नहीं सकती थी । पुलिस, सेना हस्तक्षेप करती तो कितनों को काट कर पोखरे में फेँक दिया गया ।

सभी लोग घरों से निकलकर प्रदर्शन करते और जुलुस में शरीक होकर आगे वढते । उसमें अवाल,वृद्ध शामिल होते । महिला, पुरुषका जैसे सागर उमडा हो । कुछ लोगों ने आग्रह किया सीता भी जुलुस में चले । वह तनिक भी नहीं हिचकी । मधेश का उत्साह देखकर वह भी उत्साहित थी । परिवार की वन्दिस काम नहीं करती थी । सभी लोगों में एक जुनुन था , अपने मधेश का हक लेने को । जुलुस कलैया गया । भरत चौक पर एक ओर जनता और दुसरी ओर पुलिस और सेना वन्दुक लेकर खडी थी । उन्हे चौक से आगे वढने नहीं दिया जाता था । अचानक कुछ नौजवानों ने सीता को एक साथ अपने कंधो पर हवा में उठा लिया और जोर से नारा देते हुए आगे वढना शुरु किया - हमारी माँ, जिन्दावाद

मधेश की माँ, जिन्दावाद
हमारा मधेश, खाली करो
पहाडी समुदाय, मुर्दावाद
गिरजा चोर, जुत्ताखोर

सीता हँस रही थी । उनके कंधों पर वह ताजिया की तरह नाच रही थी । यह तो जैसे आन्दोलन नहीं वाल्कि उसके शरीर में जवानी का उत्साह और उमंग भर दिया था । उसी समय सामने से गोली चली -

ठाँय

DO NOT COPY

ठाँय
ठाँय
कई गोलीयाँ चली । पुलिस और सेना ने अपनी वर्वता का परिचय दे दिया । किसी को गोली लगी तो वही ढेर हो गया । किसी को गोली लगी और लडते वुडते,गिरते,पडते भागा । प्रदर्शनकारी ईंट एवं पत्थर चलाते थे, पुलिस गोलियाँ चलाने लगी । सीता नौजवानों के कंधों से गिर पडी । उसने देखा उन नैजवानों में से एक उसका भगिना था । जीतेन्द्र । उसके पेट और जांघों में गोली लगी थी । लोगों ने ढाल की तरह घेर कर सीता को वचाया । उसके भगीना जीतेन्द्र को वीरगंज अस्पताल पहुँचाया गया । वीरगंज में भी आन्दोलन इसी तरह था । भानु चौक में भानुभक्त की मुर्ति तोड दी गयी थी । विद्यापति की मुर्ति हमारे यहाँ नहीं लगेगी ? गोरखा के भानुभक्त आयेंगे हमारे यहाँ । जाइए अपने यहाँ । उनको विदा कर दिया गया । स्टेसनके वी. पी. उद्यान में मधेशी शहीद पार्क का वोर्ड लटका दिया गया । कईयों को जितेन्द्र के साथ वीरगंज अस्पताल में भर्ती किया गया । वीरगंज मे जितेन्द्र की हालत नाजुक होने पर उसी रात हेलीकोप्टर से काठमाण्डु ले जाया गया । उसकी माँ भी शेरनी वन गयी थी । वाप गोली खाते खाते वचा था ।

यह क्या हो गया तराई में ? गिरजा एवं अन्य पहाडियों को अनुमान नहीं था कि मधेश इस तह जाग जायेगा । उन्होने भरसक इसको दवाने और इसकी उपेक्षा करने की कोशिश की । पर सव वेकार सावित हुआ । फिर भी भीतर से वे कतई तैयार नहीं थे कि मधेशी को कुछ दे । आन्दोलन २१ दिनों तक चला । रुकने का नाम नहीं लेता था । झख मारकर गिरिजा वावु को मधेश की माँगों को सम्वोधन करना पडा । फिर भी आन्दोलन थमने का नाम नहीं लेता था । जव उसके नेता उपेन्द्र यादव ने जनता से अपील की तव जाकर जनता शान्त हुई । आन्दोलन को स्थगित कर दिया गया

DO NOT COPY

किन्तु लोग कहने लगे कि जनता समग्र मधेश एक प्रदेश का सम्वोधन चाहती थी । यह आन्दोलन जनता का स्वतःस्फुर्त आन्दोलन था । सदियों से दवे कुचले, उपेक्षित एवं गुलाम लोगों का दवा हुआ आक्रोश था यह । इसका नेता उन लोगों ने उपेन्द्र यादव को मान लिया था । इसलिए जनता शान्त हो गयी । पर गिरजा वावु अपने पहाडीपन से कभी वाज नहीं आये । निहत्थी जनता का खुन वहाने वाला गृहमंत्री सिटौला तक को भी उसने नहीं हटाया । यह न्युनतम कार्रवाइ भी उन्होंने नहीं की । इससे जनता यह समझने लगी कि जवतक गिरिजा ही क्या ये पहाडी रहेंगे तवतक हमारा कोई नहीं सुनेगा । अव हमें अपना नेता सभी अपने मधेश भाई को ही चुनना पडेगा । गिरिजा कोईराला या पहाडी लोगों के अकडपन के कारण ही उनका साम्राज्य मधेश से विदा हो जायेगा । किसी जमाना मे राजा अकडते थे और विदा हो गये । वैसे ही ये भी विदा हो जायेंगे । उनको संसार की २१ वी सदी की जनता की कोई पहचान नहीं है । कभी राजा कहते थे कि अभी कई वर्षों तक राज्य करेंगे पर चले गये । उसी तरह यह गिरिजा वावु या उनके जैसे लोग कहते हैं कि अभी हम मधेश पर कई वर्षों तक राज्य करेंगे पर वे भी चले जायेंगे । वे ही क्यों, अव उपेन्द्र यादव या मधेश के अन्य नेता भी इधर-उधर किये तो वे भी विदा हो जायेंगे । इतनी जागरुकता हो गयी है लोगों में भाई ।

तो इस तरह मधेश का आन्दोलन समाप्त हुआ । फिर से लोग सहज होने लगे । फिर से लोग सामान्य रुप से अपने अपने काम में लगे । पर जनता वडी सजगता से नेताओं की ओर देखने लगी । कहाँ क्या हो रहा है ? कौन क्या कर रहा है ? सवका लेखा जोखा कर रही है जनता ।

○ ○

DO NOT COPY

इसी सामान्य जीवन के होने के वाद अव सरोज अपना उल्लु सीधा करने में लग गया । वह देख रहा था कि सीता वहुत उत्साहीत, वहुत खुश है । हमारा भी वह वहुत ख्याल करती है । इसलिए वह एक दिन उसके पास गया और वोला -

“ माँ, मैं एक वात कहना चाहता हुँ । ”

“ क्या कहना चाहते हो कहो ? ”

“ नहीं मुझे डर लगता है तुमसे कहने में । ”

“ डर किस वात का , कहो ? ”

“ कहीं तुम नाराज नहीं हो जाओ । ”

“ नहीं नाराज हुँगी वोलो । अव तो सव कुछ तुम्हारा ही है । तुम मेरे वेटे हो । ”

“ माँ, मैं पढना चाहता हुँ । ”

“ तो इससे वढकर खुशी की वात क्या होगी ? पढो, दुनियाँ में नाम करो । ”

“ पर मेरे पास पैसे नहीं हैं माँ । ”

“ तो अपने पिता से माँग लो । ”

“ पिता को तुम जानती हो । वह तो पिता नही, चाण्डाल है । अव मेरी माँ और पिता तुम ही हो । ”

“ पर पैसा तो मेरे पास भी नहीं है । ”

“ नहीं माँ ,तुम्हारे पास खेत है । उसी से वेचकर कुछ पैसे दे दो । देखो चाचा का लडका एम ए कर लिया । सामसुन्दर के लडके डाक्टर हो गये । एक मैं ही निकम्मा वैठा रहुँगा तो तुमको अच्छा लगेगा ?”

सरोज एक वार फिर पाँव पर गिर गया । सीता ने फिर उसी तरह उठाया और वोला “ अरे तुम तो केवल पाँव पर पड जाते हो । अरे मुर्ख, तुम जो चाहो माँग लो, मैं दे दुँगी । तुम दुसरे के लडकों से कम रहोगे ? जाओ तुम जो कहते हो वही होगा । ”

DO NOT COPY

जिस विधवा को कभी प्यार नहीं मिला , जो प्रेम की मृगमरीचिका में जीवन भर दौडती रही, वह अपने दत्तक पुत्र में पाकर निहाल हो गयी । उसको पता नहीं था कि वह भी एक मृगमरीचिका ही है । वह तो तृषित दोपहरी की धरती थी जिसे वात्सल्य की वर्षा ने तर कर दिया था । उसने सरोज को आशिर्वाद दिया और विदा किया । सरोज गदगद होकर अपने कमरे में सोने चला गया । वहाँ रातभर जागकर अपनी सारी योजनायें वनाता रहा ।

सुवह सव कुछ चुप चाप होने लगा । सरोज ने इस वात को न अपनी माँ को वतलाया न पिता को । केवल सीता और वह जानते थे कि जमीन अव विकने वाली है । सरोज ग्राहक खोजने लगा ।

ग्राहक मिल भी गया । गाँव की जमीन सस्ते दामों में विकती थी । जैसा कि सीता ने कहा था । १० कट्ठा जमीन वेचने से उसकी पुर्ति नहीं हो रही थी । फिर उसको तो अपना पुरा मनसुवा साधना था । अतः उसने सारी जमीन वेंच दी । पर इस वात को छिपाये रखा । पता चलेगा तो सीता नहीं मानेगी । माल में रजिष्ट्री करने का हुआ तो सीता कलैया गयी । उसको क्या मालुम उसकी सारी जमीन विक गयी है ? उसने सही छाप लगा दिया । वह अनपढ क्या जाने इस वात को ? उसके वाद सरोज सीता से वेरुखा होने लगा पर जानने नहीं दिया । एक दिन सभी पैसा को जमाकर के हवाई जहाज से विदेश उड गया । हायर एडुकेशन के वाद अव कव आयेगा या आयेगा कि नहीं पता नहीं ।

-o-

१५

तराई अभुतपुर्व तरीके से जाग चुका है । इसको सभी नेताओं ने देखा । आन्दोलन केवल उपेन्द्र यादव के नेतृत्व में हुआ था । अव अपने को मधेश का नेता वनाने के लिए सभी लोग इसमें कुद पडे । सभी लोग अपने को मधेश का नेता वनाने के प्रयास में लग गये ।

DO NOT COPY

सद्भावना कई टुकडों में वँट गया । विजय गच्छदार जीन्दगी भर का अपना काँग्रेस छोड दिया । विजय गच्छदार उपेन्द्र यादव को मधेशी जन अधिकार फोरम का नेता कैसे मान सकते थे ? उन्होने अपना फोरम एक अलग वना लिया । अव वच गया जय प्रकाश गुप्ता । उसने भी अपने पुराने स्वामी गिरिजा प्रसाद को छोड दिया । महन्थ ठाकुर अपना तमलोपा वनाये । सुरेश त्रिपाठी को अव सद्भावना की सम्भावना से मन उव चुका था । फलतः वे तमालोपा में जा मिले । इस तरह मधेश की राजनीति का आलम यह हो गया कि अव पहाडी भी उसे भुनाने में लग गये । शरद सिंह भण्डारी ने केवल अपनी अलग पार्टी ही नहीं वनायी वल्कि मधेशयों के पक्ष में खुलेआम वक्तव्य देकर सवको चकित कर दिया । पहाड उसे देशद्रोही कहने लगा । मधेशी यह पुछने लगे कि हमारा प्रवक्ता यह कौन है ? उसको पता नहीं चलता कि कौन हमारा है और कौन नहीं ? उसको नेता चुनने की कठिनाई हो गयी ।

जो भी हो संविधान सभा की घोषण हुई और ये सभी प्रत्यासी जीत गये । मधेश से ४० मधेशयों ने जीतकर काठमाण्डु में तहलका मचा दिया । पर कोई कहता कि ये पानी के वुलवुले हैं, कोई कहता ये वरसात के फव्वारे हैं । जैसे ये आये हैं वैसे ही चले भी जायेंगे । उनको इस सत्य को पचाने में कठिनाई हो रही थी । तराई जाग चुका है, अव क्या होगा ? होगा क्या भाई अव मधेशियों को उनका सव कुछ देना होगा ।

अव सरकार गिराने और वनाने का खेल होने लगा । सभी में मधेशियों की अहं भुमिका रहती थी । यहाँ तक कि प्रथम निर्वाचित राष्ट्रपति और उपराष्ट्रपति मधेशी ही हो गये । गिरजा वावु को भी यह सव पचाना पडा । नहीं तो इस मामले में उनकी पाचन शक्ति थोडी कमजोर है । मधेश के लोग यही मानते थे । माओवादीयों ने उन्हे राष्ट्रपति नहीं वनाया । किसी जमाने में सवसे वडे नेता वन

DO NOT COPY

गये रामराजा वावु को गिरिजा वावु नहीं पचा सके । इसलिए वे अपने कंधे पर लाये हुए माओवादीयों को घडाम से निचे पटक दिया । पर माअेवादी भी कच्चा खेलाडी नहीं । उसने भी सभी को पहचाना और काँग्रेस तो क्या रामवरण यादव तक को मदारी का नाच नचाने लगा । तुम गणतन्त्र नहीं दोगे., हम सहमति नहीं करेंगे । चुनाव करवाओ, हमारा प्रधानमंत्री है, इसमें क्या खरावी है ? रामवरण यादव ने उसके राष्ट्रपति को पटखनी दे दिया था । अव ये लोग सवको पटखनी देने लगे । गिरजा वावु वेचारे तो इनके पटखनी से टें वोल गये । पर वचे खुचे काँग्रेसियों को कुछ सुझता ही नहीं है कि वे करें क्या ? अव वे इतिहास की चीज हो जायेंगे उनको पता ही नहीं । नयी पीढी को लोग कहते हैं कमान सम्मालने को । गगन थापा जैसे लोग ताल ठोकते हैं । पर वह गगन सिंह तो हैं नही गगन थापा हैं । वह १९ वी शाताब्दी का और यह २१ वी शाताब्दी का । ३०० वर्षों का अन्तर है । उदीयमान शक्ति को वस में करना उनके वस से वाहर की वात है । अव रहे झलनाथ , माधव नेपाल और ओली । यह क्या हो रहा है ? वी.पी., गणेश मान और भट्टराई, गिरजा, गणेश मान और भट्टराई, रामचन्द्र, सुशील और देउवा । ये त्रिमुर्ति नहीं तीन टिकट महाविकट हैं । अव एक मुर्ति चाहिए । वावुराम भट्टराई ने इन तीनों त्रिमुर्तियों को ऐसा धत्ता वताया कि वे मुँह ताकते रह गये । अव उनको कुछ सुझ नहीं रहा है कि वे क्या करें ? रामवरण की ओर मत देखो । वह कटुवाल तो मिलेटरी था कि उसने हमारी ओर देख लिया और हमने उसकी ओर देख लिया । अव आप तो त्रिमुर्ति हैं, कोई मेलेटरी थोडे हैं ? नहीं नहीं हम नहीं देखेंगे । आप सहमति वनाओ नहीं तो दो वर्ष और मुझे रहने दो । इतनी जल्दी चुनाव पर तुल गये हैं । वे उनको छोडेंगे नही । आखिर हमारा नमक खाया हुआ है, हमने उन्हे पाल-पोषकर वडा किया है । रामवरण वावुका कहना है कि वडा किया है तो किया है अव हम सवसे वडे हैं ।

DO NOT COPY

वेचारे त्रिमुर्ति क्या करें ? चुनाव में जायें तो खैर नहीं, मधेशी कुण्डली मार कर वैठे हैं । डरकर वे फिर अपना वही वाँसुरी के तान छेडने में लग गये हैं । आन्दोलन की तीथि भी घोषित हो गयी है । इनको कुछ अक्ल है कि नही ? मधेशी इतना जाग गये हैं कि अव वह तुमसे ज्यादा ही जाग गये हैं । आन्दोलन कौन से परिवर्तन के लिए ? सत्ता परिवर्तन के लिए ? तो फिर वह परिवर्तन वैठा है दरवार में । वही परिवर्तन हो जायेगा । नहीं भाई हम आन्दोल नहीं करेंगे । वावुराम तुम ही ठीक है । वैठे रहो । देखते हैं कि कौन क्या करता है ? हम तुम्हारे साथ है । अव माओवादीयों को लगता है कि मधेशी नेताओं से ही पार लगेगा । कम्युनिष्टों के म्यान में दो तलवार नहीं रहेंगे । पर भुल जाइए । सरकार पार लग जायेगी, चुनाव पार नहीं लगेगा । अव मधेशी,मधेशी को छोडकर किसी को भोट नहीं देगा । वह तुम्हारे साथ रहेगी, यह हो सकता है । संविधान सभा विघटित हो गया तो क्या हुआ ? हम तुम्हारे साथ हैं । संविधान सभा विघटित नहीं होगा तो क्या होगा ? सव जैसे पागल हो गये हैं । कोई कर्णाली कह रहा है, कोई पश्चिमांचल कह रहा है । कौन इसको पागल वना रहा है ? पुनरुत्थानवादी, प्रतिगामी ? पर तुमने भी तो देखा नहीं । कमल थापा, सुर्य वहादुर थापा, कमाल है भाई , एक वी.पी. को फाँसी देने वाला, एक माओवादीयों को फाँसी देने वाला । तुमने उसको भी गले लगा लिया । इसलिए तो यह होगा । वह तो अच्छा हुआ कि संविधान सभा भंग कर दिया नहीं तो पता नहीं क्या होने वाला था ? अभी भी पता नहीं क्या होने वाला है । अव वे मुडकर संविधान नहीं वना का रट लगा रहे है । जव संविधान वन रहा था तो भी मंजुर नहीं । जव संविधान नहीं वना तो भी मंजुर नहीं । रथ यात्रा निकालेंगे । भाई चाहते क्या हो ? जो चाहते हैं वह क्या देंगे ? कृष्ण प्रसाद भट्टराई देने के लिये रटते रटते आउट हो गये और संसार से भी आउट हो गये । दुसरी त्रिमुर्तिया ँ विन्ती पत्र

देती रहती हैं देने के लिये । एक तुम हो जो नहीं देते । नारायणहिटी से निकाल वाहर किया । हम गंदे अशिक्षित लोग तुहारा साथ देंगे,देते रहेंगे । यह समय की मांग है । इसे अव कोई शक्ति रोक नहीं सकती ।

पर तुम भी थोडा खयाल रखो । सवको तो तुमने अव तक देख लिया होगा । एक मधेश एक प्रदेश की वात मान जाओ । साँप सिंढी के साँप की तरह इसके झापा,मोरंग,सुन्सरी,चितवन,कैलाली,कंचनपुर आदि खानेका अपना प्रोग्राम कैंसिल करो । यह तो कमर टुटा हुआ मधेश होगा । देखो भाई हम तुहारे साथ हैं । अगर तुम हमारी कमर तोडोगे तो हम भी तुहारी कमर तोड देंगे । हम तो क्या तुहारी कमर तोडने के लिये ये विपक्षी तैयार वैठे हैं जिसकी कमर वचाने के लिये तुम प्रयत्न कर रहे हो । अगर हमारी कमर टुट जायेगी तो तुहारी भी नहीं वचेगी । जो कोई भी हो हमें वर्वाद करने की वात छोड दो नहीं तो शरिर के आधे हिस्से की जव कमर टुट जायेगी तव पुरा शरिर निकम्मा हो जायेगा । अपनी स्वास्थ्य की पुकार सुनो और अपने को स्वस्थ रहने दो । आन्दोलन की तारीख तय हो चुकी है : २ गते मंसिर । जरा जल्दी हो गया । १ गते पौष रख देते तो अच्छा था । उसी दिन इस देश मे नयाँ परिवर्तन हुआ था । उसी दिन नयाँ संविधान वना था । उस परिवर्तन ,उस संविधान को जल्दीवाजी में मंसिर २ गते कर दिया । जरा भुल हो गयी । अपनी भुल सुधार करिये । नेपाल का झंडा तो अभी वही है ही । संविधान में वही हो जाय तो कितना अच्छा ? पुर्वांचल,पश्चिमांचल सव तो है ही । ये वेकार के नये विभाग खोलने से क्या फायदा ? आईये आईये ,मधेश तो सदियों से यह वोक कर चला है । वह उसको अस्वीकार नहीं करेगा । आखिर हम सेवक जो ठहरे । देश का सेवक ,सच्चा सेवक । आप जो कहिये हम मानेंगे । आन्दोलन कहिये,आन्दोलन करेंगे । नही कहिये नहीं करेंगे । उठ कहिये,उठ जायेंगे । वैठ कहिये,वैठ जायेंगे ।

DO NOT COPY

यह समझ क्या रखा है आपने ? आन्दोलन को अपने पाकिट में लेकर चलते हैं ? विराटनगर पहुँचे और एक पाकिट से आन्दोलन निकाल दिया । वीरगंज पहुंचे और दुसरे पाकिट से क्रान्ति निकाल दी ? आन्दोलन,क्रान्ति जव चाहे हाजिर । हद हो गयी भाई । हमारी समझ में नहीं आती । आईये समझाईये भाई । हम तो भगवान से रोज यही प्रर्थना करते हैं ,हमारे प्राण वचाईये । पर भगवान है कि सुनता नहीं । हम छुपे कहाँ ? भाग कर कतार ,मलेसिया या कही भी चले जाने को मन करता है । जान वची तो लाखों पाये इन आन्दोलनो से । पर वहाँ भी प्राण नहीं वचते । जो वचते हैं वे जिन्दा मरते हैं । कोई उपाय नहीं है भाई । चलो अव आन्दोलन के आगे हथियार डाल दो । हाम हार गये आन्दोलन महाराज । आईये हमे ले चलिये । जहाँ ले चलिये,हम चलते हैं । राजा का राज पल्टाना है,हम हाजिर हैं । वावुराम का गणतंत्र पल्टाना है, हम हाजिर हैं । हम आपके गुलाम हजुर हम हाजिर हैं ।

सरकस का वाघ एक ही सटकार में दाँत निपोरने लगता है । हम तो ओ भी नहीं हैं । हम तो ओ हैं जो कालिख चुना पोत कर आपके सामने हाजिर होते हैं । नही समझे ? अरे वही सरकस का जोकर । नाच में भी होता है । सिनेमा में भी होता है । पर पता नहीं सरकस में भी क्यो होता है ? सरकस तो वहादुरी का खेल है । पर वहाँ भी होता है । सव जगह होता है । जनता भी उसी तरह सव जगह होती है जोकर । कौन कहता है कि जनता मालिक होती है ? आपको सुचित किया जाा है कि जनता जोकर होती है । वह जोकर नहीं जो एका को मार देता है । वह जोकर जो वावन पत्तों के साथ रहता है और खेलते समय उसे अलग रख दिया जाता है । तुम देखते रहो कि खेल कैसे होता है । वह वेचारा चुपचाप सव देखते रहता है । अव यह किस्सा छोडिये । आन्दोलन होगा या चुनाव होगा ,देखा जायेगा । अव जरा दुसरी ओर चलते हैं जहाँ कई आन्दोलनों के वाद

भी कुछ नहीं हुआ । न धर्म न अर्थ । जिन्हे माया मिली न राम ,वह है जनता तमाम । वोलिये प्रैम से जय मातृभुमि । इसी ध्वनी के साथ आज का प्रवचन समाप्त हुआ ।

१६

सरोज हवाई जहाज से उड गया । सीता की हालत फिर वही : पुनर्मुसिको भव । उसको पता नहीं था कि उसके सारे खेत विक गये । वह भी एक दिन पता चल गया । रात दिन काम करते करते वह थक जाती थी । एक दिन उसने झुँझला कर कह दिया :

,, मैं अव काम नहीं कर सकती । अव मैं अपना खेत लेकर अलग रहुँगी । ,,

इस वार उसने वेंचने की वात नहीं की । एक वार उसका परिणाम वह भोग चुकी थी । पर वह अलग तो रह सकती है ।

,, ओ तो तुम अलग रहोगी ? खेत कोई हो तव न ? ,, सगुनी ने ठहाका लगा कर कहा । अपनी भावो से ठठ्ठा कोई नहीं करता । पर उसने ठठ्ठा करते हुए कहा ।

,, क्यों हमारा वाकी का खेत तो है ? १० कठ्ठा जमीन ही तो सरोज वेंच कर ले गया है ? ,,

,, १० कठ्ठा नहीं महारानी । हमारा वेटा सभी जमीन वेंच कर ले गया है । वह तुहारा गोद लिया हुआ वेटा हुआ तो क्या ? वह हमारा वेटा है । ,,

सीता के पाँव तले की जमीन खिसक गयी । क्या मेरी सारी जमीन विक गयी ? उसने कहा

,,सरोज मेरा वेटा है या आपका इसे छोडिये । इसका फैसला भगवान करेगा । पर उसने तो कहा था कि उसने १० कठ्ठा जमीन ही वेंची है ।

,,विदेश यात्रा क्या १० कठ्ठा जमीन से हो जायेगा रानी ?

DO NOT COPY

दस्तखत तुमने सभी पर किये । ,, यह उसके वहन का जवाव था । सीता अपनी सगी वहन के मुख से रानी कहने पर अवाक हो गयी ।

,, हाँ हाँ सरोज मेरा वेटा नहीं तुहारा ही वेटा है । ले जाओ,ले जाओ ,फुर्र वह गया विदेश में । ,, उधरसे सगुनी ने अपना व्यंग्य वाण छोडा ।

अव सिता पुरी तरह से निढाल हो हो गयी और कहा :

,,तो क्या यही करने के लिये आपने उसे मेरा दत्तक पुत्र वनाया था ? मैंने भी कहा कि अपनी सगी वहन का लडका है,अपना ही लडका है । ,,

,, हाँ महारानी,यही करने के लिये मैंने वनाया था । तो क्या नागमणि के लडके को वनाता ? आधा सिस्सा उसे दे देने के लिये ? तुमने मुझे समझा क्या है ? गाँव भर के लोग मुझे समझते हैं । कहते हैं कि सिरखिण्डी वाली वडी होसियारिन होती हैं । अवधापुर के साथ होसियारी नहीं चलेगी । जाईये श्रीखिण्डी में अपनी होसियारी दिखाईये । जाईये सामसुन्दर के पास जाईये । वासुदेव नुनु के पास जाईये । आपको होसियारी सिखाते हैं । वे जानते नहीं कि हम होसियार ही नहीं लुच्चा भी हैं । सारे गाँव के लोग जानते हैं । ,,

सीता अव इस लुच्चे के साथ वात करना नहीं चाहती थी । अव वह समझ गयी । वह चुप हो गयी । चिन्ता ,दुख और काम से अव उसका स्वस्थ्य गिरने लगा । उसके खाने,पीने रहने का कोई खयाल नहीं करता । प्रकृति अव अपना खेल दिखाना शुरु कर दिया । उसे फिर से खाँसी हो गयी । उसने तुलसी का काढा , एकाध खाँसी की सिसी और सिटामोल से अपना इलाज स्वयं करने लगी । पर उसकी खासी और वुखार ठीक होने का नाम ही नहीं ले रहा था । आखिर उसके खिसे में जितने रुपये

DO NOT COPY

थे उसे निकाल कर वीरगंज के डाक्टर के पास वह अकेले गयी । एक्स रे वगैरह करके डाक्टर ने उसे टी.वी. ठहराया । वह औरत अव विल्कुल निराश हो गयी । अव क्या होगा ? भगवान ने यह क्या किया ? आदमी से लेकर भगवान तक इतना निष्ठुर होता है ? वह चुपचाप वीरगंज से आयी और सिरखिण्डी जाने के लिये सामान तैयार करने लगी ।

,, कहाँ जा रही हो ? ,,जेठ ने पुछा ।

,, सिरखिण्डी जा रही हु । ,,

,, जाओ जाओ खुशी से जाओ । वीरगंज गयी थी । मामुली सर्दी जुकाम के लिये वीरगंज । पैसे अधिक हो गये हैं ? क्या कहा डाक्टर ने ? ,,

,, कुछ नहीं कहा । मैं अपना खेत वेंचुगी और अपना इलाज करवाउँगी ,,

,,अच्छा तो अव कहाँ का खेत वेंच कर इलाज होगा ? ऐसी भी क्या विमारी हो गयी ? इन औरतों को समझना भी मुश्किल है । काम नहीं करने का उपाय कोई उनसे सिखे । ,,

,, कुछ भी हो आपको इससे क्या मतलव ? ,,तभी पेटी के पाकेट में रखे एक ताजे पुर्जी पर सगुनी का ध्यान गया । उसने उसे निकाल लिया । अव जेठ के हाथ से वह पुर्जी कैसे छिने ? जेठ वेशर्मी हो गया तो वह भी वेशर्मी हो जाय ? वह जानने देना तो नहीं चाहती थी पर जेठ के हाथ से पुर्जी नहीं छिन पायी । जेठ ने पुर्जी को देखा । डा.सुशील चौधरी का पुर्जी था । उसमें साफ लिखा था टी.वी. और एक महिने की दवा लिखी थी ।

,, हाँ हाँ टी.वी. वाप रे वाप कितने दिनों से है हमे पता भी नहीं । हमको भी नहीं हो गया हो । इसकी सगी वहन सारे वर्तनों को आग में झौंस कर साफ करो रे । किटाणु नष्ट हो

DO NOT COPY

जाय । उसने फिर सीता से कहा
,,जाओ जाओ जल्दी जाओ । अव तुहे यहाँ रहने भी नही दुंगा । भाग यहाँ से । टी. वी. वाप रे वाप । ,,
सीता कुछ भी न वोली । वहाँ से भाग गयी सिरखिण्डी । फिर उसका वही वसेरा । धिरे धिरे उसके भाई भतीजा को पता चला कि इसको टी.वी. हो गया है । कौन सेवा करेगा ? भागो यहाँ से अपने खेत में । इसकी सेवा कौन करेगा ? पर उसकी दुसरी भाभी थोडी दयालु थी । उसने कहा दुर इसके खेत में एक घर वना दो । हम इसको खाना दे आयेंगे । टी.वी. नहीं मानो सीता को कोढ हो गया हो । पुराने जमाने में कोढी गाँव से वाहर किसी झोपडे मे रख दिया जाता था । अछुत ,डोमों जैसा । किसी का सम्पर्क नहीं हो सके । उसी तरह सीता को दुर खेत में रख दिया गया । झोपडी वनाने में उसके भतिजे ने मदद की । अव वह औरत कहाँ जाय ? ससुराल में कोई जगह नहीं । उसके दत्तक पुत्र ने डाँका डाल दिया । अव उसके लिये इस झोंपडे को छोड कर और कोई जगह नहीं ।

एक दयालु भाभी रोज उसके लिये खाना पहुँचा जाती थी । भतिजे को दुख था कि सीता ने उसे कुछ नहीं दिया । हम क्यों सेवा करें ? उधर मोगलान में कम गहराई में ही पानी निकल आता है । भतीजे ने एक कृपा और की । उसी खेत में उसने एक हैंड पाइप लगवा दिया । सीता को पानी के लिये कहीं जाना नहीं पडा । भाभी रुखा सुखा पहुँचा जाती । उसे खाकर सीता पाईप चला कर खुद पानी पी लेती थी । टी.वी. के लिये पौष्टिक आहार चाहिये । उसे वह कहाँ मिले ? वकरी और गाय को उसने वेंच दिया । कुत्ते को उसने नहीं वेंचा । उस झोंपडी में वह कुत्ता ही उसका साथी था । भतीजा उसकी दवा लाकर फेंक देता था । उसकी विमारी ठीक हो इसकी दिलचस्पी वह

नहीं लेता था ।

आदमी मान भी जाये पर प्रकृति नहीं मानती । वह यह नहीं देखती कि कौन अमीर है और कौन गरीव । वह यह भी नहीं देखती कि कौन दुनियाँ से पीडित है और कौन नहीं । उसे किसी की पडिा नजर नहीं आती । वह भी अदालतों की तरह है । अदालत को सवुत चाहिये । प्रकृति को नित्य का नियम और उपचार चाहिये । प्रकृति ने सीता की पीडा को नहीं देखा । सीता को खाने पीने का कोई नियम नहीं था । उपचार के लिये कारगर दवाईयाँ नहीं थी । अव शरिर अशक्त होने लगा । धिरे धिरे वह उठ कर नित्य क्रिया करने में भी असमर्थ हो गयीं ।
अव जाकर उसके भतीजे को होश आया । यह तो यही मर जायेगी । घर में छलफल हुआ । इसकाक दाह संसकार कौन करेगा ? एक दिन वह डा.सुशील चौधरी से दिखलाने के वहाने सीता को किसी तरह धर्मिनिया स्टेसन लाकर ट्रेन में विठाया और रक्सौल पहुँचा । सीता से वह दुर दुर ही रहता था । रक्सौल से टांगे पर जाना था । टांगे पर उसने सीताको आगे विठाया और खुद पिछे जाकर वैठ गया ताकि उससे सम्पर्क न हो । सीता ठीक से वैठ भी नहीं पाती थी । उसकी वगल में वैठे आदमी ने उसको सहारा दिया । उसे मालुम नहीं था कि सीता को टी.वी. हुआ है । वीरगंज जाकर सभी यात्री उतर गये । उसका भतीजा अव दुसरी सवारी खोजने कहाँ जाय ? उसी टांगेवालेको कुछ अधिक पैसा देकर चीनी मिल से होते हुये सगुनी के घर पर उतार दिया ।
,, हाँ हाँ यह कौन है ? इसे कहाँ ले आया ? इसे तो टी.वी. हो गया है । ले जाओ इसे यहाँ से । ,, सगुनी ने जव तक यह कहा तव तक सीता के भतीजे ने सीता को उतार कर जमीन पर रख दिया था । गर्मी का मौसम था । सीता टुकुर टुकुर देख रही थी । वह नंगी जमीन पर सोयी हुई थी । वैठने की शक्ति उसमें नहीं थी । ,,

,,इसको डा.सुशील चौधरी से दिखलाने लाया हुँ । उन्ही से इलाज चल रहा है । ,, उसके भतीजे ने कहा ।
,,ओ तो इस मुर्दे का भी कहीं इलाज हो सकता है ? सीता के जेठ ने कहा ।
क्हाँ ले जाउँ तो ? इसका घर यही है । ,,
,,ओ तो आप इसका घर खोजने आये हैं ?,, सगुनी ने कहा ।

सगुनी और लँगडे में वकझक होने लगा । खुले दुआर पर इस वकझक को सुन कर कुछ लोग वहाँ चले आये । सीता की सगी वहन अपने खेतों को देखने गयी थी । सवने देखा और पुछा कि यह कौन है ? लोग सगुनी की वात सुन कर छी छी करने लगे । अभी तक वह मर्दमारी है । कैसा आदमी है यह ? अव लोग सगुनी को दुत्कारने लगे । सामसुन्दर को खवर मिली कि सीता मर चुकी है और उसका भतीजा यहाँ पहुँच चुका है । वह एक पल के लिये भौंचक हो गया । उसका भतीजा लोगों के वकझक के वीच नौ दो ग्यारह हो गया । उसका काम यहाँ तक पहुँचाना था । हम डा.सुशील चौधरी से दिखलाने थोडे आये हैं ? वह रक्सौल जा कर ट्रेन पकडा और धर्मिनिया पहुँच गया ।

सामसुन्दर वहाँ गया तो अवाक रह गया । इस कंकाल को तो मुठ्ठी में उठा कर श्मशान पहुँचा देगा कोई । पचाठी वनाने की क्या जरुरत ? नागमणि ने कहा कि कहते थे लोग कि वडी सती सावित्री है । फिर काहे इसका हाल ऐसा हो गया ? इस पर सामसुन्दर क्या कहे ? कि ऐसी हालत तो आजकल सती सावित्री की ही हो सकती है । सीता सभी लोगों के वीच टुकुर टुकुर ताक रही थी । उसने सामसुन्दर को भी देखा । उसने पहचाना कि नहीं पता नहीं ।
,,भाभी यह क्या हो गया ?,, सामसुन्दर ने पुछा ।

,,   ,,

DO NOT COPY

,, तुम सुन रही हो ? ,,

,, ,,
कोई जवाव नहीं । वह केवल टुकुर टुकुर देख रही थी ।

अव जाकर सामसुन्दर ने हिम्मत और विद्रोह किया । इतने दिनों तक वह चुप था । उसने आज हिम्मत की है । भाभी टुकुर टुकुर देख रही थी । सामसुन्दर सभी लोगों पर उवल पडा । उसने हाथ उठा कर कहा कि सुगुनी तुम हत्यारे हो । आज मैं भाभी को इलाज कराने ले जा रहा हुँ । रोको मुझको अगर हिम्मत है । उसने उसी समय उसे गोद में उठाया और वीरगंज चल दिया । भाभी उसके गोद में पडी टुकुर टुकुर देख रही थी ।

,, हाँ हाँ ले जाओ । वडे आये हैं दयावान वनने ।,, यह कह कर सगुनी ने सभी लोगो को अपने अपने घर जाने को कह दिया । खुद खाना खाने चला गया । सीता की सगी वहन जव खेतो. से आयी तव पता चला । तव तक सवकुछ वीत चुका था ।

सामसुन्दर सीता को पिपरा रोड के किनारे रख कर टैम्पु का इन्तजार करने लगा । टैम्पु कुछ ही देर में आ गया । वह उसे उसी के द्वारा डा.सुशील चौधरी के यहाँ ले गया ।

,,डाक्टर साहेव,इसे भर्ती कर लिजिये नहीं तो यह नहीं वचेगी,,

,, हाँ हाँ कोई पुर्जी है ? ,, डाक्टर ने सीता को नहीं पहचाना । सामसुन्दर ने कहा ,, पुर्जी कोई नहीं है । पर यह आप ही से इलाज करा रही थी । ,,

,, अच्छा तो आप भर्ती करिये । मैं आकर वही देख लुँगा ,, डाक्टर ने पुर्जी लिख कर उसे अस्पताल के इमर्जेंसी में ले जाने को कहा । वहाँ से भर्ती होकर सीता टी.वी. वार्ड में चली गयी । जव तक सुशील चौधरी नहीं आते तव तक सीता को पानी का वोतल चढाया जाने लगा । फिर डाक्टर आये और सभी टी.वी. के मरीजो का राउण्ड लिया । सीता के लिये एक्स रे और सभी आवश्यक जाँच लिख दिये

गये । उसका डाईट भी लिख दिया गया । सामसुन्दर उसकी सेवा में जी जान से जुट गया । जव तक जाँच वुझ होकर सभी आवश्यक दवायें सुचारु नहीं हो गयी तवतक वह घर नहीं गया । उसने यह हिम्मत पहले क्यों नहीं की ? सीता उसकी तरफ टुकुर टुकुर ताकती थी मानों कह रही हो

,, का वर्षा जव कृषि सुखाने ,,

अव सामसुन्दर के घरवालों को भी इसमें कोई एतराज नहीं था । अव भला क्या एतराज हो सकता था ? क्या सीता जवान है कि सामसुन्दर की औरत उसका केश पकड कर झुल जाय ? और अपने घर में कदम नरखने दे ? वह वेचारी मर रही है अव । कोई वात नहीं ,कोई एतराज नहीं ।

पुरे तीन कहिने के परिश्रम स सीता वच गयी और वातचीत करने लायक हो गयी । एक दिन उसने ही कहा :

,,आखिर आपने हिम्मत कर ही दी देवर जी । ,,

भाभी अव तुम कुछ मत कहो । मेरा कलेजा छलनी हो जायेगा । अव तुम यहाँ से चल कर मेरे घर में रहोगी । अव उन दरीन्दों के यहाँ तुहे नहीं जाने दुंगा । ,,

,, का वर्ष जव कृषि सुखाने ? ,,

,,क्या मतलव भाभी ? ,,

,, यही कि जव ले जाना था तव नहीं ले गये । अव ले जाकर क्या करेंगे ? अव क्या दे सकुँगी आपको ? ,,

मैं कुछ लेने के लिये तुहारी सेवा नहीं की है भाभी । उनलोगें ने तुझे जान से मार देने की कोई कसर नहीं छोडी । तुमने मुझे पहले खवर क्यों नही की ? ,,

क्या खवर करती ? यही कि मुझे टी.वी. हो गया है ? आकर मुझे ले चलिये ? क्या आपके घरवाले मान जाते ? एक टी.वी. की मरीजको जितना और जगह दुत्कार मिला वह आपके यहाँ भी

DO NOT COPY

मिलता। इसलिये मैंने खवर नहीं की। ,,
,, मरने के लिये अपने आप को चुपचाप छोड दिया। वोलने तक की भी शक्ति नहीं थी। ,,
मैं जिन्दा ही कहाँ थी देवर जी। मैं मर भी जाती तो किसको इसका परवाह है ? आपने मुझे वचा कर और दुख भोगने को मजवुर कर दिया। मैं मर भी जाती तो दुखों से पार पा जाती। ,,
,, ऐसा नहीं कहते भाभी। क्या पता भगवान तुझे अन्तिम समय में सुख से देखना चाहते हों। कल डाक्टर आयेगा और तुम्हारी छुट्‌टी हो जायेगी। फिर तुम हमारे साथ हमारे घर चलोगी। ,,
,, अच्छा देवर जी जिन्दगी भर तो सुख की राह देखती रही। अव यह सुख भी देख लुंगी। ,,
दुसरे दिन डाक्टर आया। सीता को अस्पताल से छुट्‌टी मिल गयी। दोनों रिक्सा पर वैठ कर वातें करते हुये आये। सगुनी के दरवाजे पर वे दोनों उतर गये। सगुनी ने उसे देखा। उसकी सगी वहन ने उसे देखा। उन्हे लग रहा था कि वह जिन्दा कैसे हो गयी ? लोग वाग उन्हे देखने इकठ्ठा होने लगे मानों सीता और सामसुनदर की वारात आयी हो। सामसुन्दर ने सीता के साथ घर में प्रवेश किया मानों दुलही ने दुलहे के साथ प्रवेश किया हो। उनकी शादी आज ही हुई हो। हाँ यह एक अनमोल शादी ही थी। सामसुन्दर की पत्नी ने उसका स्वागत किया। अव उसको कोई शिकवा शिकायत नही थी। देर से ही सही कुँजा देवी की तरह सीता को उस घर में जगह मिल गयी।
इलाज चलने लगा। सेवा सुश्रुसा एवं खेतों की ताजी हवा से नौ महीने में सीता पुरी तरह स्वस्थ हो गयी। अव उसकी दवा को डाक्टर ने वन्द कर दिया। टी.वी. आजकल भयावह नहीं होता। लोगों ने उसे भयावह वना दिया था और सीता को जिन्दा मार डाला था।

अव सीता की आँखो मे चमक आ गयी । वह जवानी की तरह चहक तो नहीं सकती थी पर रसहीन ,सुनी भी नहीं थी । श्वेत धवल केश भी अव उसके चेहरे को इन्दिरा गाँधी की तरह तेजिला वना दिया था । अव वह विधवा नहीं थी, सधवा हो गयी थी । उसकी सधवा होने की चाह अव जाकर पुरी हुई थी । परन्तु रामचन्दर का फोटो वह हमेशा अपने पास रखा करती थी । उसी के फोटो से गाँव के लागो को पता चला कि वह कैसा था । सीता उस फोटो को वडी जतन से रखती थी । अव केवल वह उस फोटो और अपने कुत्ते को ही प्यार करती थी । गाय और वकरीयाँ तो विक चुकी थीं । अव एक आदमी आ गया था सामसुन्दर । नहीं,वह तो जवानी से ही उसे प्यार करती है । सीता ने अव कभी भी नैहर नजाने का प्रण कर लिया । अव न उसके नैहर का १० कठ्ठा जमीन का मोह था और न सरोज द्‌वारा विक गयी जमीन का मोह था । अव तो उसकी दौलत उससे भी कहीं अधिक हो गयी थी ।

उसने अपने कुत्ते को नैहर से मंगवा लिया था । यह खवर कि सीता विल्कुल ठीक हो गयी है जव उसकी भाभी एवं भतीजे ने सुना तो उन्हे आश्चर्य हुआ । सीता की सगी वहन कहने लगी कि वह मुँझौंसी तो पहले से ही सामसुन्दर के यहाँ आती जाती थी । यह प्यार तो पहले ही चल रहा था । वह इस वुढापे को भी जवानी की तरह वयान कर रही थी । सामसुन्दर खुश था कि देर से ही सही उसकी मानवीयता की जीत हुई । माना की सीता की विमारी और मौत ने ही यह जीत दिलाई तो क्या हुआ ? जो भी हो जीत तो हुई । सामसुन्दर की औरत अव दुनियादारी से निस्पृह हो गयी थी ।

अव सीता और सामसुन्दर रोज रोज मठ की आरती में चले जाते थे । सामसुन्दर को ऐसा लगता जैसे उसका वचपन लौट आया हो । सीता को वहाँ रोज रामचन्दर के दर्शन होते थे । एक वे जो मन्दिर में स्थापित थे दुसुरे वे जो उपर फोटो में झँकते थे जिस

DO NOT COPY

फोटो को उतरवा कर उसे सामसुन्दर से वडा वनवाया था । कभी कभी सामसुन्दर की औरत भी आरती में शरीक होने जाती थी । पर उसका ज्यादा मन घर में ही पुजा पाठ में लगता था । अयोध्या के वावा दिव्य दास सीता के गुरु थे । उनसे यदा कदा सत्संगत भी होता रहता था ।

प्रौंढावस्था का इससे अच्छा दिनचर्या दुसरा नहीं हो सकता था । इस वीसवीं शताव्दी में भी ....

.....................o..........................

१७

सामसुन्दर और सीता दोनों आरती से लौट कर अपने वागीचे में टहलते हुये घर आते । इस वागीचे को उसके दादा चौधुर राउत ने खरीदा था । इस तरह रोज उनका अच्छा खासा व्यायाम हो जाता था । इस व्यायाम ने सीता के मायुस एवं मुरझाये हुये शरीर में एक उमंग और उत्साह भर दिया । टहलते हुये वे देश दुनियाँ की वातें कर लेते थे । तीन विगहे का घनघोर जंगल की तरह वह वागीचा था जिसमे आम,अमरुद,जामुन,लिची आदि सभी प्रकार के पेड लगे हुये थे । वगल में राणाकालीन उनके किसी गुरु का भी वडा वागीचा था । उसमें कलमी आम के पेंड लगे हुये थे । सामसुन्दर के वागीचे के पेंड कलमी नहीं विजु के थे । उसमें रोहिणी नक्षत्र में आम पकना शुरु होता तो हथिया नक्षत्र तक आम पका हुआ मिलता था । राणाओं के समाप्त होने के वाद वगल का वागीचा विकी होक कट चुका था । वहाँ जगह जगह पेंडो के कटे हुये जड राणाओं की उजड चुकी सत्ता की कहानी कहते थे । सामसुन्दर का वागीचा अभी भी अपने पुरे वजुद के साथ मौजुद था । जेठ से असोज तक तो उसकी रखवाली के लिये एक फुस की मडई वना दी जाती थी । पर वाकी समय वहाँ रखवाली नहीं होती थी । गाँव भर के लोगों के लिये वह खुला रहता था । कोई भी आकर पके हुये फलों को तोड कर खा

DO NOT COPY

सकता था । उससे व्यापारियों की तरह पैसा कमाने का काम कभी नहीं हुआ । उस जमाने से इस जमाने तक भी वही सिलसिला चल रहा था ।

एक दिन इसी वागीचे में सामसुन्दर और सीता घुम रहे थे । दोनों मौन थे । सीता ने ही इस मौन को तोडा :

,,क्या सोच रहे हैं,देवर जी ? ,,

,,क्या तुम अभी तक मुझे देवर जी से ही सम्वोधित करती रहोगी ? अव तो मैं ..... ,, इतना कह कर सामसुन्दर वीच में ही रुक गया ।

,, मैं समझ गयी कि आप क्या कहना चाहते हैं ? पर मैं आपको शुरु से ही देवर जी कहती आयी हुँ । मुझे यही अच्छा लगता है । फिर मैं तो किसी और की हुँ । मेरा पति तो ये हैं । ,,

उसने अपने पति का फोटो निकाल कर दिखलाया । उसने उस फोटो की कई कई काँपियाँ वनवा ली थी जिसको उसने पिपरा मठ से हासिल किया था । उसमें से एक को वह हमेशा अपने पास रखा करती थी ।

,, अच्छा तो यही तुहारे पति हैं ? तो फिर मैं कौन हुँ ? ,,

,, मेरे देवर जी , मेरे पति के छोटे भाई । मेरे देवर जी पति तो इस दुनियाँ से चले गये पर मेरे दिल से नहीं जायेंगे ,। ,,

,, मान लो तुम मुझसे शादी नहीं करती किसी और से करती ता ? उस समय भी उसे देवर जी ही कहती ? मैं अपने वडे भाई का सम्मान करता हुँ । पर दुसरा तो नहीं करता ? ,,

,, आप वडे भोले है देवर जी । मैं दुसरे से शादी करती ही नहीं । इसलिये तो मैंने किया भी नहीं । दुख जो हुआ उससे वचाकर लाने वाले आप ही हैं । मैंने दुख उठाया पर टुटी नहीं । आदमी कुछ उत्सर्ग न करे सके तो यह जीवन किस काम का ? सीता अगर पति के सिवा किसी और को वरण करती तो उसे कौन याद करता ? मौज मस्ती करती और दुनियाँ से विदा हो जाती । कोई नाम लेने

DO NOT COPY

वाला नहीं होता । उत्सर्ग ही जीवनका,अमरत्व का सार तत्व है । ,,
,, पर तुमने तो पति को छोडकर मुझको चाहा है । ,,
,, चाहा तो है देवर जी पर यह एक वनदोवस्त भी है । यह केवल आपको ही मंजुर हो सकती थी । मैं किसी देह सुख के लिये लालायित नहीं थी । इसलिये इस प्रौंढावस्था में भी आपको वरण किया । मुझे इस पुरुष समाज में जिन्दा रहना था । इसके लिये आप से अच्छा कोई नहीं था । उस घर की इज्जत के लिये आपसे अच्छा कोई नहीं था । आपके अभाव में मेरी क्या दुर्दशा हुई उसे आपने भी देखा है । आज आपके चलते मेरा शरीर खिल गया है । मैं नौजवान हो गयी हुँ । ,,
,, तो क्या इस शरीर का उत्साह केवल वन्दोवस्त से है ? ,,
,, नहीं मैं आपको वेहद प्यार भी करती हुँ । पर मैं अपने पति को आपसे ज्यादा चाहती थी । वह केवल एक शादी और वन्दोवस्त ही नहीं थी वल्कि उनके एक ही दर्शन में मुझे उनसे प्यार हो गया । ,,
,, लेकिन मैं तो तुमसे प्यार करता हुँ ,तुम मुझसे नहीं करती ? ,,
,, कौन कहता है कि नहीं करती हुँ । मैं जानती थी कि आप मुझसे प्रेम करने लगे थे । इसलिये तो मैं आप से वार वार कहती थी कि आपने हिम्मत नहीं की । नहीं तो मै क्यों कहती ? एक औरत अपने प्रेमी को वहुत जल्दी पहचान लेती है । मैंने आपको पहचान लिया था । आपके प्रेम को पहचान लिया था । ,,

दोनों टहलते जा रहे थे और वातें भी करते जा रहे थे । सीता का कुत्ता हमेशा उसके साथ रहता था । सीता की इतनी उमर भर के दौरान कितने कुत्ते मर गये पर सीता फिर दुसरी पाल लेती थी । कुत्ता पालना उसका एक शौक था । सामसुनदर ने कहा :
यह कुत्तों का शौक तुमने कव से पाल लिया ? मैं इसे पसन्द नहीं करता । पर मेरे दादा भी कुत्ते के शौकीन थे । उनके मरने के वाद वह उनके दाहसंस्कार में नदी घाट में गया । उसके वाद वह लापता

DO NOT COPY

हो गया। फिर पता नहीं कहाँ से उनके तेरहवे दिन की कामक्रिया में वह वहुँच गया। कामक्रिया का भोज खाया और सदा के लिये कहाँ गायव हो गया पता नहीं। फिर कभी लौट कर नहीं आया। ,,

,, ये कुत्ते आदमी से कम कुत्ते होते हैं देवर जी। आदमी तो पहला नंवर का कुत्ता होता है। आदमी कुत्ता होता है, कुत्ता कुत्ता नहीं होता। इससे अधिक स्वामी भक्त कौन हो सकता है ? इस कुत्ते ने सुख दुख सभी में मेरा साथ दिया है। जव सभी मुझसे वेरुख हो गये ,यही मेरे साथ रहा। यह मेरे सुख दुख का साथी है। सुनते हैं कि दादा ने इस वागीचे को खरीदा था। सुनते हैं कि उनकी पत्नी भी मेरी तरह थी। ,,

,, हाँ उनकी पत्नी का नाम कुँजा देवी था। पर वह तुमसे ज्यादा खुशनसीव थी। उसे विधवा होने पर भी सवने स्वीकार किया। पर तुम्हे तो मर्दमारी कहकर नजाने कितने सितम ढाये। उसमें और तुझमें यही समानता है कि दोनों को देवरों ने स्वीकार किया। ,,

इस तरह दोनों में चर्चायें होती रहती थी। वे किसी विषय में इतने जानकार नहीं कि उसका गहन वक्तव्य देते पर जो सिधा एवं सरल परिभाषा उनके साथ थी वे एक दुसरे से कहते और वाँटते थे। कभी टहलते टहलते वे घर चले आते थे। कभी कभी मधेश सेवा अश्रम में चले जाते थे। वहाँ भी उनको सुकुन मिलता था। थोडी देश विदेश की जानकारियाँ होती थी। सीता कुछ राजनेताओं से परिचित थी पर राजनीति से परिचित नहीं थी। वहाँ उससे उसका परिचय होने लगा था। सामसुन्दर सद्भावना में काम करने वाला तो था ही। दोनों ने मधेश आन्दोलन में भाग लिया था। नवजौवनों ने तो उसे कंधे पर उठा कर मधेश माँ का नारा भी दिया था। वे लोग गाहे वगाहे मधेश सेवा आश्रम में जाते रहते थे और लोगों से मिलते जुलते थे। लोग सद्भावना के उस प्रौंढ व्यक्ति का वहुत आदर करते थे।

DO NOT COPY

मधेश सेवा आश्रम विल्कुल मधेशमय है । इसके संस्थापक जितेन्द्र सोनल का कहना है कि जव तक हम मधेशमय नहीं होंगे तवतक मधेश को अधिकार नहीं मिलेगा । सप्तरी में गजेन्द्र नारायण सिंह को देख कर उन्होने वीच मधेश में इसकी कल्पना की । तव से यह दिन दुना रात चैगुना विकास कर रहा है । थके हुये पथिकों का यह विश्राम स्थल है । खोये हुये लोगों का सुचना स्थल है और मधेशी राजनेताओं का यह तीरथ है ।

पहले तो सीता का मन नहीं लगता था । पर मधेश आन्दोलन के वाद उसका मन चमत्कारिक रुप से इधर झुका था । गाँव के स्तर पर अव वह प्रमुख भुमिका निभाने लगी थी । समय समय पर कलैया में मिटींग होती, सभायें होती । सभी में वे जाते और सुनते रहते थे । वे केवल पिपरा मठ में ही आरती नहीं उतारते थे वल्कि मधेश सेवा आश्रम में जाकर राजनीतिक चेतना की भी आरती उतारते थे । आध्यात्म और राजनीति दोनों के अन्दर उतरती जा रही थी ।

एक दिन जितेन्द्र सोनल ने सुवह सुवह ही प्रवचन देने लगा था । सीता और सामसुन्दर दोनों वहाँ पहुँचे । तवतक थोडा प्रवचन ही वे लोग सुन पाये । जितेन्दर ने कहा :

,, आध्यात्मिक और राजनीतिक चेतना दोनों एक साथ जव घुलमिल जाती हैं तव समाज में वास्तवीक जनकल्याण का जन्म होता है । केवल आधत्मिक चेतना अपने रास्ते एक ओर चली जाती है और उससे समाज वंचित रह जाता है । केवल राजर्नीतिक चेतना अपने रास्ते दुसरी ओर भटक जाती है और समाज वास्तवीक जनकल्याण से वंचित रह जाता है । वुद्ध की अकेली चेतना कहाँ लेजाकर पटक देती है आदमी को पता नहीं । वह केवल विहारों ,मठों और स्तुपों पर भ्रमण करता रहता है । हिटलर की अकेली राजर्नीतिक चेतना समाज और देश को कहाँ ले जाकर पटक देती है पता नहीं । केवल

नस्लवाद के नाम पर लाखों लोगों का कत्ल हो जाता है । एक ओर केवल अहिंसा की ऐसी फिजुल वातें होने लगती है कि अदमी मुँह पर मास्क लगाने लगता है । दसरी ओर हिंसा का ऐसा नंगा नाच होने लगता है कि आदमी और जानवर में कोई पर्क करना मुश्किल हो जाता है । नहीं आध्यात्मिक और राजनीतक चेतना दोनों को एक साथ घुलना मिलना होगा । दोनों जव एक साथ सम्राट अशोक में उतरी तव वह प्रियदर्शी अशोक हो गया । उसके पहले वह एक वर्वर अशोक था । दोनों चेतनायें जव गाँधी में उतरी तो वे महात्मा गाँधी हो गये । स्टालिन जव आध्यात्मिक चेतना को छोड दिया तव रुस नष्ट होने लगा । माओ ने जव आध्यात्मिक चेतना को छोड दिया तव चीन लडखडाने लगा । फिर वाद मे. लोगों ने उसे पहचाना । विना आध्यात्मिक चेतना का राष्ट उत्थान नहीं कर सकता । यह आध्यात्मिक और राजनीतिक चेतना सीता और सामसुनदर दोनों के मन में घुलमिल रही थी । अव वे विलकुल ठीक रास्ते पर थे । मामुली लोग थे । क्या कर सकते थे ? एक ठीक रास्ते पर चल रही जनता में से तो वे थे । यही जव वडे नेताओं में घटित हो जाये तो समाज कल्याण,मधेश कल्याण और राष्ट कल्याण निश्चित है अन्यथा नहीं । ,,

जितेन्द्र सोनल ने आगे कहा :

,, ये जो पहाडी लोग डार्विन के सिद्धान्त के अनुरुप मधेश को हमसे छीन रहे हैं और कैलाली,कंचनपुर,झापा,मोरंग,सुन्सरी,चितवनआदि सभी को कमिक रुप से हडपते जा रहे हैं उनको अगर कह दिया जाय कि ठीक है चलते हैं हम भी डार्विन का सिद्धान्त अपनाने । हम भी अपनी चीज छीन कर रहेंगे तो वे तुरत राष्टभक्ति का पाठ सिखलाने लगेंगे । अरे हम भी तो वही कह रहे हैं कि हमे राष्टभक्त रहने दो । पर तुम्ही नहीं मानते तो हम क्या करें ? हमें डार्विन का सिद्धान्त तो तुम वतलाते हो । डार्विन के सिद्धान्त से मनुष्य का भला

नहीं होगा भाई । गाँधी का सिद्धान्त तो हार कर मानना ही होगा । अगर मनुष्यता को वचाना है तो ठीक है अगर नहीं वचाना है तो कोई क्या कर सकता है ? डार्विन का एक अन्तहीन संघर्ष होगा । ,,

१८

एक दिन जितेन्द्र सोनल ने सामसुन्दर से पुछा कि इस आश्रम के लिये अपना कुछ सुझाव दीजिये । इसमें और कया होना चाहिये ? सामसुन्दर ने तव उन्हे सुझाव दिया कि

,,इसमें एक प्रर्थना गृह होना चहिये जिसमें राम,मुहम्मद और इसा की छवि हो । उसका नाम रामचन्द्र झा प्रार्थना गृह होना चाहिये । रामचन्द्र झा सद्भावना परिषद और पार्टी के संस्थापक सदस्य थे और उन्होने महर्षि अरविन्द की परम्परा कायम की थी । उसमें लोग आये और अपनी अपनी इच्छा के अनुरुप प्राथनायें कर सके ं । नहीं इच्छा हो तो किसी पर जोर जवरदस्ती नहीं । दुसरा यह कि इस मधेश सेवा आश्रम को स्थायी और चीरकाल तक वनाये रखने के लिये उपाय करना चाहिये । यह समुचे मधेश का केन्द्र वना रहे । यह नेपाल के हृदय स्थल में वना है । आज तक यही देखने को मिला कि जो अश्रम वनाते हैं उनके वाद वह समाप्त हो जाता है । ऐसा नहीं होना चाहिये । धर्म की गुँज शकराचार्य की पीठ से गुँजता रहा है आज तक । उसी तरह इसको एक पीठ के रुप में स्थापित किया जाय । आपके वाद आपके द्वारा इसका कोइृ मुख्य वनाया जाय और यह वदस्तुर चलता रहे । ,,

यह सुन कर जितेन्द्र सोनल वहुत प्रभावित हुआ ।

,,गजेन्द्र वावु का सप्तरी सेवा आश्रम उनके वाद उजड गया । अव वह मधेशियों का केन्द्र नहीं रहा । इसे एक केन्द्र का रुप दिया जाय । ,,

जितेनद्र सोनल ऐसा ही होगा कह कर चला गया । सामसुन्दर और

DO NOT COPY

सीता टहलते हुये वापस लौट गये ।

ए ए ए

सत्ता कव्जा,खतम करेंगे
ववुराम गद्‌दी छोडो
एकपा माओवादी मुर्दावाद
हम वजेट नहीं लाने देंगे
संविधान का हत्यारा मुर्दावाद

इसमें सभी पार्टियों के लोग थे । एमाओवादी से अलग हुआ नेकपा माओवादी,नेका एमाले आदि सभी पार्टियाँ इस जुलुस में शामिल थी । और तो और चावोचेस्की की तरह जिसको फाँसी पर लटका देना चाहिये था वे कमल थापा और सुर्य वहादुर थापा भी उसमें शामिल थे । उपेन्द्र यादव का फोरम नेपाल भी उसमें शामिल था । सभी जनता चकित होकर इस खेल को देख रही थी । किस वास्ते यह हो रहा है भाई ? कमल थापा की रथ यात्रा की घोंषण हो चुकी थी । अभी अभी तो कमल थापा के चंगुल से छुडा कर देश को तुम्हारे हवाले किया था । वह भी तुम्हारे साथ है । क्या अव तुम्हारे चंगुल से छुडा कर फिर से उन्हे दे दिया जाय ? ठीक है भाई हम वैसा ही करते हैं । तुमने फाँसी नहीं दी तो नहीं दी । इस वार वे जरुर तुमको फाँसी दे देंगे । न रहेगी वाँस न वजेगी वाँसुरी । फिर से राजशाही २०० वषों के लिये स्वतंत्र । कमल थापा, सुर्यवहादुर थापा इसी ताक में हैं । यह सव उन्ही का किया कराया है । उनकी योजना सफल हो रही है । पर जनता उसे सफल नहीं होने देगी । वह जान गयी है । कार्यकर्ताओं को छोड कर कोई भी इस आन्दोलन में नहीं गया ।

पर काठमाण्डु में यह आन्दोलन सफल रहा । मधेश के लोगों में दहशत थी । २०५० वर्षो में पहली वार ८० लोग संसद में गये । वे वहुमत में न भी हों तव भी निर्णयक भुमिका में हैं । किसी

DO NOT COPY

भी सरकार को वनाने और गिराने में वे सक्षम हैं । इसी निर्णायक भुमिका को वे तोडना चाहते हैं । आने वाले चुनाव में हमारी सहभागिता कम करने की सोच वना ली है । चितवन,सुन्सी,मोरंग,विराटनगर,कैलाली कंचनपुर आदि जिल्लों को वे लोग अभी तक खा चुके । अव मधेश को पुरी तरह खा जाने का प्लानिंग वन चुका हैं । ये पहाडी सव कुछ करते हैं । राजा को गद्‌दी से उतार दिया लोगों ने पर राजा महेन्द्र की मधेश हडपो नीति को लेकर ही चलते हैं । किसी विदेश नीति की तरह वह कभी नहीं वदलता । जितेन्द्र सोनल पुरे मधेश का दौरा कर रहा है । सवको यह वात समझा रहा है । एक वार जाग गया मधेश उसकी सिधी और स्पष्ट वात को समझता जा रहा है । एक भी मधेश की जनता इस आन्दोलन में नहीं उतरी । कुछ अन्य पार्टी के मधेशी कायकर्ताओं ने भी इसमें भाग नहीं लिया । थोडे वहुत उनके कार्यकर्ता ही जुलुस निकालते जो मधेश में टाँय टाँय फिस हो गया ।

पर मधेश को तो मेशा हासिये पर रखा गया आज तक । मधेश के लोग आन्दोलन में नहीं आये तो उससे क्या ? यह हमारा आन्दोलन है । हम इसको सफल करेंगे । पुरे एक महिने का कार्यक्रम है । काठमण्डु के लोग पता नहीं कैसे आन्दोलन में कुद गये ? उधर चीन की आक्रामक नीति मोहन वैद्य किरण को वागडोर सम्भालने की स्वीकारोक्ति दे दी थी । काठमाण्डु की वहुसंखयक जनता भारत का विरोधी और चीन का समर्थक है । ओवामा म्यानमार, कम्वोडिया या कोरिया जहाँ जायें वे चीन को आईना नहीं दिखा सकेंगे । राजा ज्ञानेन्द्र ने चीन का भ्रमण कर अपनी नीति साफ कर दी थी । भारत काँग्रेस को छोड दिया है । उसके राज्य में भारत में आतंक को वढावा मिला । सीमा पर सैकडों की तादाद में मदरसों और मस्जिदों को तो गिरिजा कोइराला के समय में ही वनाया गया । अव पाकिस्तान के आतंकियों का अड्‌डा,नकली नोट के कारोवर का

अड्डा काठमाण्डु हो गया है । नहीं काँग्रेसियों से काम नहीं चलेगा । ये आस्तिन के साँप हैं । अव मधेश के लोगों को पकडना होगा । पकडिये , रोकता कौन है ? पर अव आपका राजपाट गया । मधेशी चिल्ला कर कहते रहे कि वचाओ ,हम अजिंगरों के द्वारा निगले जा रहें हैं । पर कौन सुनता है ? लुम्वीनी से ट्रेन पर चढ कर ल्हासा जाईयेगा । हो सके तो दलाईलामा को भी लेते जाईयेगा । वही शहीद हो जायेंगे । जव मैने कहा तो सुना नहीं । अव आफत आन पडी है तो मधेशी याद आ रहे हैं । अरे पहाडी तो पहले से ही कहते आ रहे हैं कि हम भी मधेशी हैं । हम भी हिन्दुस्तान से ही आये हैं ,उस कुमाउ और गढवाल से । तो आप भी मान गये कि हाँ भाई तुम्ही हमारे हो । ये मधेशी कौन हैं ? ये तमिल कौन हैं ? सिंहली अपने हैं । ये पहाडी ही अपने हैं । अव क्या हो गये अपने ? हमको तो यह अजिंगर निगल रहा है । अव ड्रैगन आपको निगलने की तैयारी कर चुका है । अव पाकिस्तान नाक में दम कर रखा है । जव आफत आयी है तव याद आ रहे हैं मधेशी । यह मधेशी कार्ड अव असफल होनेवाला है ।

काठमाण्डु में आन्दोलन सफल हो गया । वावुराम को गद्दी से गर्दनिया दे दिया गया । उनके गर्दनिया खाते ही मधेशीऔंधे मुँह गिर गये । तव उनको मधेश याद आया । अव तक मधेशी नेता रमझम में मस्त थे । अव उन्होने काठमाण्डु से अपना वोरिया विस्तर ले कर अपने अपने घरों में दाखिल हो गये ।

उसके वाद वही हुआ जो होना था । मोहन वैद्य का प्यादा प्रधानमंत्री वना । उनके मंत्रीमण्डल में सभी विपक्षी शामिल हुये : कमल थापा ,लोकेन्द्र वहादुर आदि सव । अव केवल राजा वकी रह गये थे । चुनाव होने के वाद वे भी आ जायेंगे । सभी राष्टवादियों का जमघट होगा । फिर तो देश का कहना ही क्या ? १५ वर्ष, २० वर्ष तो वाहियात वात है । हम ५ वाषों में ही वह काम कर दिखायेंगे ।

DO NOT COPY

पर सुशील कोईराला और सुर्य वहादुर थापा मंत्रीमण्डल में शामिल नहीं हुये । सुर्यवहादुर थापा प्रधानमंत्री से कम पर नहीं जायेगा । वह अपने काल में वीपी कोइराला तक को फाँसी दे देने का हिम्मत रखनेवाला है । प्रधनमंत्री देना है तो दो फिर देखो हम कितनों को फाँसी देकर दिखला देते हैं । रामराजा को तुमने ही फाँसी दे दिया तो मैं क्या करुँ ? प्रधानमंत्री से कम मुझको नहीं चाहिये ।..........................सुशील कोइराला वेचारे कृष्ण प्रसाद भट्टराई के वाद दुसरे निरामिष आदमी ठहरे । तुम चुनाव करवा लो फिर मैं उन्ही की तरह पहला प्रधानमंत्री वनुंगा । कोई गणेशमान जैसा त्यागी तो मिल ही जायेगा । काँग्रेस में वैसे व्यक्तियों की कमी है ? नहीं कमी है ।

वे दोनों मंत्रीमंडल में शामिल नहीं हुये । वे दोनों अपने अपने मंडल का इन्तजार करने लगे ।

इधर रामवरण को तो ऐसा लगता है कि कहाँ से पकड कर हमको राष्टपति वना दिया ? हम क्या करें क्या नहीं करें ? कछु सुझता नहीं । कहीं फोन लगाते हैं तो लगता नहीं । चाईना तो हम गये थे पर वहा जाना वेकार था । वे कुछ नहीं करेंगे । हमारे परमानन्द कैसे परमानन्द में ध्यानमग्न रहते हैं ? पुजा पाठ छोडकर उन्हे इन झंझटो से क्या काम ? अव हम ठहरे काँग्रेस का समर्पित नेता । लीला कोइराला ने समर्पण किया तो भला हम कैसे नहीं करते ? कर दिया । अव ये कहते हैं कि मोहन वैद्य के प्यादे को प्रधानमंत्री वनाओ । हद है भाई । ये काँग्रेसी हैं कि नहीं ? एमाले कुछ और सिखाता है । उधर कटुवाल पिछा नहीं छोडता । अरे भाई अव तुम रिटायर हो गये हो । अव सेना न तुम्हारी वात मानेगी न हमारी वात । रहने दो अपनी वात । यह तो दिन दहाडे हमको गोली मरवाना चाहता है । राम नाम सत्य हो जायेगा अगर हमने वैसा किया ।

झख कारकर उन्हे मोहन वैद्य के प्यादे को प्रधानमंत्री का

DO NOT COPY

सफथ दिलाना पडा । रामवहादुर ने दाउरा सरवाल पहन कर गर्व से सफथ ग्रहण किया ।

,, मै इस देश की राष्टियता,अखण्डता को अक्षुण रखुँगा । मैं इसकी किसी गोपनियता को भंग नहीं करुंगा । आदि आदि । ,,

मंत्रीमंडल वन गया । यह चुनावी सरकार थी । वह जो काँग्रेसी एमाले का सपना था वह चकनाचुर हो गया । वे मुँह देखते रह गये । अव जाइये सुर्यवहादुर थापा से राजनीति सिखिये । वह सवका गुरु है । वह अपने चेला कमल थापा को अपना गुरुमंत्र दे चुका है । आपने वहुत उसको तंग किया है । उसको सव दिन याद है । अरे प्रचण्ड तो क्या नचाता था आपको ? नचायेगा तो वह । जाइये अव नाचने उसके पास । पहाडी पहाडी भाई भाई , मधेशी मुर्दावाद । अव कौन मुर्दावाद होगा इसका पता लगाइये । वहुत दिन नहीं है कवर में जाने में । अजायव घर में मिलेंगे आप ।

मेहन वैद्य के प्यादे ने सवसे पहले वोर्डर वन्द कर दिया । यही राष्टियता का शर्त है । जव वोर्डर ही नहीं रहेगा तो राष्ट कैसा ? सुगौली की संधि शताव्दियों की वात हो गयी । हम उसको एक तरफा खारिज करते हैं । यह केवल सिनेमा वगैरह वन्द करने से नहीं होगा । कहाँ हमने प्लान वनया था कि मधेश में हम जाकर वसेंगे पर ये तो उधर से ही आकर वसे जा रहे हैं । तो फिर हम कहाँ वसेंगे ? नहीं पहले वोर्डर सिल करो । उत्तर का फरमान है । उसने कुछ सोचकर ही कहा होगा । तिव्वती लोग उधर से खुलेआम आ रहे हैं । हमने तो प्रचण्ड को थप्पड मार दिया तो नहीं । इन घुसपैठियों को थप्पड मारने में भला क्या संकोच ? उसने थप्पड मारा भारत को । कई लोग उसे समझा रहे हैं कि यह थप्पड पलट कर उसे ही लगेगा । भारत का तो और अच्छा ही होगा । ये आतंकवादी जो नाक में दम कर रखे हैं अव आपके नाक में दम करेंगे । उनको अफगानिस्तान नहीं मिलेगा तो पाकिस्तान में ही अपना भडास

DO NOT COPY

निकालेंगे । वे नेपाल में ही अपना राज्य कायम कर लेंगे । पर मोहन वैद्य का प्यादा किसी का नहीं सुनता । वह तो प्रचण्ड के गुरुका प्यादा है । फिर भी वह सुर्यवहादुर थापा से थोडा सावधान रहता है । वाकी लोग तो पिद्‌दी हैं । उनका क्या विसात हमारे सामने ? देखिये हम कैसे देश को सम्भालते हैं । कैसे नेपाल को आगे ले चलना है वह हम वताते हैं ।

उसने नेपाल को आगे ले जाने का कार्यक्रम शुरु कर दिया । उसमें सवसे पहले वोर्डर सील करना था । अव मधेशी तो क्या पहाडी भी कहते हैं कि यह क्या हो रहा है ? उनको कुछ समझ में नहीं आ रहा है । राजा महेन्द्र के समय में तो कुछ समझ में आता था । अव तो विल्कुल समझ से वाहर है । भगवान को जो मंजुर । जो दिखलायेंगे हम देखेंगे । जव ये कहेंगे कि आन्दोलन में आओ तो आन्दोलन में जायेंगे । जव ये कहेंगे कि रुक जाओ तो रुक जायेंगे । जव ये कहेंगे उठ जाओ तो उठ जायेंगे । जव ये कहेंगे कि वैठ जाओ तो वैठ जायेंगे । अव दुनियाँ से उठने में देर नहीं है । लोग अपने अपने घरों में खैर मना रहे थे और अपने अपने उठने का दिन गिन रहे थे ।

लेकिन फिलहाल तो चुनाव करवाना है । यह चुनाव का झंझट पता नहीं दुनियाँ में कवतक चलता रहेगा ? किसी वेद शास्त्र मे तो चुनाव कहीं लिखा नहीं फिर यह चुनाव कहाँ से आ गया ? दुनियाँ को दिखलाना है कि हमने चुनाव करवाया । अव हमने क्या करवाया यह दुनियाँ देखने आती है ? वासिंगटन से क्या यह दिखलाई पडेगा ? करवायेंगे हम चुनाव । दिखलायेंगे हम चुनाव । यह चुनाव भी क्या कहेगा ? छठी का दुध याद नहीं करवा दिया इस चुनाव महराज का तो फिर मेरा नाम मोहन वैद्य का प्यादा नहीं । चलो भाई चुनाव करवाओ । कौन मिति ठीक है उसे मेरे पास लाओ ।

तो चुनाव की मिति पास आयी । जनता को इसकी

DO NOT COPY

जानकारी दे दी गयी । जनता को जैसे चुनाव नहीं आया सवकुछ आ गया । अव वह भोट देगी । इतना अच्छा जनता का हक और क्या हो सकता है ? जनता सवकी मालकिन है उसे तव पता चलता है । अव चुनाव के वाद इस मालकिन की क्या दुर्गती होगी उसका क्या पता ? अभी तो हम कुछ कर सकते हैं । विल्कुल कर सकते हैं । जुवा,तास खेल सकते हैं । परीक्षा में फ्री नकल कर सकते हैं । नेताओं से दारु,ताडी का इन्तजाम करवा सकते हैं । आदि आदि । क्या है कि हम नहीं करवा सकते ? नेताओं से हम झाडु वुहारु लगवाते हैं । हमारे सामने वह सदा घुटने के वल खडा रहता है । वे तो हम है कि इन घुटनों के वल खडे लोगों में से किसी एक को ही सेवक वनाते हैं । वाकी लोगों को धुल चटाते हैं । जाइये धुल चाटिये । हमें आपकी सेवा नहीं चाहिये । वह जानता है फिर भी घुटने के वल खडा रहता है । चुनाव तक तो देखना है । उसके वाद कोई विजनेस व्यापार कर लेंगे ।

तो चुनाव का दिन तय हो गया वैसाख २२ गते । काँग्रेस चाहते थे कि चुनाव फगुन ७ गते हो । यह प्रजातंत्र दिवस भी है और पहाडों पर ठंढी के कारण कम भोट पडेंगे । अधिक भोट पडने से जमानत जव्त होने का खतरा है । एमाले चाहता है कि झापा में जो उत्सर्ग हुआ था उस दिन पर हो । सिपी मैनाली तो उसके पुरजोर समर्थन में जुट गये । आखिर वे भी तो वही से आये थे । उसके वाद वे कहीं चले गये उससे क्या होता है ? अव फिर आये हैं कमल थापा के साथ । कहीं भी हों आखिर हम वही हैं । एमाले वाले भी मान गये कि हाँ वे वही हैं । पर एमाले का भी नहीं चला । मधेशियों की तो वात ही नहीं । वे फागुन वैसाख वरावर मानते हैं । उनकी औकात ही क्या है जो उनको चुनाव के वाद दिखला देंगे ? अव वे वेचारे अपने शहीदों को याद करते हुये शहीद हो जाने के लिये तैयार हैं । आदमी के मरने से क्या होता है ? अव

मधेश ही मर जायेगा । आधा तो मर चुका है,आधा मरना वाकी है । ऐसा उनको दिखलाई पडने लगा है । अव उनके सामने मधेश शहीद होने वाला है ।

तो वैसाख २२ गते चुनाव का दिन तय हो गया । अव सिटों की संख्या तय होने लगी मानो पहले की चुनावों में तय नहीं थी । चुनाव क्षेत्र का निर्धारण होने लगा मानों पहले निर्धारण नहीं हुआ था । ये ६०१ लेग क्या करेंगे ? आखिर करते तो हम तीन चार लोग ही हैं । वेकार में खर्वों खा जायेंगे । उसके आधे से काम चलाना होगा । मितव्यीयता अपनानी होगी । राष्टिय पैसों का वचत करना होगा । चुनाव क्षेत्र : वे जो हमारे पहाडी भाई सभी जगह वस गये हैं वे किस दिन काम आयेंगे ? उनको देख कर ही चुनाव क्षेत्र कायम करना होगा । वडा ही गहन अध्ययन करने के वाद चुनाव क्षेत्र घोषित किया गया । सिटों की संख्या मात्र २०० कर दी गयी । समानुपातिक को इसमें जोड लिजिये । समानुपातिक की भी संख्या कम कर दी गयी । अव मधेश के लोग लडें चुनाव । १० से ज्यादा हो जाय तो हमारा नाम नहीं । १० लोग क्या कर लेंगे ? वडे आये थे निर्णायक वनने । अव वनिये निर्णायक और जाकर वनिये की दुकान खोलिये । वच्चों को काठमाण्डु के वोर्डिंग से निकाल कर ले जाईये और सरकारी स्कुल में सरकार का नाम रोशन कीजिये । वे वेचारे पहले ही वोरिया विस्तर ले कर चले आये थे । अव वे कोई आशा न देख वच्चों को भी ले आये वेचारे । अव वच्चे स्वतंत्र होकर गाँव में गुल्ली डंडा खेलेंगे , चोर मोर खेलेंगे ।

एक तो ऐसे ही वेचारे मारे गये थे । उपर से पार्टियों की संख्या । उनको गिनना मैंने छोड दिया है । नेपाल मे जितनी पत्रिकायें हैं उतनी पार्टियाँ हैं । उपर से पार्टी के अन्दर अन्तरकलह अलग है । कुछ अखवार दर्ता होते हैं,कुछ नहीं भी होते । कुछ पार्टियाँ भी दर्ता होती हैं कुछ नहीं भी होती । दोनों अवस्थाओं में काम चलता है ।

मधेश कम नहीं है । वेचारे जीतपुर से लेकर वीरगंज तक मात्र १० मील में वे क्या कर सकते हैं ? इससे वे अधिक हो ही नहीं सकते । कभी भीतरी मधेश मधेश में पडता था । अव नहीं पडता । अव वह पहाडीस्तान में पडता है । वाहरी मधेश भी अव कव मधेश में नहीं पडेगा पता नहीं । पर वह दिन अव दुर भी नहीं है । फिलहाल जीतपुर से वीरगंज तक वह पडता है । अव मधेश में जितनी पार्टियाँ हो गयी हैं १० से ज्यादा की कोई सम्भावना नहीं है । यह दुख की वात है । अव अगर सम्भावना है तो यही कि भीतरी मधेश की पार्टी आकर हो सकती है । भीतरी मधेश का कहिये या वाहरी पहाड का ,वात एक ही है । शरद सिंह भण्डारी वगैरह इस प्रयास में हैं कि मधेश में भी पार्टियों की संख्या ज्यादा हो । हमारा मधेश है किसी से कम क्यों रहेगा ?

उधर मधेश के नेता परेशान हैं । वेचारे महन्थ ठाकुर ने मधेशी नेताओं को वरसात का मेढक वोल दिया । वह तो जनता थी कि उनको हरा दिया नहीं तो हम तो उन्हे ही अपना नेता मानते हैं । वेचारे त्यागी पुरुष ,काँग्रेस को त्याग कर ही तो यहाँ आये ? उनसे त्यागी और है कौन ? वे ही हमारे नेता हैं । उपेन्द्र यादव तो सवसे वडा मेढक है, मेढको का सरगना । जव वही मान लेता है इनको तो छोटे मेढक कैसे नहीं मानेंगे ? एक भाग्यनाथ गुप्ता हैं जो नहीं मानने के लिये अभी तक जिद पकडे हुये हैं । उनको साफ दिखलाई पड गया था कि मेढक हम नहीं महन्थ ठाकुर हैं । फिर भी लोगों को क्यों नहीं दिखलाई पडता ? वेचारे भाग्यनाथ उपेन्द्र यादव को पार्टी से निकाल कार खुद निकल गये हैं ,उनको पता नहीं । लोग कहतें हैं कि वे निकल गये हैं पर वे हैं कि मानते नहीं । उपेन्द्र यादव निकल गया है । यह जो मेची से लेकर महाकाली तक दौरा कर रहे हं वह क्या है ? हम निकले नहीं हैं,उपेन्द्र यादव निकला है । चुनाव आने दो ,दिखला देते हैं कि कौन निकला है ? पर क्या दिखलायेंगे ? चुनाव

का तो उन्होने वहिष्कार कर दिया है । यह चुनाव मधेशीयों का अपमान है । हम इसमें भाग नहीं लेंगे । उनको कहर चीज को वहिष्कार करने का सनक सवार होता है । वे चुनाव में भाग नहीं लेंगे । मधेश की वेचारी जनता उनकी सेवा से वंचित रह जायेगी । यह खाली पुरव से पश्चिम तक डोलते रहने से क्या होगा ? पर वे डोलते रहे । उपेन्द्र यादव और महन्थ ठाकुर तो मिल गये पर मिलने से क्या होगा ? चुनाव में जो रस्साकसी हुआ उसका हवाल सुनिये । एक ही उदाहरण एसके लिये काफी है । यह देश भर के मधेश के सभी क्षेत्रों का प्रतिनीधि उदाहरण है ।

जिल्ला वारा क्षेत्र नंवर : ४

प्रत्यासी : जयकान्त,मकसुद,जालीम और सुरज सोनल ।

सुरज सोनल का नाम वाद में मैने इसलिये लिया कि मधेश में इनका योगदान कम है । इन्होने मधेश आन्दोलन में वागडोर सम्भाला था । इनका योगदान इसलिये कम था । जयकान्त भले ही वोरा फैक्टरी मे काम करता था परन्तु पंचायती व्यवस्था के सच्चे सेवक का पुत्र था । इसलिये मधेश में उसका योगदान अधिक था । अव इन दोनों को कौन समझाये कि अरे तुम दोनों एक ही पार्टी के हो, दोनो मत लडो ? परन्तु जयकान्त कम थोडे ही है ? जयप्रकाश गुप्ता से जेल में जाकर मिल आया है । पार्टी उसको टिकट नहीं देगी यह मालुम हो गया है । फिर जयकान्त जयप्रकाश के पास जा चुका है । जेल से ही जयप्रकाश उनको टिकट देने का वादा कर चुके हैं । शायद जेल से वाहर भी उनको जयकान्त जैसे जयप्रकाश की जरुरत है । उनका डुप्लीकेट । परन्तु लगता है कि यह जयकान्त रुपी जयप्रकाश भी जेल में उन्ही के साथ चला जायेगा ।

चुनावी भाषण की वानगी देखिये :

DO NOT COPY

१ भाईयों एवं वहनो, हमारे पिता जी पंचायती व्यवस्था के एक इमानदार और कर्मठ नेता थे । आप सभी लोग भी जानते हैं । नयी पीढी के लोग जो नहीं जानते हैं पुछ लिजियेगा । वे इतने इमान्दार थे कि अपनी गाढी कमाई के पैसों से जव ५० विघा जमीन खरीदा तो लोगों ने उन पर घुस का आरोप लगाया । पर वे सावित नहीं कर सके । वह उनकी खेती पाती की गाढी कमाई को पैसा था । उन्होने कितने पुल और सडकों का निर्माण करवाया । आज माओवादी इतना पैसा खा गये । हमने एक पैसा भी नहीं खाया । हमारा फेमिली वैकग्राउण्ड है । फिर भी हमने सुर्यवहादुर का साथ छोड दिया क्योंकि उसने हम पर जुल्म किया । आज जो जालिम हमारे विरुद्ध खडा है वह हमारे यहाँ पानी भरता था । वह जातियता फैलाता है । हम जानते हैं कि वारा जिल्ला में हमारी जाति अधिक है और मैं जितुंगा । फिर भी मैं जातियता नहीं फैलाता हुँ । अव हमारी जाति है । हमे भोट देगी यह सभी जानते हैं । पर हम जातियता कभी नहीं फैलाते । हमारा विपक्षी सुरज सोनल और हम दोनों एक साथ थे । मैंने कहा कि आप वैठ जाईये पर उन्होने नहीं माना । क्या वात है ? हम भी तो फेमिली वैकग्राउण्ड के नेता हैं । हम भी क्यों माने ? आपलोगों के वीच आ गया । अव फैसला आपको करना है । जय तराई जय मधेश ।

यह सुनकर जो फेमिली वैंकग्राउंड वाले लोग थे वे पिघल गये । उनका सशक्त भाषण सुन कर वे फुसफुसाने लगे । वेचारे इनके पिता प्रजातंत्र से पहले ही परलोक चले गये नहीं तो आज भी सुर्यवहादुर का दाहिना हाथ होते । पर जयकान्तको अपनी पिता की जगह भरना चाहिये था । सुर्यवहादुर थापा का दाहिना हाथ वनना चाहिये था । पर इसका चचेरा भाई भी नहीं वना । पशुपति शमसेरका वाँया हाथ वन गया । अव जयकान्तको एक ड्राईवर का वेटा राजनीति सिखाता है । मोहन का पानी भरनेवाला राजनीति

DO NOT COPY

सिखाता है । यह ठीक वात नहीं है । हम तो फेमिली वैक ग्राउंड वाले को ही भोट देंगे । इनको भोट देंगे तो ये अपने पिता की तरह होंगे । सुरज सोनल कौन पिता की तरह होगा ? भोट नहीं दो तो पिता की तरह ड्राईवरी करेंगे । उसको उतारो गद्दी से । जयकान्त को वैठाओ ।

जयकान्त को जव तमलोपा से टिकट नहीं मिला तो जयप्रकाश से टिकट ले आया । कितने में वह खरीदा था यह लोगों को नहीं मालुम । वह भी नहीं वताता था ।

२ भईया भोट गिरइह नजरुल नेता जान के,
गाछी पहिचान के ना

काँग्रेस इसी गीत के साथ नजरुल का प्रचार करता था । कभी सुवर्ण शमसेर के लिये भी इसी गीत के साथ इसी तरह प्रचार किया जाता था । सुवर्ण शमसेर तीनो जगहों से जीत गये थे । पर अव हमारा नजरुल एक जगह से भी नहीं जितेगा । वह तीन जगहों से खडा भी नहीं है । सुवर्ण शमसेर की जगह नजरुल ने लिया था । राजनीति कहाँ से कहाँ पहुँच गयी है,यह देखने लायक था । पर अपने नेता के प्रचार में कोई कमी नहीं थी । हमारे नजरुल अंसारी एमाले के नेता सलीम अंसारी के हम सफर हैं । वे एमाले को छोड कर राजा की पार्टी में चले गये । पाकिस्तानी एजेंट वन गये । पर हमारा नेता हमें छोड कर कहीं नहीं गया । न तो पाकिस्तानी एजेंट ही वना । पाकिस्तानी इम्वैसी के तो वे गेट से होकर नहीं गुजरते । गिरिजा वावु की सेवा में आज तक लगे रहे । उन्होने उनसे कहकर मदरसो और मस्जिदों को वनवाने का अभियान चलाया । अव उसमें पाकिस्तानी आतंकी आकर डेरा डाल देते हैं तो वे क्या करें ? उन्होने तो मदरसों को वच्चों की विशुद्ध शिक्षा के लिये वनवाया था । अव उसमें आतंकवादी आ जाते हैं तो वे क्या करें ? फिर आतंकवादी हमारे देश का तो कुछ नहीं विगाडते ? वे तो खाली उसमें रहते हैं

। यहाँ से जाकर इन्डिया का विगाडतें । हमारा तो नहीं विगाडते ? विस्तारवादी इन्डिया का विगाडते हैं । जव से आतंकवादी आये हैं तभी से हमारे देश में प्रजातंत्र आया है , नहीं तो आता भी नहीं । माओवादी भी उनसे हतियार लेते थे । हमें तो उनका स्वगत करना चाहिये । ये आतंकवादी न होते तो प्रजातंत्र भी नहीं होता । नजरुला को विश्वास था कि सुवर्ण शमसेर की तरह वह भी जितेंगे । राजनीतिक पृष्ठभुमि हमारा भी है । हम जयकान्त से क्या कम हैं ?

३ जालिम कहता है ,नाम से भले ही जालिम हुँ पर काम से जालिम नहीं हुँ । इन प्रजातंत्रवादियों ने देश को तहस नहस कर दिया । अगर सुर्यवहादुर होते ,पशुपति शमसेर होते, हमारे महाराज होते तो देश की ऐसी दुर्गति कदाचित नहीं होती । उनके खुन में ही राजनीति वहती है । उन्हे आती है राजनीति । ये कहाँ से वकरी चराने वाले,भैंस चराने वाले आ गये ? इनको राजनीति क्या आयेगी ? राजनीति करने के लिये ज्ञान होना भाहिये । यह क्या सुरज सोनल की तरह एक आश्रम वना लिये और उसी में वैठ कर तपस्या करने लगे । घुमने लगे गाँव गाँव कि कौन मर गया,कौन भुखा रह गया ,किसको कौन सताने लगा । कहाँ सरकार को कितना रुपया देना चाहिये । अव यह भी कोई राजनीतिक ज्ञान है ? यह तो कोई भी कर सकता है । राजनीति के लिये राजनीतिक ज्ञान होना चाहिये । अंग्रेजी पढा लिखा होना चाहिये । माना कि हम अंग्रेजी नहीं पढे,पर हम तो एक कार्यकर्ता हैं । हमारे नेता अंग्रेजी पढे लिखे,सभ्य कुलीन लोग हैं ।

सुनकर लोग कहते : हाँ यह ठीक कहता है । हमने वडे लोगों के साथ अन्याय किया । ईश्वर इस अन्याय से अप्रसन्न हैं । इसलिये हमारी यह दुर्गती हुई है । वडे लोगों का अपमान नहीं करना चाहिये नहीं तो लक्ष्मी रुठ जाती है । उनकी सेवा करते थे तो रोज खाने को मिल जाता था । विर्ता विर्तावाल कितने भले लोग थे । आज तो खाने

को भी नहीं मिलता । हम दिल्ली ,पंजाव से खाना मंगाते हैं । यह वडे लोगो का अपमान करने का फल है । हम जालिम को ही भोट देंगे ।

४ एमाले का परशुराम कह रहा है : पहले हमलोग लोगों को छ अंगुल छोटा कर देते थे । अव हमने सव छोड दिया है । वह काम हमने माओवादियों को कव का दे दिया क्योंकि वह तो हमको भी छ अंगुल छोटा कर देता था । तव हमने छोटा करना छोड दिया । अव वह हमे कहता है कि हम कम्युनिस्ट नहीं हैं । तो क्या हम काँग्रेस हो गये ? नहीं हम विल्कुल काँग्रेस नहीं हो गये । काँग्रेस ने कभी विन्ती पत्र नहीं चढाया । हमने विन्ती पत्र चढाकर सावित कर दिया कि हम काँग्रेस नहीं हैं । हमने व्रुटस की तरह करने ही वाले थे कि उनको माओवादियों ने उतार दिया । हम तो उतारते भी नहीं । हम तो कटार उतार ही देते । इसलिये विन्ती पत्र हमारी राजनीति थी राजा के पास जाने का । अगर हम उनसे सटकर नहीं रहे तो कटार कैसे भोंका जा सकता था ?

लेग खुश हो गये । यह ठीक कहता है । एमाले वास्तव में कमनिस्ट ही है अर्थात कम निष्ठावाला कमनिस्ट । काँग्रेस एमाले में वुनियादी फर्क है विन्ती पत्र का । हम परशुराम को ही भोट देंगे ।

५ एमाओवादी तो जैसे भीगी विल्ली वना हुआ है । जव से प्रचण्ड को लोगो ने थप्पड मार दिया तव से चारों ओर नैराश्यता छा गयी है । उसके नेता मानक लाल का कहना है कि यह सरासर गलत है । मानक लाल का पहला नाम तलवार सिंह था ,जनयुद्ध के समय । उसने कहा : हमारे नेता स्वीटजरलैण्ड जाते हैं वहाँ का गणतंत्र लाने । उनके साथ शेखर वावु भी जाते हैं । पुछ लिजीये कि क्या करने गये थे ? वेचारे एक दिन वीवी के साथ रिसोर्ट में दशईं भी नहीं मनायें क्या ? जनयुद्ध के समय वेचारे तो अकेले ही दशईं मना लेते थे । वावुराम के साथ तो हिसिला यमी थी । लक्ष्मण के

साथ वनवास में उर्मिला थी । राम के साथ सीता नहीं थी । यह कैसा वनवास था ? प्रचण्ड के साथ कोई नहीं था । वेचारे एक दिन वीवी के साथ रिसोर्ट क्या चले गये मानो एमाओवादी त्याग दिया । नहीं यह अन्याय है । उसको थप्पड वापस लेना होगा । थप्पड वापस तो लेना ही होगा । भाईयों हमे भोट दें कि हम थप्पड वापस करा सके । पता नहीं कितने लोगो को शहीद किया ? वे नहीं होते तो राजा क्या जाते ? इन काँग्रेसियों और एमाले से जाते ? वे लोग जव वन्द का आह्वान करते थे तो जो दुकाने कभी नहीं खुलती थी वह भी खुल जाती थी । हमारे नेता आये तो उन्होंने सव सिखाया । पैदल वंद तो लोगों का चलना फिरना भी वन्द हो जाता था । तव जाकर लोगों को पता चला कि वन्द क्या होता है । ऐसे लोगो को थप्पड मारते है. लोग । स्वार्थी,निकम्मे लोग हैं वे । हमे भोट दे । हम इन निकम्मे लोगों का एक वार फिर से सफाया करेंगे ।

सुन कर लोग कहते कि वात तो ठीक कहता है । स्वीटजरलैण्ड तो उनके साथ शेखर वावु भी गये थे गणतंत्र लाने । वाद में शेखर वावु मुकर गये तो वे क्या करें ? संविधान सभा को भंग कर दिया । जाईये नहीं लाना है गणतंत्र तो । हम भी नहीं लाते । पर उसने मधेशियों को लाया । हम मानक लाल उर्फ तलवार सिंह को ही भोट देंगे ।

६ इधर ने.क.पा. माओवादी का वात्स्यायन कहता है हम कामसुत्र के वात्स्यायन नहीं हैं । हम मोहन वैद्य के वात्स्यायन हैं । गुरु की वात को ही जव प्रचड ने नही माना तो मोहन को अपना चक्र सुदर्शन उठाना पडा । हम कहते है कि हिन्दी सिनेमा वन्द करो,वह नहीं मानता । हम कहते हैं कि सुगौली संधि खारेज करो,वह नहीं मानता । हम कहते हैं कि १९५० की संधी खारेज करो,वह नहीं मानता । हम कहते हैं उठो,वह नहीं मानता । हम कहते हैं वैठो,वह नहीं मानता । तो फिर वावा मानोगे क्या ? आखिर हम उसके गुरु हैं

DO NOT COPY

कि वह हमारा गुरु है ? हमने सव करके दिखला दिया । अव सुगौली संधि,१९५० की संधि ,सिनेमा ,पेट्रोल सव वन्द । वह हमको छोडकर भारत को अपना गुरु वना लिया । उस भारत को जिसने हमको जेल में सडाया । हम उसके गुरु है कहने पर भी नहीं माना । और वह जो उत्तर में हमारा गुरु है वह हम दोनों का गुरु है । हमने उसके पास जाकर शिकायत की कि तुम्हारा चेला अव तुम्हारा चेलागिरी छोड दिया है । अव वह भारत को अपना लिया है । अव आप कृपा कीजिये कि आपका चेला वना रहे । गुरु ने कृपा की । फिर तो चमत्कार हो गया । आज प्रधानमंत्री हम हैं । हमको भोट दीजिये । हम पेट्रोल डिजल आदि सभी सामान सिधे हवाई जहाज के द्वारा चीन से मंगा कर नहीं दिखला दें तो फिर हमारा नाम नहीं ।

लेगों ने कहा यह भी ठीक कहता है । अगर ठीक नहीं कहता तो इसका नेता प्रधानमंत्री कैसे हो जाता ? मोहन वैद्य को मोहिनी विद्या आती है । यही गुण तो उसने अपने चेला को नहीं सिखाया । आखिर चेला तो चेला ही रहेगा ,गुरु कैसे हो जायेगा ? ऐसे त्यागी पुरुष को भोट देना चाहिये । आज तक कोई पद नहीं लिया । प्रधानमंत्री उनका तो सिर्फ चुनाव करवाने के लिये वना है । सुनते हैं कि रामवरण यादव उनसे वहुत खुश हैं । अरे वही हमारा राष्टपति । मधेशियों का राष्टपति । प्रचण्ड तो उनका भी चुनाव करवाने के लिये कहता था । भई कहाँ चुनाव में जायें । हम अव क्या राष्टपति होंगे ? वह तो रामराजा वावु थे कि हम हो गये । जव तक हैं तवतक तो हैं । मोहन वैद्य तो हमारा चुनाव कराने को नहीं कहता । इससे वढिया वात क्या होगी ? मधेशियों सावधान । प्रचण्ड एक मधेशी को गद्दी से उतारना चाहता है । मोहन वैद्य नहीं उतारना चाहता ।

सुनकर लोग कहते कि जव हमारे रामवरण वावु ही यह कह रहे हैं तो हमे तो इनको ही भोट देना चाहिये । अव राष्टपति की वात कौन

DO NOT COPY

नहीं मानेगा ?

सुरज सोनल केवल लोगों से मिलता,उनका काम करता और चुप रहता । उसके साथ सामसुन्दर और सीता भी रहती । सामसुन्दर को वह अपना गुरु मानता था । सामसुन्दर सद्भावना परिषद का संस्थापक सदस्य था और सुरज सोनल को सद्भावना पार्टी में लाया था । सुरज सोनल सद्भावना काल से ही मधेश की राजनीति करता है । कई टुकडों में वँट कर सद्भावना पार्टी में भाँड भैलो हो चुका था । लखन लाल कर्ण जैसे स्वार्थी लोग उसमें चले गये थे । वे तो गजेन्द्र वावु को भी कुछ नहीं समझते थे । सामसुन्दर जैसे घटिया कार्यकर्ता को कौन पुछता है ? वह गजेन्द्र वावु की तरह इतिहास हो गया था । कोई उस इतिहास की कद्र नहीं करता था । ड्राइवर का लडका मधेश को ड्राइव करने को वेचैन था । सामसुन्दर ने अपनी पार्टी नहीं छोडी थी , पर सुरज सोनल के साथ रहता था । सीता भी महिला सदस्य के रुप में सभी जगह आती जाती थी

चुनाव हुआ तो कहना ही क्या ? हिन्दुस्तान के गुण्डे नहीं आये पर पहाड के गुण्डे आये । हिन्दुस्तान के गुण्डे उतने भयानक कहाँ लगते हैं । धोती कुर्ता में कहीं कोई गुण्डा लगता है ? वहुत हुआ तो पैजामा पहन लिया । पर पहाड के गुण्डे तो चाईनिज जैसे आक्रामक और भयानक लगते थे । ऐसे गुण्डे लोग पहले केवल राष्टवादी विद्यार्थी मण्डल में देखा था । नये लडके इनको अव जाकर देख रहे हैं । मजाल है कि कोई कुछ कह दे ? सरकार किसका है ? चाइना का । फिर तो ये चाईनिज क्या नहीं कर सकते ?

फिर क्या क्या हुआ उसका हम वयान नहीं कर सकते । लोगों ने अपना हथियार डाल दिया । वे वुथ पर गये भी और आये भी । पर उनका भोट किधर पडा उनको मालुम नहीं । वे किनको भोट दिये नहीं मालुम । उनके अंगुठे पर काली स्याही भी लगी ।

DO NOT COPY

पुछिये कि इन्होने क्या किया ? इन्होने भोट दिया । अपनी राजी खुशी से । उसमें पर्यवेक्षक भी आये । उन्होने सव देखा । अव उनको क्या पता कि भोट कौन डाल रहा है ? लोग भीतर आ जा रहे हैं तो भोट उन्होने ही दिया होगा । अव वक्सा कौन सा किसका है वह क्या पता ?

विल्कुल शान्तिपुर्ण ढंग से भोट समाप्त हो गया । अव भोटों की गिनती जिल्ला में नहीं होगी । यह नया नियम वना है । उसकी गिनती काठमाण्डु में होगी । अव विकेन्द्रीकरण जव हम कर ही रहे हैं,गणतंत्र हम दे ही रहे हें तो कुछ तो केन्द्र में होना चाहिये ? यह गिनती केवल केन्द्र में होगी । अच्छा तो यह होता कि उसकी गिनती चाईना में ही हो जाय । फिलहाल उतनी दुर जाने की जरुरत नहीं । इसकी गिनती काठमाण्डु में ही होगी । जिल्ला जिल्ला से वैलेट वाँकस एकत्रित होकर ट्रकों में लाद कर काठमाण्डु ले जाया जाने लगा । अव यह यहाँ का अपना नियम है । सव जगह अपना अपना नियम होता है । इसमें वेचारे पर्यवेक्षक क्या क सकते थे ? भोटों की गिनती में थोडे रहते हैं ? वे तो चुनावी क्षेत्रों का दौरा करते हैं । वह भी कहीं एकाध क्षेत्र को देख लिया । सव अनुमान हो गया । उनके अनुमान में चुनाव निष्पक्ष और धाँधलीरहित हुआ था । कोई किसी पर मुकदमा नहीं कर सकता ।

चुनाव का नतीजा आया तो सवलोग एक दुसरे का मुँह देखते थे । मधेश में केवल पाँच सिट आये पर हमारा क्यों ऐसा हुआ ? चुनाव के नतीजों में मधेशी दल,काँग्रेस और एमाले का पत्ता साफ हो गया । मधेशी दल का हाल गजेन्द्र वावु के जमाने में चला गया । उनके जमाने में तीन सिट आया था । इतने परिवर्तनों के वाद अव पाँच सिट । वाह क्या प्रगति हुई है ? लोग आपस में लड लड कर हार गये । लखन कर्ण का स्वार्थ पुरा नहीं हो सका । वे फिर से वीरगंज में वकालत करने लगे । उपेन्द्र यादव नायक वना था, अव

खलनायक वन गया था । राजेन्द्र महतो क्या कम थे ? उपेन्द्र राजेन्द्र दोनों भाइ भाई । पर दोनों की जमानत जव्त हो गयी । यह कैसे हो गया ? यह तो होना नहीं चाहिये था । हो न हो एसमें चाईनिज गुण्डों का हाथ है । अव जिसका भी हो । जो हो गया सो हो गया । अव चलिये सुख से घर मन्दिर में रहें । अव राजनीति ओजनीति खतम । कम से कम अव खाने पीने के लिये किसी के लडके को ट्युसन पढाना तो नहीं पडेगा । राजेन्द्र वेचारे तो नहर के इन्जिनियर में क्या कमाते ? अव तो घर में जैसे अँटता ही नहीं छ्लक जाता है । हार गये तो क्या हुआ ? चलो कौन गम करे ? शाले मधेश वाले होते ही ऐसे हैं । वेदानन्द झा को हरा दिया,गजेन्द्र वावु को हरा दिया ,अव हमको भी हरा दिया । हृदयेश,लखनलाल को हरा दिया सो तो ठीक है ,पर सरिता गिरी और शरत सिंह भण्डारी को कैसे जिता दिया ? चाईनिज गुण्डों ने उनको कुछ नहीं किया । क्यों नहीं किया ? ओ किससे पुछ रहे हैं ? अव कोई हो तव न उसका जवाव दे । वे चुप हो गये । अव वे सोचने लगे कि हमे भी पहाड पर जाकर लडना होगा । हम तो लडते ही नहीं तो वे जितायें कैसे ? जैसे यहाँ पर पहाडी लोगों को हमने जिता दिया वैसे ही हमे पहाडी लोग जिता देंगे । अव तक तो नहीं जिताये पर अव जितायेंगे हमको । पहाड पर अपना संगठन मजवुत करने के वारे में वे सोचने लगे । जितना वे सोचते उतना वात पेचिदा लगती । नहीं पहाड पर नहीं काठमाण्डु में लोग जितायेंगे । रामराजा वावु को जिता दिया था । फिर हम और वे एक ही तरह से शासित लोग हैं । उनका भी २४० वर्षों से कोई प्रधानमंत्री नहीं वना । हम दोनों एक हैं । नेवार को हमलोग मधेश में जितायेंगे । हम मधेश से काठमाण्डु में जायेंगे । यह विल्कुल ठीक आइडिया है । ये पहाड के लोग धोखेवाज होते हैं । पर वे करें क्या ? काठमाण्डु में तो इतनी भीड भाड हो गयी है कि घुसने की तो जगह नहीं मिलती । वे घुसे तो घुसे कहाँ ? सव केवल काठमाण्डु कव्जा

करना चाहता है । पृथ्वीनारायण से लेकर प्रचण्ड तक । और अव मोहन वैद्य मुझको घुसने नहीं देगा । थक कर राजेन्द्र वावु चुर हो गये और सो गये ।

चुनाव परिणाम चौंकाने वाला था । जितने राष्टवादी थे वे सव जीत गये । राष्टवादी माने राजा,कमल थापा,सुर्यवहादुर थापा,चित्रवहादुर केसी ये सव राष्टवादी थे । जिनको फाँसी लगा देनी चाहिये थी वे उल्टे सभी पार्टियों को फाँसी लगा गयी । पत्ता साफ । अव वेचारे कुछ भी नहीं कर सकते थे । मोहन वैद्य,प्रचण्ड के गुरु, अव कमल थागपा के गुरु वन गये थे । राष्टवादी गुरु । सुर्यवहादुर थापा उनकी गुरुता को स्वीकार नहीं किया था । राजदरवार से इमर्जेंसी वुलावा आने लगा था । रामवरणको यह अच्छा नहीं लगता था पर वे चक्रव्युह में फँस चुके थे । वे करते क्या । अपना दिन गिनने लगे । सभी लोग जीत की खुशियाँ मना रहे थे । उस दिन रामवरण के घर में जैसे कोई मर गया था । अव लीला कैसे करेंगे । वे वहुत गमगीन हो गये । भले वावुराम को ही प्रधानमंत्री रहने देते । वही चुनाव करवाता । पर इन लोगों ने आन्दोलन करके क्या किया ? वहुत से लोग कहते थे कि उसी सरकार में भाग लेकर चुनाव करवाया जाय । पर वे नहीं माने । अव जाईये हवा खाने । मुझे तो ऐसा लगता है कि गंगा स्नान करने इनको काशी जान हेगा ।

२०

चुनाव में सभी पार्टी धराशायी हो गयी । मधेशीका नामो निशान मिट गया । नेकपा माओवादी वहुमत में आयी । उसके वाद प्रजातंत्र पार्टी नेपाल और जनशक्ति पार्टी का नंवर था । जगजाहीर था कि सरकार मओवादी ही वनायेंगे । जिस तरह एमाले एमाले न रहा,नेकपा माओवादी नहीं रहे । वे अतिराष्टवाद में चले गये । सभी राष्टवादियों की सरकार वनी । कमल थापा फिर गृहमंत्री वना ।

DO NOT COPY

प्रधानमंत्री और गृहमंत्री ये ही दो पद उल्लेखनिय रहे । वाकी की तो कोई औकात ही नहीं थी । सुर्यवहादुर थापा कोई मंत्री नहीं वना । वे प्रधानमंत्री से कम कुछ नहीं होंगे । पर उन्हे लोभ संवरण करना पडा । वे वरिष्ठ सल्लाहकार वने । राजा का भी सल्लाहकार वही थे । राजा ने उनकी कद्र छोडकर गलती की थी । अव वे उस गलती को नहीं दोहरायेंगे । राजा ने चुनाव में भाग लिया था । वे जीत गये थे । उनको राष्टपति चुना गया । अव फिर से राजा वनने में देर नहीं था । सेना के परमाधिपति वे हो गये थे । सेना तो वही उनकी पहले की सेना थी । रामवरण यादव को भैंसी गोठ का रास्ता दिखला दिया गया । काँग्रेस का पत्ता साफ हो गया था । अव वे घर में जाकर चुपचाप रहने लगे । देश को पाँच प्रदेशों में वाँटा गया पुर्वांचल,मध्यमांचल,पश्िमांचल,मध्य पश्चिमांचल और सुदुर पश्चिमांचल । मतलव राजा वीरेन्द्र और हर्कवहादुर गुरंग के प्रतिवेदन का अनुमोदन हुआ । ७५ जिल्लाओं को यथावत रखा गया । यह राजा महेन्द्र का सम्मान था । देश की संरचना में कहीं कोई तव्दिली नहीं हुई । वस केवल पाँच विकास क्षेत्रों को प्रदेश कह दिया गया । यह नेपाल के राष्टवाद का पहला शर्त है कि वह इस संरचना को यथावत रखे । इस संरचना को तनिक भी वदलने पर देश का विखण्डन हो जायेगा । यह वात मोहन वैद्य किरण,चित्रवहादुर केसी और रोहित भी मानते हैं । केवल प्रदेश का नाम देकर गणतंत्र का रुप दे दिया गया । यह निर्वाचित सदस्यों के द्‌वारा वनाया गया थ । इसलिये विश्व को इसे मान लेना पडा । यही नयाँ नेपाल था अव । प्रचण्ड के नये नेपाल को थप्पड लग चुका था ।

हिन्दुस्तान अव इसे अंगुली पकडवा कर घुमा नहीं सकता था । चीन ने तिव्वत के इस अंगुली को पकड लिया था । अव चीन इसको घुमायेगा । इस घोर राष्टवाद की आँधी में भारत मुँह को खा गया था । और मुँह को खा गया था मधेश । सभी मधेशी नेता हतास

एवं निराश थे । शान्तिपुर्ण नेताओ के इसी हतासा से आतंकवाद का जन्म होता है । नेपाल में तो आतंकवाद माओवादियों ने लाया लेकिन वे सभी आतंकवादी को मुल धार में नहीं ला सके । उनके वाद वे भी पनप चुके थे । उनमें और सभी ने हथियार डाल दिया था । पर जयकृष्ण गोईंत ने हथियार नहीं डाला था । जव मधेशी नेताओं को अलग थलग कर दिया गया ,जव शान्ति से राजनीति करने को वंचित कर दिया गया तव जो होता है वह हुआ । मधेश राजनीति का सारा वागडोर अव जयकृष्ण गोईंत के हाथों में आ गया । जयकृष्ण गोईंत का कहना था कि मधेश एक अलग राष्ट है । रघुनाथ ठाकुर ने युएनओ के मुताविक मधेश को राष्ट कहते हैं । इसको स्वतंत्र करना होगा । मधेशी जव इसे एक मधेश प्रदेश की मांग कर रहे थे तव लोगों ने नहीं माना । अव दीजिये अलग मधेश राष्ट । सारा राष्ट अव आतंक के फिर से चपेट में आ गया । ये राष्टवादी तो मधेश प्रान्त के लिये तैयार नहीं । अव खुल कर युद्ध होने लगा ।

पहाडी लोग भी नहीं मान रहे थे । मधेशी लोग भी अव अपना अस्तित्व पहचान लिया था । वे जयकृष्ण गोईंत को पनाह देते थे । हत्या,हिंसा और वलात्कार की दौर एक वार फिर शुरु हो गया । देश अव पहले से भी भयंकर गृहयुद्ध में फँस गया । यह अति राष्टवादियों की देन थी । मधेश से पहाडी पलायन करने लगे । उधर पहाड से मधेशी पलायन करने लगे । पहाडों में तो मधेशी कहीं थे नहीं । काठमाण्डु में केवल थे,वहाँ से भागने लगे । निकटवर्ती पहाड,पाल्पा,हेटौडा अदि सभी मधेशी शुन्य होने लगे । उधर का मोर्चा चुरे भाँवर ने सम्भाल लिया । वम वारुद तो आम वात हो गयी । मधेश में पहाडी कर्मचारी दहशत में थे । वे रहना तो नहीं चाहते थे लेकिन उन्हे कडी सुरक्षा के अन्दर रखा जाता था । लोग दिन दहाडे लुट लिये जाते थे । वसों में आग लगा दी जाती थी । यह

DO NOT COPY

नियति केवल सरकारी गाडियों की ही नहीं थी । यात्रियों से भरी वस को भी नहीं वक्सा जाता था ।

यह दोनों ओर का उग्रवाद था , अतिवाद था । इसमें साधारण और भोली भाली जनता मर रही थी । अंधराष्टवाद,अतिउग्रवाद का यही नतीजा होता है । इसे जनता ने देखा । शान्तिप्रिय मधेशी नेता को वुलाये विना काम नहीं चलेगा । सरकार उनको वुलाने का मनसुवा वनाने लगी । पर उनके वुलाने से क्या होगा ? जयकृष्ण गोईंत उनकी वात क्या मान जायेगा ? कोई फायदा नहीं । हिन्दुस्तान पर आरोप लग रहा था कि वह जयकृष्ण गोईंत को हथियार दे रहा है । जयकृष्ण गोईंत को हमे सौंपना होगा । उधर हिन्दुस्तान कह रहा था कि हमे कुछ मालुम नहीं है । उधर चुरे भाँवर को कौन हथियार दे रहा है ? वह ठीक तो होता नहीं लगे हिन्दुस्तान को आरोप लगाने । हमारे यहाँ से ऐसी कोई गतिविधि नहीं होती है । मोहन वैद्य यह टका सा जवाव पाकर चुप हो जाता था । आखिर हम भी तो वही से यह काम करते थे । दुसरी जगह है कहाँ जहाँ से जयकृष्ण गोईंत अपने काम को अंजाम देगा ? पर वे करे क्या ? मोहन वैद्य ने चीन की यात्रा की । चीन ने उसकी पीठ ठोक कर वापस भेज दिया । वह हथियार तो दे ही रहा है । अव क्या भारत से खुलेआम लडाई करे ? हथियार तो हम सभी जगह दे रहे हैं । श्रीलंका में तमीलीयन को दवाने के लिये । पाकिस्तान में भारत को दवाने के लिये । भारत को हम चारों तरफ से घेर ही रहे हैं । इस तरफ से तुम रहो फिर देखो क्या होता है ? नेपाल में घनघोर गृहयुद्ध का रास्ता देख रहा था वह । कौन कहता है कि चीन नेपाल में स्थायित्व देखना चाहता है ? अपनी अन्दरुनी समस्या तो सुलझायेंगे नहीं दुसरों को दोष देंगे । अपने मधेश को तो अपना नहीं वना पाते हैं । दुसरों को अपनाने के लिये चिरौरी विनती करते हैं । यह घोर राष्टवाद की देन थी । देश जल रहा था ,मधेश जल रहा था । यह

२१वीं शताव्दि हैं । इसमें मधेश अपना अस्तित्व खोज रहा था ।

इसी वीच उपेन्द्र याव के एक सहकर्मी की हत्या हो गयी । वे मधेश के वडे नेता थे । सारा मधेश स्तव्ध हो गया । पहाडियों ने इसकी निन्दा तो की लेकिन छानवीन में कोई रुची नहीं ली । मधेशियों के कत्लेआम पर कोई रुची नहीं लेती सरकार । इसी तरह पंचायती व्यवस्था में डा.लक्ष्मीनारायण झा,साकेत मिश्राआदि कई लोगों को लापता कर दिया गया । उसकी कोई छानवीन नहीं की लोगों ने । मधेशी तो जैसे भेंड वकरी हो गये हैं । परन्तु इसका वदला चुका लिया जयकृष्ण गोईंत ने । उसने भी झलनाथ खनाल के एक सहकर्मी को मार डाला । वे पहाड के वहुत वडे नेता थे । अव स्तव्ध होने की वारी पहाडी समुदाय की थी । इस तरह वदला पर वदला कितने वदला लेंगे लोग ? इसका अन्त कहीं नहीं था । इसी वीच एक और घटना हो गयी । किसी ने चुरे क्षेत्र के एक चर्च के वडे पादरी की हत्या कर दी । उस पादरी का नाम देश विदेश में फैल चुकी थी । इस हत्या की खवर मेडिया के द्वारा सारे संसार में फैल गयी । सारा युरोप प्रतिक्रिया में उतर गया । सरकार जवाव देती कि इसे आतंकवादियों ने किया है । आतंकवादी कहते कि सरकार हत्या करके इल्जाम हम पर थोपना चाहती है । हम मधेश की लडाई लड रहे हैं । हम आतंकवादी नहीं हैं । हम स्वतंत्रता सेनानी हैं । अव सच क्या है यह कौन जाने ? वात सुरक्षा परिषद तक पहुँची । वे लोग नेपाल पर दवाव वनाने लगे कि हिंसा वन्द करो । पर चीन नहीं मानता था । वह सरकार को मदद करता था । इधर हिन्दुस्तान भी माननेवाला नहीं था । वह आतंकवादियों को मदद करता था । नतीजा यह था कि हत्या हिंसा थमने का नम नहीं ले रहा था । एक अपने अस्तित्व के लिये लड रहा था । दुसरा अपने तथाकथित नश्लवाद वनाम अखण्डता के लिये लड रहा था । संसार वीच का रास्ता निकालने का उपाय वना रहा था । वह देख रहा था

कि मधेश का अस्तित्व किस तरह मिटाया जा रहा है । चुरे भाँवर का कहीं नाम निसान नहीं था । वह कहाँ से कैसे आ गया ? झापा,मोरंग,सुनसरी, चितवन,कैलाली,कंचनपुर आदि सव पहाडी खा गये । अपने अस्तित्व के लिये लडना मधेशियों का हक है ।

दोनों के वीच का मार्ग वस एक ही है । नेपाल सरकार एक मधेश प्रदेश की वात मान ले । देश का विखण्डन भी नहीं होगा और मधेश का अस्तित्व भी वच जायेगा । यही शान्तिवादी मधेशी नेताओं की मांग थी । झमक घिमिरे से लेकर सभी पहाडी साहित्यकार मधेश की मांग को विखण्डनवाद कहते हैं । अगर वे माओवादियो का समर्थन करते हैं तो फिर एक मधेश प्रदेश को क्यों नहीं मानते ? मधेश इतना कुचला गया है कि यहाँ नये युग का कोई साहित्कार भी पैदा नहीं हुआ । ताज्जुव है । झमक घिमिरे अपने को मानवतावादी कहती है । पर मधेशवादियों को विखण्डनवादी कहती है । तव तुम वोलो कि गणतंत्र भी विखण्डनवाद है । अन्यथा सच्चे साहित्कार के रुप में हमारा समर्थन करो ।

अन्तरराष्टिय दवाव सरकार पर पड रहा था कि वह शान्तिप्रिय मधेशी नेताओं से वात करे । उनके द्वारा जयकृष्ण गोईंत से वात करे । नेपाल की मौजुदा संरचना को वदले । एक तरफा युद्ध विराम करे । पर सरकार नहीं मान रही थी । वह एक तरफा युद्ध विराम नहीं करेगी । हिंसा जारी थी,जारी रही । रुकने का नाम नहीं था ।

२१

छठ का महापर्व । कार्तिक महीने के शुक्ल पक्ष की षष्ठी तिथि । यह मधेश में उल्लास के साथ मनाया जाता है । यह एक कठिन व्रत है जो दीपावली के वाद आता है । युवक और वच्चे इसे

DO NOT COPY

उत्सव की तरह मनाते हैं । पटाखे और फुलझडियाँ भी छुटती हैं । दुर देश में गये लोग अपने घर आते हैं और मिलजुल कर फिर चले जाते हैं । दिल्ली,पंजाव,काठमाण्डु पोखरा आदि सभी जगहों से छोटे छोटे गरीव लोग अपनी खुन पसिने की कमाई घर लाते हैं जिससे उस घर की रोजी रोटी चलती है । आजकल वहुत से लोग विदेश भी चले जाते हैं : कतार,मलेशिया अरव आदि देशों में । वहाँ से वे नही आ पाते । कोरिया में वे नहीं जा पाते क्योंकि वहाँ पर सरकारी समझौता हुआ है । सरकार के किसी भी काम में मधेशियों को अवसर नहीं मिलता । इन गरीव मजदुरों के प्रति भी भेदभाव है । पहाड पर लोग इनका तिरस्कार करते हैं । उनको धोती,मर्सिया आदि सव कहते है. । तरकारी वेंचने वाले या खोमचेवाले भी जरा सा भाव इधर उधर होने पर पिटाई खाते रहते हैं । पर तिरस्कृत होकर भी उनके उपर अपने परिवार का पालन पोषण करने की गहन जिम्मेवपारी होती है । वे सभी इस छठ के महापर्व में शामिल होते हैं । सृष्टि के जन्मदाता एवं संरक्षक सुर्य देवता का यह पर्व एक खोज का विषय है कि कव से वे सुर्योपासक वने ? औरतें कठिन व्रत में होती हैं । दो दिनों का उपवास कर वे घाट पर जाती हैं । वहाँ सिरसोपता के चारों तरफ वैठकर छठी मैया के गीत गाती हैं । फिर पहले दिन अस्त हुये सुर्य और दुसरे दिन उगते हुये सुर्य को अघ्र्य देकर घर वापस आती हैं । युवक उनके ठेकुवा,मिठाई और ईख से भरे हुये दउरे को घाट तक पहुँचाते हैं । घाट किसी नदी या तालाव के किनारे होता है । युवक उन्हे घाट तक पहुँचा कर वही गप सप करने लगते हैं । वच्चे फुलझडियाँ और पटाखे छोडने लगते हैं । युवको का गपसप राजनीति, सिनेमा, साहित्य आदि विषयो पर होती हैं । तीन,चार या पाँच आदमी की टोली अपने आप वन जाती है । इस तरह सभी लोग इस खुशी मे. शामिल होते हैं ।

छठ के इसी व्रत का दिन था । तीन चार नवयुवक

DO NOT COPY

साहित्य के वारे में चर्चा करने लगे । वे शेक्सपियर से लेकर जयशंकर प्रसाद,काली दास सुमित्रा नन्दन पंत,प्रेमचंद सभी रचनाकारों पर वाते करते करते नेपाली साहित्यकारों पर भी आ गये । यहाँ कवि लक्ष्मी प्रसाद देवकोटा से लेकर भानुभक्त की प्रशंसा उसमें नहीं होने का सवाल ही नहीं था ।
,,झमक घिमिरे को नोवेल पुरस्कार मिलना चाहिये । ,, मनोज ने कहा
,,ये नोवेल पुरस्कार वाले तरफदारी करते हैं । एशियन को नोवेल वडी मुस्किल से देते हैं । ,,रामचन्द्र सिंह ने जवाव दिया ।,
,,प्रकृति का अभिशाप और वरदान दोनों है झमक । अपांग और निर्वल, दुसरों पर आश्रित, हर तरह से प्रकृति का अभिशाप है वह । परन्तु उसकी कलम का संसार,उसकी मष्तिष्क की उर्वरता संवेदनशीलता की पराकाष्ठा एवं कल्पनाशीलता की उँचाई उसका वरदान है । ,,मनोज ने कहा ।
,,वह नारी जगत की ऐसी आभा है जिसे मनुष्य ने वडे सौभाग्य से पाया है ।,,
,,हमारा सौभागय है कि नेपाल ने इसे पाया है । वह दुनियाँ में नेपाल की प्रतिनीधि है । झमक घिमिरे साहित्य कला प्रतिष्ठान वनाकर लोगों ने उन्हे आदर दिया । इसकी जितनी तारीफ की जाय वह कम है । हमे वीरगंज में भी वुला कर उन्हे सम्मान देना चाहिये ।,,
अव सामसुन्दर को रहा नहीं गया । वह नवयुवकों का गपसप सुन रहा था । उसे कल ही हरिद्वार का प्रोग्राम वनाने अयोध्या जाना था । पिपरा मठ के दिव्यदास अयोध्या चले गये थे । सामसुन्दर ने उन नवयुवको. से कहा :
,,आपलोग जो कहते हैं वह सव तो ठीक है पर विद्यापति के वारे मे आपलोगों का क्या खयाल है ? ,,
उन नवयुवकों पर उन्हे गर्व भी था और पीडा भी थी । गर्व

DO NOT COPY

इसलिये था कि वे सवकुछ जानते थै । पीडा इसलिये थी कि वे केवल दुसरों का ही वखान कर रहे थे । अपने को तो वे भुल चुके हैं ।
,,हाँ हाँ विद्यापति भी एक महाकवि थे । ,, सभी ने स्वीकार किया पर उनके वारे में वे कम जानते थे । अव जाकर थोडा वहुत विद्यापति समारोह होने लगा था । उसमें भी केवल मिथिला के लोगों का ही पहल है । पहाडी समुदाय उससे परिचित नहीं है । पहाडीयों को तो मधेश के सभी लोग जानते हैं । पर मधेशियों की प्रतिभा को पहाडी लोग न तो जानते हैं न तो जानने जनाने की कोशीश ही करते हैं । भानुभक्त, देवकोटा चौक सव वनते हैं मधेश में । पर मधेश की प्रतिभा का ऐसा कोई चौक पहाड पर नहीं वनता । मधेश आन्दोलन में भानुभक्त की प्रतिमा को लोगों ने क्यों तोड दिया ? इस पर सभी लोग हाय तौवा मचाते हैं । पर उसकी समीक्षा नहीं करते । सामसुन्दर ने आगे कहा :
,,माफकीजिये । लक्ष्मी प्रसाद देवकोटा महाकवि हैं । एक ही रात में पुरा खण्ड काव्य लिखने की क्षमता है उनमें । पर वे ही वे आदमी हैं जिसने हमारी हिन्दी का विरोध किया है । हम हिन्दी से जुडे हुये लोगों को काटा है उससे । ,,
,,यह वात तो ठीक है । सुनते हैं कि वे हिन्दी के कट्टर विरोधी थे ,,रामचन्द्र सिंह ने इसका समर्थन किया ।
,,झमक घिमिरे सारी मानवता के लिये लिखती है । लेकिन हमे साफ शव्दों मे साम्प्रदायिक और विखण्डनवादी कहती है । वह राजनीति से अलग नहीं हो सकी । उसने माओवादियों को,जंगल पस्ने वीरहरु कहा है । परन्तु मधेशियो के वम एवं हथियार उठानेवालों को साम्प्रदायिक और विखण्डनकारी कहती है । क्या ऐसा नहीं है ?,,
,,यह वात तो है,, सभी ने स्वीकार किया ।
,, हमे लक्ष्मी प्रसाद देवकोटा और झमक घिमिरे से क्या चाहिये ?

एक निर्वल निःसहाय हमारी वेटी है वह । हमारी रोजी रोटी वह नहीं दे सकती । हमारा अधिकार वह हमे नहीं दे सकती । पर अपनी आवाज तो हमे दे सकती है ? हमे और क्या चाहिये उससे ? कृपा करके अपनी आवाज तो दो । इन सदियों से अपहेलित एवं कुचले हुये लोगों के वीच तुम्हारी प्रतिभा का कोई जन्म भी नहीं ले सका । सदा भयभीत और डरा हुआ समुदाय तुम जैसा कोई साहित्यकार पैदा नहीं कर सका । ये नवयुवक तुम्हे ही अपना साहित्यकार मानते हैं । देखो किस तरह तुम्हारे गुणगान गा रहे हैं । इन मदेसीयों के लिये कुछ तो लिखो । ऐसा न हो कि मधेशी तुम्हे एक पहाडी ठकुरी की वेटी ही कहने पर मजवुर हो जाँय । महाकवि देवकोटा को भी इस मधेश के वारे में कुछ लिख देना था । उन्होने नहीं लिखा । तुम तो लिखो । तुम अभी जिन्दा हो । देश की इस जिन्दा समस्या को संवोधित करो । प्रज्ञा प्रतिष्ठान से लेकर सभी पुरस्कार तुम्हारे लिये वने हैं । तो हम छोटे छोटे मधेश के कवि और लेखक जो मधेश में जुगनु की तरह चमक कर रह जाते हैं,साहित्याकाश पर नहीं छा पाते, वे कहाँ जाँय ? मैं तुमसे गिडगिडा कर कोई भीख नहीं मांग रहा । केवल तुम्हे तुमहारे कर्तव्यवोध का स्मरण करा रहा हुँ ,, सामसुन्दर वहुत भावुक हो गया । वातावरण गमगीन हो चुका था । छठव्रती महिलाये सुर्यको अर्घ्य चढा कर जाने लगी थी । नवयुवकों ने वातचीत का विषय वदल दिया । एक प्रौंढ और वृद्ध व्यक्ति का उद्गार उन्हे छु गया था ।

धिरेधीरे शाम गहराने लगी थी । सभी लोग अपने अपने घरों को जाने लगे । सुवह कोई आयेगा कोई नहीं आयेगा । शाम को ही इस व्रत का रौनक अधिक होता है । सुवह व्रती जल्दी मे होती हैं । वे भुखी भी होती हैं । जल्दी जल्दी सुर्य भगवान को अर्घ्य देकर रास्ते में मिले सभी देवी देवताओं और पेड पौधों की पुजा करते हुये घर जाकर अपना व्रत तोडती हैं । इसलिये सुवह उतना रौनक नहीं

होता ।

दुसरे दिन सामसुन्दर और सीता दोनो अयोध्या को रवाना हो गये । वहाँ सरजु स्नान करेंगे, भगवान का दर्शन करेंगे और हरिद्वार का कार्यक्रम भी वनायेंगे । वे लोग रक्सौल से सत्याग्रह ट्रेन पकड कर मनकापुर पहुँचे और वहाँ से अयोध्या को रवाना हुये । अयोध्या पहँच कर उनलोगों ने हरकी पौडी में स्नान किया । मन्दिर मन्दिर दर्शन करते हुये वे वावा दिव्यदास के पास पहुँचे ।

,,अरे तुमलोग कैसे पहुँचे । मैं तो कल ही पिपरा मठ जाउँगा । ,,
ववा ने उन्हे देखते ही कहा ।

,,हमे पता नहीं था वावा । सोचा कि सरयु में स्नान भी करेंगे ,भगवान के दर्शन के साथ आपका दर्शन भी कर लेंगे ,सो चले आये । ,,

,,अच्छा आओ,वैठो । कल हमलोग एक साथ चलेंगे । ,

सामसुन्दरऔर सीता उनकी आत्मियता से वडे प्रसन्न थे । वावा ने उन्हे अपने पास विठाया और घर परिवार से लेकर पिपरा मठ, अगल वगल देश दुनियाँ आदि सभी का हाल चाल पुछा । सीता तो उनसे कंठी भी ले चुकी थी । सामसुन्दर ने कहा :

,,वाकी सव हाल चाल ठीक है वावा पर देश का हाल ठीक नहीं है । ये पहाडी लोग मधेश का अस्तित्व, उसकी पहिचान मिटा ही देंगे । ,,

,,तुम ठीक कहते हो सामसुन्दर । नेपाल जवतक हिन्दु राष्ट था तव तक ठीक था । पर अव तो सवकुछ तितर वितर हो गया है । ,,

,, मैं आपके इस वात से सहमत नहीं हुँ वावा । हिन्दु के नाम पर आप महात्माओं को भडकाया गया । परन्तु अभी भी वही हाल है । उससे भी भयंकर गति से मधेश को समाप्त करने की प्रकिया जारी है । ,,

,,अरे तुम्हारे मधेश को उठा कर थोडे कोई ले जायेगा ? वह तो वही रहेगा । वह धरती तो उसी जगह रहेगी । हिन्दु राष्ट था तो ठीक था

। ,,
ववा को केवल हिन्दु राष्ट खतम होने का गम था । और चिजों की जानकारी उनको कम थी ।
,,आप वावा लोग समझते ही नही हैं । आप साधु महात्माओं को हिन्दु राष्ट का एक सनक सवार है । राजाओं का समर्थन करते हैं । उसने २५० वर्षों से हमे भीखारी वना दिया है । ,,
,,और अव क्या हो रहा है? इसाइयत फैल रही है । यह क्या ठीक है ?,,
,,अव भी ठीक नहीं है यह तो मैं कहता ही हुँ । इसाइयत फैल रही है । इसको रोकिये । धर्म के वारे में यह आपका अधिकार है । लेकिन राजनीति के वारे में राजा का समर्थन आप नहीं करिये । ,,
,,नहीं सामसुन्दर राजा का समर्थन तो हम करेंगे । हिन्दु राजा और हिन्दु राज्य का समर्थन तो हम करेंगे । हिन्दु राज्य में ही हमारे हिन्दु राज्य नेपाल का संरक्षण होगा । उसी में समस्त हिन्दुओं और हम साधु संतों का कल्याण है । अन्यथा हम मारे जायेंगे । यह मुझे साफ दिखलाई पड रहा है । हम साधु संतो ने ही हिन्दुओं को वचा कर रखा है । नहीं तो कव का हिन्दु समाज समाप्त हो चुका होता । मुसलमानों के आक्रमण,उनके राज्य और फिर अंग्रेजों के राज्य में भी हम साधु संन्यासियों ने ही हिन्दुओं की नाव को पार लगाकर लाया है । ,,
अव समासुन्दर निरुत्तर होने लगा । यह वात अंशतः सत्य थी । सभी वातें सीता सुन रही थी । ऐसे समय में वह सिर्फ सुनती थी, वोलती नहीं थी । वह वहुत कुछ जानती भी नहीं थी ।
,,वावा आप जो कहते हैं वह अंशतः ठीक है । पर जनता राजनीति से भी पीडित है । जिस धर्म को आप वचा कर लाये हैं,तुलसी दास,चैतन्य और विवेकानन्द ने जिसका उद्‌घोष किया है उसे हमारे

DO NOT COPY

समाज में राजनीति ने ही पनपने नहीं दिया । जनजन तक पहुँचने नहीं दिया ।,,

,,नहीं वेटा,हमारा उद्येश्य वृहत्तर था । गोरखनाथ ने इसी वृहत्तर कार्य को करने के लिये धर्म और राज्य के लिये एक अलग हिन्दु राज्य कायम करके दिखला दिया । मुसलमानों और अंग्रेजों के राज्य से अलग हिन्दु राज्य वनाकर दिखला दिया । अभी का नेपाल नाथ सम्प्रदायों की देन है । मुसलमानों और अंग्रेजों से अलग हटकर एक हिन्दु राष्ट कायम करना था उन्हे । नेपाल के हिन्दुत्व का महत्व इसलिये भी है । हिन्दु तो यहाँ वहाँ सभी जगह हैं । पर नेपाल को इसके लिये खास तरह से कायम किया गया । ,,

,,विल्कुल दिखला दिया वावा नाथ सम्प्रदायों ने । परन्तु उसने हिन्दुत्व के नाम पर भ्रष्टाचार और अनाचार को अपना लिया है । वह अपने ही मुल्क के एक टुकडे के अस्तित्व को नहीं मानता । उसको उसने कुचला है । ,

,,अगर वह भ्रष्ट हुआ है तो उसे उवार कर लाना है । गोरखानाथ की तरह । साधु संतो को उसे फिर से सन्मार्ग पर लाना है । उसे खतम नहीं करना है ।,,

,,नहीं वावा अव उसे वचाने का कोई लाभ नहीं । केवल हिन्दुत्व को ही वचाईये । राजाओं के द्‌वारा आपने हिन्दुत्व को वचाकर जहाँ तक लाया है वहाँ तक ठीक था । माना कि हिन्दुओं में राजा राम की तरह अनेक उदार राजा हुये हैं । जनता के लिये सव कुछ त्याग देनेवाले राजा हुये हैं । लेकिन अव वह वात नहीं रही । अव उनको त्याग कर चलना होगा । क्या वे हमारे मधेश को एक प्रदेश मानेंगे ?,,

,, तुम भुलते हो वत्स । हम राजाओं को ही पथभ्रष्ट होने से वचायेंगे । पथभ्रष्ट नन्द को गद्‌दी से उतार कर मौर्य सम्राज्य कायम करने के लिये चाणक्य को हम छुट देते हैं । एक पथभ्रष्ट राजा को

DO NOT COPY

हटाकर एक आदर्श राजा की स्थापना को हम मानते हैं । उसके वदले में कोई तानशाह उदार नहीं होता । हम तो हिन्दु राजा को ही हिन्दु हृदय सम्राट मानते हैं ।,,

,, तो आपके राजा एक मधेश प्रदेश मान जायेंगे ? ,,

,,तो क्या ये माओवादी तुम्हारे एक मधेश प्रदेश को मान गये ? उल्टे इसाइयत को लाकर खडा कर दिया । ,,

,,इसलिये तो जयकृष्ण गोईंत अपनी लडाई लड रहा है । वह किसी धर्म की नहीं राजनीतिक लडाई लड रहा है ।,,

,,उसका अधिकार है लडना पर हम तो हिन्दु धर्म के लिये ही लडते हैं । ,,

,, लेकिन उसको भी तो कोई नहीं मानता । सव उसे साम्प्रदायिक कह रहे हैं । आपके राजा भी उसको साम्प्रदायिक ही कहते हैं ।, ,

,, यह वात ठीक है । हम साधु संयासियों को उन्हे समझाना चाहिये जो उनके निकट हैं । एक मधेश प्रदेश की मांग तो विल्कुल जायज है । खैर छोडो । अव रात हो गयी है फिर कल वात करेंगे ।,

ववा इतना कहकर उठ गये और अपने आसनी पर चले गये । सामसुन्दर अपने को शायद विजयी समझने लगा था । सीता के साथ वह दुसरे कमरे में सोने चला गया । दुसरे दिन ट्रेन से तीनों पिपरा मठ के लिये रवाना हो गये । वावा कभी कभार अयोध्या चले जाते थे । पर उनको अव पिपरा मठ ही प्रिय लगने लगा था । महन्थ कोई नहीं था पर पुजारी सुदर्शन दास थे । करीव आठ दस साधुओं के द्वारा आरती पुजा होती । फिर पंगत करके विश्राम करते । शाम को रोज भजन कीर्तन होता जिसमें स्थानिय प्रौंढ और वृद्ध भाग लेते । मठ की काफी जमीन नगरपालिका ने कव्जा कर लिया जिस पर एक पार्क वना दिया गया है । वावा रोज उस पार्क में टहलते हुये चिन्तन मनन करते हैं । परन्तु उनका चिन्तन उनके हिन्दुत्व से आगे नहीं जा सका । वे ससांर की सभी चिजों को केवल अपने हिन्दुत्व के

चश्मे से देखते थे । वे कहाँ तक ठीक थे उसे सामसुन्दर नहीं जानता था । उसे लगता था कि सवकुछ हिन्दुत्व के चश्मे से नहीं देखा जा सकता । पर वह हमेशा उनके सम्पर्क में रहता था । सीता का तो वे गुरु ही थे ।

२२

एक ट्रेन सरपट भागी जा रही थी । उसके एक डिव्वे में अन्य मुसाफिरों के साथ तीन लोग वैठे हुये थे : वावा दिव्य दास,सामसुन्दर और सीता । पिपरा मठ में उनके आने के वाद यह प्रोग्राम वना कि इस वार पहले हरिद्वार जायेंगे । उसके वाद पशुपति नाथ और जानकी मंदिर का दर्शन करेंगे । ट्रेन रक्सौल से छुट चुकी थी । सभी मुसाफिर गपसप करते जा रहे थे । उसमें कोई मुंगफली खा रहा था । कोई अखवार पढ रहा था । तो कितने उपर जाकर सो गये थे । इतने में गीत गाता हुआ एक भीखारी लडका आया । सामसुन्दर ने उसे एक रुपया दिया और वह चला गया । तीनों आदमी मौन थे । इस मौन को सामसुन्दर ने तोडना चाहा । वे हरिद्वार गंगा नहाने जा रहे थे । इसलिये गंगा का जिक्र चल पडा ।

,, इस गंगा के वारे में कुछ वताईये वावा,,सामसुन्दर ने कहा ।

,, क्या वतायें ? यह गंगा हिन्दुओं का प्राण है । यह भारत का प्राण है । यह जगततारीणी है ।,,

, ,यह जगततारीणी कैसे हो गयी वावा ? ,,

,,यह अपने उद्गम के समय से ही जगततारीणी है । भगीरथ ने इसी के लिये लाया ही था स्वर्ग से । महाराजा सगर के पुत्रों को इसने तारा । उसके वाद यह सारे हिन्दुओं को तार रही हं । ,,

,, पर यह कैसे तारती है अव तक ? अन्य नदियाँ भी तो हैं । क्या वे नहीं तारती ? ,,

रास्ता कट रहा था । सीता सभी वातें ध्यान से सुनती थी । इसी

तरह उसने जीवन में अपने सारे अनुभव वटोरे थे । वावा ने आगे कहा :
,, गंगा का तट ऋषि महर्षियो का तट है । यह सौभाग्य अन्य नदियों को प्राप्त नहीं है । यहाँ से हिन्दुओं की सभ्यता विकसति हुई है । सभी ऋषि मुनियों की तपस्या से गंगा और पवित्र हुई । विष्णु का चरणामृत यह गंगा ऋषि मुनयों के तपोवल से पवित्र होती रही । ऐसा और नदियों के साथ नहीं हुआ है । ,,
,, पर हिन्दुओं की सभ्यता तो सिंधु नदी से विकसित मानी जाती है । इसलिये हिन्दुओ को सिंधु से हिन्दु कहते हैं ।,,
, यह ठीक है । पर वाद में गंगा को लोगो ने अपना लिया और गंगा ही आर्य सभ्यता की केन्द्र वनी । सभी की भाषा में मैंने हिन्दु कह दिया । हिन्दु विदेशियों का दिया हुआ नाम है । ,,
,, पर यही पवित्रता तो सिंधु में भी होनी चाहिये थी । यहाँ भी ऋग्वेद आदि लिखे गये । ,,
,, उसके वाद लोगों ने गंगा को अपना पावन नदी मान लिया । महर्षियों के तपोवल से इसका पानी इतना शुद्ध हो गया कि उसमें आज तक किटाणु नहीं पनप पाते । ,,
,, नहीं वावा अव वैसी वात नहीं है । ,,
,, हाँ सुनते हैं कि अव वैसी वात नहीं रही । पर मैं नहीं मानता । हजारों वर्षों से लोग इसमें मुर्दे फेंकते रहे ,हड्डियाँ विसर्जित करते रहे । पर वे सभी गलपच जाते हैं । इसके पानी में हड्डियों को भी गला देने की शक्ति है । हजारो वर्षों से तो गंगा में मुर्दों एवं हड्डियों का ढेर लग चुका होता । गंगा मर चुकी होती उनसे । पर वे कैसे गलपच जाते हैं पता ही नहीं चलता । गंगा के पानी में उसे तोड डालने का आवेश,चार्ज भरा होता है । ,,
,, पर अव ऐसी वात नहीं है वावा । अपने उद्गम स्थल से लेकर गंगा सागर में मिलने तक यह फैक्टरियों और आदमी के शौचों के

DO NOT COPY

वहने का गंदा नाला वन गयी है । ,,
,, हाँ यह वात तो है । गंगा उससे अपवित्र हुई है । गंगा थोडे कहती है कि इसमें फैक्टरियों के विषाक्त पानी और शौचों को वहाओ । वह तो यह कहती है कि अपने को तारो । मुर्दों को वहाने से वे तर जाते हैं । गंगा निर्मल ज्यों की त्यों रह जाती है । तुम अपने को तारो । अपने शौचों को मत तारो । ,,
,, तो वे वन्द होने चाहिये ? ,,
,, अरे वन्द ही नही होने चाहिये । जो ऐसा करते हैं उसे दण्ड भी होना चाहिये । जितना आन्दोलन हिन्दुस्तान को स्वतंत्र होने के लिये होता था उतना आन्दोलन गंगा को पवित्र करने के लिये भी होना चाहिये । यह हमारी माँ है, हमारी पवित्र माँ । ,,

रास्ता कट रहा था । लोग झपकियाँ लेने लगे । सीता इसे सुनते सुनते सामसुन्दर के कंधे पर सिर टिका कर सो गयी । गोरखपुर में कुछ देर के लिये गाडी रुकी तो सवने खाना खाया । उसके वाद सभी लोग अपने अपने वर्थ पर सो गये । रात भर चलने के वाद वे लोग दुसरे दिन हरिद्वार पहुँचे । मकर संक्रन्ति के समय गंगा तट हिन्दुओं से खचाखच भरा हुआ था । जन सैलाव उमडा हुआ था पवित्र गंगा में नहाने के लिये । लोग गंगा और गंगा स्नान की आस्था से इतने भरे हुये थे कि कहना होगा कि सचमुच गंगा हिन्दुओं का प्राण है । गंगा के उद्‌गम के समय से लेकर आजतक यह आस्था वदस्तुर कायम है । तनिक भी कमी नहीं आयी है इसमें । यह सचमुच हिन्दुओं का प्राण है । अन्य नदियाँ भी हैं जिन्हे हिन्दु पुजते है, मानते हैं । किन्तु गंगा हिन्दुओं की प्राण नदी है । दुनियाँ में कही भी किसी भी नदी का ऐसा मुल्यांकन नहीं है । विशाल से विशाल नदियाँ हैं पर गंगा की टक्कर की कोई नहीं ।

वावा दिव्यदास,सामसुन्दर और सीता तीनों ने गंगा की इस पवित्र धारा में स्नान किया । सुर्य भगवान को जल अर्पण किया ।

DO NOT COPY

सीता ने पति के तरने की और सामसुन्दर की लम्वी आयु की मन्नत मांगी । उसके वाद शहर में घुमफिर कर मिठाईया आदि लेकर घर को चल पडे । लोग स्नान करने आते हैं और चल पडते हैं । वावा ने तुलसी दास की एक नयी किताव रामचरितमानस,खरीदी और उसे सामसुन्दर को दे दिया ।

वे लोग स्टेसन से ट्रेन में वैठे । सुवह वह ट्रेन लखनउ पहुँची । सीता ने वावा और सामसुन्दर से लखनउ शहर देखने का आग्रह किया था । इसलिये टिकट लखनउ तक ही लिया गया था । स्टेसन पहुँच कर सीता ने वावा को एक टेलीफोन नंवर यिा । यह टेलीफोन नंवर फातिमा का था जिसे उसने सीता को पटना में दिया था । वावा ने उस फोन को मिला दिया । सीता तो टेलीफोन मिलाना भी नहीं जानती थी । सीता ने टेलीफोन पर फातिमा से वात की ।

,, हेलो, में तुम्हारी सहेली सीता वोल रही हुँ । मैं हरिद्वार से नहा कर आ रही हुँ । मैं तुमसे मिलना चाहती हुँ । हमलोग लखनउ शहर देखना चाहते हैं ।यही स्टेसन पर हैं ।,,

उधर टेलीफेन पर खुशी का पारावार नहीं था । सीता आयी है वचपन की सहेली । वह तो अपने आप में नहीं थी ।वह वोली :

,, तुम वही रहे । मैं आ रही हुँ । वही वातें करेंगे । ,,

आनन फानन में फातिमा आ गयी एक टैक्सी लेकर । दोनों सखियों की मुलाकात हुई और दोनों एक दुसरे के गले से लिपट कर स्टेसन पर ही रोने लगी । औरतों का यह ज्वार रोके नहीं रुकता । वह भी हिन्दु और पुरानी पीढी की औरतों में । पर वह स्टेसन था । वे जल्दी चुप हो गयीं और वतियाने लगी । वावा और सामसुन्दर तवतक मुक दर्शक वने रहे । फिर वे लोग लखनउ शहर देखने चले । फातिमा ने उन्हे भुलभुलैया, गोमती तट,चिडियाखाना आदि सभी जगहों की सैर कराते हुये उन्हे अपने यहाँ चलने को कहा । फिर कुछ सोच कर चुप

हो गयी । इन सररीफ लोगों को उसमें भी एक वावा साथ में ,वहाँ कैसे ले जा पाउागी ? वे लोग फिर शाम तक स्टेसन पर ही लौट आये । रात को गाडी थी । स्टेसन पर सीता फातिमा से आग्रह करने लगी :

,, सवितरी इस वार तुम्हे मेरे यहाँ चलना होगा । हमलोगों ने फगुनी तेरस में पशुपतिनाथ जाने को प्रोग्राम वनाया है । तुम भी उनका दर्शन कर लेना । ,

,, नहीं सीता तुम तो जानती हो । हम वहाँ कैसे जा सकते हैं ? पशुपतिनाथ अपवित्र हो जायेंगे । ,,

,, अरे पगली, पशुपतिनाथ अपवित्र होनेवाली चीज नहीं हैं । वे छुतों अछुतों सवके देवता हैं । सभी पीडितों के देवता,सभी तिरस्कृतों के देवता । संसार जिसे तिरस्कृत कर देता है वे उसे अपना लेते हैं , पवित्र गंगा की तरह भुतनाथ । उनके जटा से निकलकर हीं गंगा इतनी पवित्र हुई है । फिर तुम फातिमा ही नहीं सवितरी भी तो हो । सती सावित्री । ,,

,, परन्तु वहाा तो मुसलमानों का प्रवेश निषेध है । ,,

, फातिमा तुझमें और मुझमें क्या पर्क है ? वही चेहरा, वही रंग, वही स्वरुप । कौन पहचानेगा कि तुम हिन्दु नहीं हो ? मुसलमान तो स्वयं पशुपतिनाथ में प्रवेश नहीं करते । वे स्वयं उन्हे अपवित्र मानते हैं और हिन्दुओं को काफिर कहते हैं । अगर भारत का मुसलमान किसी मन्दिर में जाता है तो कौन उसे पहचान सकता है कि वह हिन्दु है या मुसलमान ? मैं तो नहीं समझती कि कोई पहचान सकता है । इस वात में हिन्दुओं का कोई दोष नहीं है । मत भुलो फातिमा कि तुम एक हिन्दु औरत हो और भारत में इस तरह कितने हिन्दु मुसलमान हो गये हैं इसका ओर छोर नहीं । वल्कि मैं तो कहती हुँ कि भारत के सभी मुसलमान हिन्दु हैं । तुम चलो मेरे साथ । ,,

DO NOT COPY

सीता की दलील से फातिमा चकित रह गयी । वह सीता के आग्रह को ठुकरा नहीं सकी । वह भी तो चारों ओर घुमना चाहती है । इस प्रौंढावस्था में मेरा काम ही क्या है ? उसने कहा :

,, रुको मैं अभी आती हुं । यों गयी और यों आयी । ,,

इतना कह कर वह टैक्सी से अपने कोठे पर गयी । उसने एक लडकी नुरजहाँ को चाभी हाथ में थमाया और वोला :

,, यह चाभी अव मैं तुम्हे दे रही हुँ । जिस तरह से अमीरन अम्मा ने यह चाभी मुझे दी थी उसी तरह इसे मैं तुझे दे रही हुँ । जव मैं लौटुँ तो यह चाभी मुझे देना या मत देना । अव यह चाभी तुम्हारी है । ,,

इतना कह कर फातिमा फुर्ती से लौट गयी । उस लडकी को कुछ कहने का मौका ही नहीं दिया । जव वह स्टेसन पहुँची गाडी का समय हो चुका था । सभी लोग उसमें वैठे और गाडी रक्सौल के लिये रवाना हो गयी ।

सुवह वे लोग रक्सौल पहुंचे । वहाँ से टमटम के द्‌वारा आधे घंटे में पिपरा मठ पहुंच गये । वावा वही उतर गये । टमटम मधेश सेवा आश्रम की ओर चला । मधेश सेवा आश्रम के अतिथिशाला में फातिमा रही । वहाँ पर सभी के खाने के लिये एक किचेन और एक रसोईये का इन्तजाम था । वही उसे आराम करने के लिये छोड कर सीता और सामसुन्दर अपने घर पहुंचे । अव वे रोज पिपरा मठ की आरती के वाद मधेश सेवा आश्रम पहुंच जाते थे । पहले तो यदा कदा ही जाते थे । वहाँ से रोज फातिमा से वातचीत कर,मधेश सेवा के सुरम्य एवं प्राकृतिक वातावरण का आनन्द लेकर घर लौटते ।

सभी लोग अव फाल्गुन महीने की शिवरात्रीका इन्तजार करने लगे ।

ए ए ए

एक बस काठमाण्डु की ओर भागी जा रही थी । बस यात्रियों से खचाखच भरी हुई थी । उस बस में बाबा दिब्य दास, सीता सामसुन्दर और फातिमा सवार थी । फाल्गुन कृष्ण द्वादशी । टिकट पहले ही ले लिया गया था । शिवरात्रि के दिन पशुपतिनाथ को जल चढाना था । रास्ते भर लोग उँघते, सोते, वोलते बतियाते चले जा रहे थे । बस चितवन के रामनगर में रुकी जहाँ सभी यात्रियाँ ने खाना खाया । उसके बाद बस फिर चली और कलंकी पहुँच गयी । वाहाँ से लोगों ने टैम्पु करना चाहा पर फातिमा ने रोक दिया । नहीं, हम लोग टैक्सी से चलेंगें । उसके पास पैसे की कमी नहीं थी । चलते समय काफी रुपये लेकर चली थी । सुवह लोग जब टैक्सी से पशुपति पहुचे तो जन सैलाव उमडा हुआ था । उसी भीड में श्रीखिण्डी की एक सहेली पवितरी भी मिल गयी । वह भी पशुपति दर्शन को आयी थी । सीता ने उसे पहचाना और सवितरी से परिचय कराया । वह सवीतरी को देख कर चकित हो गयी । गौशाला से वोलते वतियाते वे लोग पैदल पशुपति मंदिर चले ।

चीरकाल से यह आस्था ज्यों की त्यों है । परन्तु इधर बीस बर्सों से आतंकवाद के चलते इसमें कमी आती गयी है । फिर भी यह आस्था टुट नहीं सकती । लोग जान पर खेलकर अपनी बैष्णों देवी की यात्रा, पशुपति यात्रा सव करते हैं । आतंकवाद सभी चीज को तोड सकता हैं लेकिन इस आस्था को नहीं तोड सकता । नेपाल के लोग भारत को दिनरात गाली करते हैं । भारत के लोग अपनी आस्था में निष्ठावान हैं । वे नहीं रुकते ।

पैदल चलकर चारों ने पशुपति मंदिरमें प्रवेश किया । उस दिन पशुपतिनाथ के चारों दरवाजे खुले होते हैं । कुछ लोग पुजारी को इंडियन कहकर हटाना चाहते थे । नेपाल और भारत के धार्मिक एवं सांस्कृतिक सम्बन्ध को कहीं इस बचकानी हरकतों से तोडा जा

DO NOT COPY

सकता है ? तब तो राम भी इंडियन हैं जिनकी पूजा सभी नेपाली उसी तरह करते है जैसे इंडियन लोग करते हैं । उन पहाडों एवं कन्दराओं के कोने–कोने के घरों में टंगे राम के फोटो को तुम हटा पाओगे ? यह तो सर्वथा असम्भव है । फिर इन बेचारों पंडे पूजारियों को हटाने की बात कितनी बेमानी और हास्यास्पद है । आखिर वे नहीं हटा पाये, हटा ही नहीं सकते । पर कुछ लोग चीन की तरह दलाई लामा को हटा कर नकली करमापा लामाको वैठाना चाहते थे । पर वे सफल नहीं हुऐ । होना भी नहीं चाहिए । हिन्दू धर्म किसी भी जोर जबरदस्ती से खत्म नहीं हो सकता । पता नहीं कितने वर्वर लोग आये और सभी लोग गलपच गये । उनका पता नहीं है । हिन्दू धर्म सारी दुनियाँ में ज्यों की त्यों विराजमान है और रहेगा क्योंकि और धर्मों में लोगों को पचाने की शक्ति नहीं है । उनकी यही पाचनशक्ति नहीं होने के कारण वे मर जायेंगें , बिनष्ट हो जायेंगें । जीने के लिए पाचनशक्ति या प्राणशक्ति चाहिये । उन वर्वर आक्रान्ताओं के सामने इन पूजारियों को हटानेवाले तो कुछ भी नहीं हैं । इन्हें अपनी औकात मे रहना चाहिये ।

काठमाण्डु के लोग इस अवसर पर इन यात्रियों और साधु–महात्माओं का वडा आदर करते हैं । उनका प्रेम न रहे तो फिर उनका आना असम्भव हो जायेगा । यहाँ हिन्दुस्तान के तीर्थस्थलों की तरह पंडे पूजारियों की वस्ती भी नहीं है । हिन्दुस्तान में तो हर तीर्थस्थल में नेपाल के लिए अलग से लाल मोहरिया पंडे होते हैं । परन्तु काठमान्डु में उस तरह की ठगैतियाँ भी नहीं होती । इतने शुद्ध एवं इमान्दार आत्मा होते हैं यहाँ के लोग ।

पर चारों ओर आतंक का माहौल अभी था । पहाडी और मधेशी का गृह–युद्ध चल रहा था । इससे वेखबर लोग अपनी आस्था मे तल्लीन थे ।

DO NOT COPY

पवितरी, बाबा, फातिमा , सीता और सामसुन्दर चारों ने काठमाण्डु के मारवाडी बासा में रात बितायी । यह मारवाडीयों की कृपा है कि काठमाण्डु में उन्होंने एक शुद्ध शाकाहारी सदनको चला रहे हैं । काठमाण्डु में लोग त्योहार और धार्मिक पर्वों में भी मांसाहार को बर्जित नहीं करते । ठंडी जगह होने के कारण ऐसी परम्परा हो गयी होगी । परन्तु मारवाडी अतिथि सदन शुद्ध शाकाहारी है । भारत और मधेश से आये धार्मिक लोगों का यह शरण स्थल है ।

वहाँ पर रात गुजार कर वे लोग जनकपूर रवाना हो गये । अव जनकपुर का सीता दर्शन और धनुष स्थल को देखकर वापस लौटेंगे । रास्ते भर खचाखच भरी बस में कोई बातचीत नहीं कर सके । जनकपुर पहँच कर उन्हे राहत मिली । यहाँ अगहन शुक्ल पक्ष के पंचमी को जब मेला लगता है तब काफी भीड होती है । परन्तु भारत के लोग आते हैं तो इसी समय सीता दर्शन भी करके जाना चाहते हैं । फातिमा ने पशुपतिनाथ का दर्शन किया था और बडे मानोयोग के साथ जल चढाया था । गंगा का जल हरिद्वार से ही सीता और सामसुन्दर लेकर आये थे । यहाँ बस स्टैंन्ड से उतर कर सभी पैदल जा रहे थे ।

“बाबा अब सीता के बारे में कुछ बताइए ।” सीता ने बाबा से आग्रह किया ।

“बेटी,सीता के बारे में क्या बताउँ ? तुम भी तो सीता हो । बस यही समझो कि तपस्वियों के तप का फल है सीता । जब तपस्वियों के खुन का बूँद–बूँद जमा होता है तब एक सीता का निर्माण होता है । तब सीता धरती की कोख से निकलती है । सैकडों तपस्वियों की तपश्चर्या है सीता ।”

“इतना महान मुझे मत बनाइए बाबा । मैं मामूली सीता..............।”

DO NOT COPY

“नहीं बेटी” बीच में ही सीता की बात काटकर बाबा ने कहा” इस दुनियाँ में जितनी भी कष्ट सहनेवाली औरतें हैं वे सब सीता हैं । सीता अपार कष्टों को सह सकने की शक्ति से सीता कहलायी । तुमने भी जितने कष्ट सहे हैं वह सब सीता के अंश होने से हुआ है । तुम भी सीता का अंश हो, सीता माता का अंश सीता ।” सीता बिल्कुल चुप हो गयी । उसकी आँखों से झरने बहने लगे । नहीं बह सीता ही है ।

इतना उच्च मुल्यांकन करते हैं तब समाज के लोगों की प्रताडना क्या विसात रखती है ? वह रामचन्द्र का फोटो निकाल कर देखने लगी । वे जिसे वह सदा अपने पास रखा करती थी । फातिमा ने बढकर अपने आंचल से उसके आँसुओं को पोंछा । पैदल चलते समय कुछ पल के लिए गति रुक गयी । लोग देखने लगे कि वह रो क्यों रही है ।

वह चुप होकर चलने लगी । उनलोगों में कुछ देर के लिए सन्नाटा छा गया ।

“ और कहिए बाबा । वह बेचारी आपकी बातों.से रोने लगी । इस लिए मैं पूछ रहा हुँ । ” अव सामसुनदर ने वावा से कहा ।

,, तुम भी तो कम नहीं हो वेटा । रामचन्दर नहीं रहे तो सामसुन्दर तो हैं । सीता का पति कोई भगवान ही हो सकता है । वह तो समाज की कुछ ऐसी रुढ वाते हैं जो तुम जवानी में इसे नहीं निभा सके । पर प्रौंढावस्था में ही गर हुआ तो कोई वात नहीं ।,

“ मुझे उतना बडा सिंहासन पर मत बैठाओ बाबा । सीता तो ठीक है, उसने सभी कष्टों को सहा । मैने क्या किया ? सिर्फ देखता रहा । ।”

,,यही देखते–देखते तुम उसके साथ हो लिए यही क्या कम है ? एक नारी की रोज–रोज की पीडा देखकर, मरती हूई सीता की पीडा

DO NOT COPY

देखकर तुम्हारी संवेदना प्रगाढ होती गयी । तुमने मरती हुई सीता को अपनी सेवा से जीवनदान दिया । यह भी एक तपस्या है वेटे ।,,

सामसुन्दर भी चुप हो गया । पर बाबा रुक नहीं रहे थे । उन्हे इन तीनों के भय, प्रताडना एवं हीन भावना को तोडना था । जबतक इन हीन भावनाओं से कोई नहीं उवरता तबतक वह अपने स्वाभाविक भगवान को नहीं पहचान सकता । बाबा अब फातिमा की ओर मुखातिब हुए । फातिमा की सारी कहानी वे सीता से सुन चुके थे ।

“और तुम फातिमा, तुमको तो कोई हज करने की भी जरुरत नहीं है । किसी मन्दिर या मस्जिद जाने की जरुरत नहीं है । तुमने संसार का जितना हलाहल पिया है उतना हलाहल पीने की शक्ति केवल निलकण्ठ में है । तुम आत्म–हत्या भी कर सकती थी । पर आत्म–हत्या केवल कायर करते हैं । तुमने हलाहल पिया है संसार के । तुमने फिर भी जीवन को जीया है । यह अपने आप में कम नहीं है । फातिमा तुम पुत्रवती नहीं हो पर हाँसन–हुसेन तुम्हारे पुत्र हैं । वे कर्वला में सहीद हो गये । तुम उनकी माँ अकेली जिन्दा हो । ,,

फातिमा का सिना गर्व से उँचा हो गया । पिपरामठ का एक मामुली साधु इतनी उँची वात कह गया । एक हिन्दु सन्त ही इस तरह कह सकता है । जिसमे सर्वे भवन्तु सुखिनः,जिसमें वसुधैव कुटुम्बकम का भाव होगा वही यह कह सकता था । बाबा में मानवीय धर्मों का यह भाव भरा हुआ था । हिन्दु सन्त तो वे थे और हिन्दु धर्म की ही बातें करते रहते थे पर अपनी जगह पर उन्हे किसी अन्य धर्म के प्रति समभाव की कमी नहीं थी । वे सीता के गुरु , एक मामूली साधु पर एक सुलझे हुऐ सन्त थे ।

जानकी मंदिर आ गया । सभी लोगों ने मंदिर में प्रवेशकर सीता माता का दर्शन किया और प्रसाद, माला लेकर कुछ और देखने चले । विवाह मण्डप, राममन्दिर, जनक मन्दिर, विभिन्न तालावों

आदि को देखते हूए वे लोग धनुष–स्थल देखने चले गये । जनकपूर तो पूरा तालावों का शहर है । शहर तो क्या है यह एक गाँव है । पर इसी गाँव में कभी जनक और याज्ञवलक्य का बास था । नेपाल अपने इस सांस्कृतिक धरोहर से धन्य हो गया है । शिव ,वुद्ध और सीता का जहाँ जन्मस्थली हो वह देश सभी तरह से समृद्ध होना चाहिए । यह देश इतना पिछडा और दयनीय क्यों है ? तुम अपना अध्यात्म और राजनीति सुधारो । तुम दुनियाँ का महानतम देश हो ।

धनुषस्थल को देखकर चारों लौट गये । अव बस पकडकर वीरगंज लौटना था । वहाँ से वीरगंज के लिए केवल लोकल वसें मिलती हैं । वह भी केवल साम ४ बजे तक अन्तिम बस होती है । परन्तु खास अवसरों पर रात में भी ये लोकल बसें चलती रहती हैं । उपद्रवों के चलते रात में बसें नहीं चलती थी । पर शिवरात्री के अवसर पर रात में भी चलती है जिसमें वे सवार हुए । बस अपने गंतब्य की ओर रवाना हूई ।

बस सरफट भाग रही थी । वस्ती, जंगल, फिर बस्ती जंगल, इस तरह पार करती हूई बस निजगढ पहुँची । निजगढ में कुछ लोग उतरे और बस चल दी । वीरगंज की बस होने के कारण सभी उधर के ही लोग बैठे हूए थे । निजगढ को पार कर बस निजगढ और पथलैया के जंगल के बीच में पहूँच गयी ।

“ऐ रोक बस ।” बीच सडक पर कुछ नौजवान खडे थे । ड्राइवर को किसी अनहोनी की आशंका हो गयी पर उसे बस रोकना पडा । वे सभी नौजवान शराब के नशे मे धुत थे ।

“ शाला–तुम जानते नहीं ? हम चुरे भाँवर के लोग हैं । कौन बैठा है शाला ? वीरगंज की बस है । सब शाले मधेशिया हैं । हमारे लोगों को मारते हैं शाले वीरगंज में । ,,

सभी नौजवानों ने बस को चारों ओर से घेर लिया । बस के सभी सवार दहशत से सन्न थे । सब चुपचाप अपनी सीट पर

DO NOT COPY

दुबके हूए थे या खडे थे । उन नौजवानों ने बस के चारों ओर पेट्रोल छीट कर उसमें आग लगा दी । अब क्या था । बचाओ,बचाओ ,त्राहि त्राहि की चीख पुकार मच गयी । कण्डक्टर दरवाजे पर खडा था । वह दरवाजा खोल कर भागा । सामसुन्दर, सीता, फातिमा और बाबा दरवाजा खुलते ही चारों उतर कर भागे । वे वहसी नौजवान बसको भागते हुए दृश्य देखना चाहते थे । ड्राईवर दहशत में बस चलाने लगा । वे लोग ठठाकर हँसते और ताली बजाते । शाला गोंइत पहाडियों को मारता है । धर्म करने आये थे ये मधेशी । जाइए परलोक अब । जो होना ही था, बस आगे जाकर पलट गयी और धुँ धुँ कर जलने लगी । उसमे सभी लोग खाक हो गये ।

इधर भागते हुए पीछे पड गये सामसुन्दर को किसी ने गोली मार दी । सीता ने सामसुन्दर को गोली लगते हुए देखा । उसने बाबा के हाथ से त्रिशुल ले लिया । वह लौट पडी । शरीर में आग लगी थी । पर उसी हालत में उसने चार लोगों के पेट में त्रिशुल भोंक दिया । वे वही ढेर हो गये । उसके बाद वह फिर जंगल की ओर भागी । सामसुन्दर के पीठ पर गोली लगी थी । वह बाबा की ओर भागा । फातिमा और सीता एक साथ भागे । वे लोग जंगल में घुस गये । एक दुधिया पगडंडी पर लोग दौड रहे थे । कपडों मे आग लग चुकी थी । दुधिया पगडंडी कुछ दुरी पर समाप्त हो गयी । वे प्राणरक्षा में बदहवास भागे जा रहे थे । जब पगडंडी समाप्त हो गयी तो कोई इधर, कोई उधर जहाँ वन पडा भागे । वे चारों इधर–उधर कुछ दुरी पर वेहोस हो गये । सिता गिर पडी –

निलाम्भुजल श्यामलकोमलांगम
सीता समारो पीतवाम भागम ।
पाणौं महाशायक चारु चापम
नामामि रामम–रघुवंश नाथम् ।

DO NOT COPY

वह वेहोश हो गयी इसी मंत्र के साथ ।

उधर फातिमा गिर कर कुरान की आयत पढ रही थी ।

अल्लाहम मगिकर लि मुदिना व

....

दिव्यदास मृत्यु से विजय की प्रर्थना करते हुये वेहोस हो गये ।

ओम त्र्यम्वके यजामहे सुगन्धिम पुष्टिवर्द्धनम

उर्वारुकमिव वन्धनान्मृर्त्योभुक्षियमा अमृतम

सीता रामचन्दर और अपना फोटो अपने पास हमेशा रखती थी । उसने उसे सिसे में मढवा लिया था । वह उसे अपने व्लाउज के अन्दर ऐसे रखती जैसे अन्य औरतें रुपयों को रखती है । रामचन्दर उसकी सवसे वडी सम्पति था । सीता जव गिरी तभी वह फोटो छिटक कर कुछ दुरी पर गिर पडा । उसी समय एक आश्चर्य , एक चमत्कार हो गया । वगल के पेंड पर एक वहुत वडा वानर इसे देख रहा था । वह कुद कर उस फोटो को इधर उधर पलट कर देखने लगा । उसने उसे कुछ खाने की चीज समझा था । वह उस फोटो को लेकर चलते वना । जिधर वह चला उधर सावित्री गिरी थी । आग पत्तों में भी लग चुकी थी । वानर की पुँछ में आग लग गयी । वानर फिर सीता की ओर मुडा । इधर भी पत्तों में आग लग चुकी थी । वह बानर बदहवास हो गया । दोनों के बीच बह बानर भी आग की लपटों में घिर चुका था । उसके शरीर में भी आग लग गयी । कुछ देर उछल कुद करने वाद वह भी बेहोश हो गया । कुछ देर के बाद उसने भी प्राण छोड दिये । कब सवने प्राण छोड दिये पता नहीं । वह बानर अपनी छाती पर रामचन्द्र और सीता का वह फोटो छिपाये चित पडा हुआ था मानो महावीर अपना सिना फाडकर राम और सीताकी छबि दिखला रहा हो । तभी हल्की बारिस होने

DO NOT COPY

लगी । पत्तों की आग बुझ गयी । तबतक सभी के प्राण पखेरु उड चुके थे ।

बस के सारे यात्री उसी में समाप्त हो गये । नौजवान अपनी हवस की आग शान्त करके जा चुके थे । पहाडी लोग मधेशियों को साम्प्रदायिक कहते हैं । यह क्या था ? यह सवाल उस बस के निरीह धर्म यात्री कर रहे थे । यह सवाल उस जंगल में पडे मधेश का एक सन्यासी ,सामसुन्दर,फातिमा और सीता पूछ रही थी ।

दुसरे दिन पुलिस आयी और बस के लोगों को ले गयी । शिनाख्त नहीं होने के कारण उनका सामुहिक दाह–संस्कार हुआ । जंगल में कोई भागा है किसी को पता नहीं । वे चारों लाश जंगल में उसी तरह पडे रहे । निजगढ के बहुत से कुत्ते, जंगल के सियार और कुत्ते इन चारों लाशो पर टुट पडे । वे उनके अधजले,अधपके मांस को भकोस रहे थे । सीता की वोटी–वोटी नोची जा रही थी । यह ऋषियों की तपश्चर्या के वूँद–वूँद से वनी सीता का वुँद–वूँद नोचा जा रहा था । उस माटी के चिथडे–चिथडे हो रहे थे ।

आदमी और जानवर में यही फर्क होता है । सीता के प्राणान्त का किसी को पता नहीं चला था । एक जानवर को इसकी भनक लग गयी । सीता के द्वारा पाले गये कुत्ते को इसका पता लग गया । वह घर से भागा और दौडते हुये उस जगह पर आकर दम लिया जहाँ सीता की लाश पडी हुई थी । निजगढ के कुत्ते उसकी वोटी–वोटी नोच रहे थे । कुछ देर तो वह मौन होकर सव देखता रहा मानो वह अपनी मालकिन की मृत्यु का शोक मना रहा हो । फिर अचानक उसने निजगढ के एक कुत्ते पर झपटा । उसने उसकी गर्दन पकड ली और तबतक नहीं छोडा जबतक निजगढ का कुत्ता मर नहीं गया । मानो उसने अपनी मालकिन के कत्ल का बदला ले लिया हो । तबतक और कुत्ते उसको बुरी तरह काट–काट कर जख्मी बना चुके थे । फिर सबने मिलकर सीता के कुत्ते को मार डाला और

उसके मांस भी खाने लगे । सीता के भतिजे ने अपने पुत्र का नाम अंश रखा था क्योंकि सीता ने उसको अंश नहीं दिया था । सीता की लाश चीख–चीख कर कह रही थी कौन सा अंश ? जिसको न उसे परिवार ने दिया , न समाज ने , न देश ने दिया ? मेरी वोटी–वोटी नोचा जा रहा है । तुम भी इन वोटियों से अपना अंश ले लो । ये निजगढ के कुत्ते हैं, तुम मधेश के कुत्ते हो । कोई फर्क नहीं । ले लो मेरी वोटियों से अपना अंश ।

तभी उस बडे बन्दर को खोजते हुऐ कई बन्दर आ गये । उन्होने अपने मुखिया बन्दरको बहाँ मरा पाया । उन्होने पता नहीं ची–ची–ची की किस भाषा में चिचियाने लगे । वे सभी उन कुत्तों से सीता और अपने मुखिया बानर को बचाने लगे । इस प्रक्रिया में उनमें एक प्रकार का युद्ध ही छिड गया । मानो राक्षसों और बानरों के बीच राम–रावण युद्ध हो रहा हो । अन्त में कुछ बानरों के झुण्ड मिलकर चारों तरफ से सीता के शरीर पर और अपने मुखिया वानर के शरीर पर सो गये । उनका शरीर उनसे ढक गया । उनके शरीर पर वे कवच बन गये । अन्य कई बानरों के झुण्ड के झुण्ड वहाँ आ पहुँचे । कुत्तों को भागना पडा । राम–रावण युद्ध में बानर भालू जीत गये थे । सीता बच गयी थी ।

इस तरह पडे–पडे सीता और उस बानर की लाश सडकर मिट्टी में मिल गयी । सीता धरती में समाहित हो गयी । उस जंगल का खाद बन गयी । हमारी सभ्यता में किसी की अत्येष्टि के बाद अस्थि संकलन के दिन उसकी चिता पर एक फूल का पौधा लगा दिया जाता है । सीता इस सौभाग्य से वंचित थी । पर उसकी लाश रुपी खाद के उपर एक फूल का पौधा उग आया–सिता फूल । उस वडे बानर की लाश रुपी खाद के उपर एक अशोक उग आया । लगता था, बह अशोक जंगल राज्य में ,रावण की गढ लंका में सीता को छाँह एवं संरक्षण दे रहा हो ।

DO NOT COPY

युग युगों तक वह वहाँ रहेगा और पुछता रहेगा : सीता कहाँ की माँ थी और है ?

समाप्त

२०६९।०८।०४
संध्याकालीन छठव्रत के मध्य रात १२ वजे

डा.शिवशंकर यादव

....
..

जीतेन्द्र सोनल ने मानवाधिकारवालों ने इस घटना को इस तरह सम्बोधन किया ।
“हम जयकृष्ण गोइत से अपील करते हैं कि वह इस देश को अपना देश समझे । अब यह देश तुम्हारा है । माना कि पृथ्वीनारायण ने मधेशको जीत लिया । माना कि राणओं ने तुम्हारा शोषण किया है । माना कि पहाडी समुदाय ने तुम्हारे जंगल और जमीन पर कब्जा कर लिया । पर वे सभी अतीत की वातों को भुल जाओ । पहाडी भी तुम्हारे भाई हैं । आओ तुम दोनों मिलकर ईस देश को सजाओ , सिंगारो । आज दुनियाँ के सामने हमें उन्नति करके दिखलाना है । आज देश पीछे की ओर भाग रहा है । अवनति के मार्ग पर जा रहा है । गरीवी से हम जर्जर हो गये हैं । इसमे नरसंहार का खेल मत खेलो । पहाडी भाइयों एवं नेताओं को भी हम कहते हैं । मधेशी को मधेश लौटा दो । एक मधेश , एक प्रदेश दे देने से कुछ चला नहीं जायेगा । इस देशका टुकडा नहीं हो जायेगा । माल्कियत की हक को छोडो भाई । मधेश के मालकियत का हक मधेशी को है । मधेशी को गले लगाओ और उसका मालिक उसको बना दो । फिर देखना

पहाडी और मधेशी दोनों मिलकर इस देशको चाँद पर नहीं पहुँचा दे तो कहना। पहाड के लोग बहादुर हैं, मधेश के लोग भी कर्मठ हैं। उन्हे कायर क्यों कहतो हो ? तुम्हारे इसी कहने और करने का नतीजा है –जयकृष्ण गोईत। नहीं अब समय आ गया है, हमारे एक होने का। वह एकता मजबुत करो मेरे भाई नहीं तो यह देश छिन्न–भिन्न हो जायेगा। यह समाज ही नष्ट हो जायेगा। पडोसी इसकी राह देख रहे हैं।'' वस मधेश सेवा आश्रम से खुली थी। जीतेन्द्र सोनल उन लोगों को विदा किया। जहाँ वस रुकती या नहीं रुक्ती तो भी वह हर जगह के बारे में कुछ बोलते जा रहे थे। फातिमा नयी थी और नेपाल के बारे में कुछ नहीं जानती थी। सिताको वावा जगहों का परिचय मात्र देते जा रहे थे।

वस सबसे पहले हेटौडा रुकी। उनलोगों नें उतर कर भुटनदेवी माई का दर्शन किया। बाबा ने हेटौडा का परिचय दिया। सिता यह वही जगह है जहा सेन् राजा तुम्हारे बारा जिल्ला से आकर राज्य करते थे। पृथ्वीनरायण शाह का विवाह यही हुआ था। बाद में इसे जीतकर उन्होने अपने राज्य में मिला लिया। यही पर तुम्हारे पुर्वज बैलगाडी से धान का ब्यापार करते थे। पहले यह कुछ भी नहीं था। बस अव तक खुल चूकी थी। वस सरपट भागी जा रही थी। हमलोग जिस सडक पर चल रहे हैं, यह पुरव–पशिचम राजमार्ग है। राजा महेन्द्र ने इसे बनाया। पद्मरोड न बनाकर उन्होने इसे क्यों बनाया पता नहीं। सभी जिल्ला के सदर मुकाम से होकर हुलाकी राजमार्ग गुजरता था। वह मौजुद था ही तो फिर इसे क्यों बनाया ? यह राजमार्ग किसी जिल्ला के सदरमुकाम से होकर नहीं गुजरता। सभी सदर मुकाम इससे २५ कि.मी. दुरी में पडते हैं। चारकोसे जंगल का विनास हो गया। पहाड के सभी लोग आकर इस सडक के आस–पास वस गये जिन्होने हमारे सभी अवसर छीन लिए। हमारे अस्तित्व

पर खतरा मंडराने लगा है । पहले यहाँ जंगल के बीच दुर–दुर पर थारुओंकी वस्ती थी । वे सभी लोग पहाडियों के हलवाहे हो गये । पहाडियों ने चुरे भाँवर नाम की एक संस्था भी वना ली है । पहले वे लोग कहँ थे पता नहीं । मेची से महाकाली तक सभी भीतरी मधेश को उनलोगों ने कब्जा कर लिया है । यह टाडी है । यह टिकौली का जंगल है । यह अव आर–पार दिखलाई पडता है । अब हमलोग नारायणघाट पहुचेंगें ।

बस नारायणघाट पहँची और रुकी । चारों वहाँ उतरे और नारायणी नदी के किनारे घुमने एवं नारायणी का दर्शन करने चले गये । बाबा ने बताया कि यही नारायणी नदी है । इसी में सोनपूर के पास भगवानको गरुण छोडकर आना पडा था । अभी भी इस नदी में मगरमच्छों की भरमार है । हम उपर के राजमार्ग से काठमाण्डु जाते थे । उसका नाम त्रिभुवन राज पथ है । जब चीन के सरकार ने काठमाण्डु पोखरा राजमार्ग बानाया तब से यहाँ से होकर जाते हैं ? यह नारायण घाट एक गाँव था । अव बहुत बडा शहर हो गया है । यह चितवन जिल्ला है । यहाँ राजा महेन्द्र का एक दरवार है । राजा यहाँ शिकार खेलने आते थे ।

नारायणी नदी के उस पार नवलपरासी जिल्ला है । वही पर वाल्मिकी आश्रम है । वही पर सिता नेपाल मे पैदा हूई और नेपाल में ही सभाधिस्थ हुई । उसके उधर वुटवल है । सुनते हैं वुटववल में करोडों वर्ष पहले के मनुष्य का जिवाष्म मिला है । इससे तुम लोग जान सकती हो कि नेपाल कितना पुराना है ? उसके पश्चिम में कपिल वस्तु है । भगवान वुद्ध वही पर पैदा हुए थे ।

वस फिर चली .... यह राम नगर है । यहाँ पर लोग खाना खाते है । यह नगर–वगर कुछ नहीं था । केवल घनघोर जंगल था । उसी के बीच में यह प्रकट हो गया है । चितवन मे रामनगर, सिता नगर,गीता नगर इसी तरह नये–नये गाँव मिलेंगें । यहाँ एक गाँव दुसरे गाँव से ग्रेवेल या पक्की सडकों से जुडी है । जिस तरह कोई शहर प्लनिंग करके बनता है । पर पदम रोड नहीं वना । तराई के गाँवों में अभी भी धुल एवं कीचड भरे होते हैं । वहाँ इस तरह की कोई सुविधा नहीं है । यह सभी राजा महेन्द्र ने किया ।

बस मुगलिंग मे जाकर रुकी । सभी लोग वहाँ खाना खाने तथा नारायणी और मस्याँगदी नदी देख आये । फिर बस वहाँ से खुली । बाबा ने बताया उस पुल से होकर सडक पोखरा जाती है । कुछ दुर मुडने पर एक सडक गोरखा जाती है । गोरखा में राजा पृथ्वीनारायण का दरवार है । उनकी राजगद्दी देखने से ऐसा लगता है कि ऐसी घटिया गद्दी तो मधेश के किसी छोटे से छोटे जमीन्दार का भी नहीं था । परन्तु उन पर बाबा गोरखनाथ का आर्शिवाद था–दश पुस्तों तक राज्य चलेगा । नाथ संप्रदायो ने भारत के मुसलिमों के विरुद्ध नेपाल को एक अलग शुद्ध हिन्दुस्थान बनाया । मर्स्यांग्दी के उस पार मनकामना मंदिर है । वहाँ बहुत लोग अपनी मनोकामना पुरा करने के लिए उनका दर्शन करने जाते हैं ।

उसके वाद बस पहाडों से होती हुई निकलती जा रही थी । वे लोग अव उँघने लगे थे । जब निन्द खुली तब वे लोग काठमाण्डु बस स्टैन्ड पर थे । यह कलंकी है । यहाँ से अब हमलोग मरवाडी सेवा सदन में चलकर रहेंगें । यह काठमाण्डु है अलकापूरी,कन्तिपूरी नगरी । पहले यह वहुत छोटा था । अब यह विशाल महानगर वन गया है । हमारे पृथ्वीनरायण ने इसे जीत कर इसकी सिमा को गंगातट तक

DO NOT COPY

पहुँचा दिया । कुछ नेवार लोग ईस पर गर्व करते हैं क्योकि इसका नाम उन्होने गोरखा न रखकर नेपाल ही रखा । प्राचीन काल में यह एक भीेल था । भगवान कृष्ण ने आकर अपने चक्र से पहाडों को काट डाला । जब सभी पानी उस भीेल से निकल गया तब कलान्तर मे ने मुनि के नाम पर इसका नाम नेपाल पडा

रास्ते भर फातिमा और सिता बाबा की बातों को सुनती एवम परिचय करती गई । शामसुन्दरको यह सब मालुम था । बाबा के अ्ल्प ज्ञान से सिता और फातिमा को लगा कि वह बहुत कुछ जान गई । वहा से लोगों ने टेप्पु करना

....

रात लोग माडवारी सेवा सदन मे रहे । माडवारी वासा मे एक बहुत बडा नेपाल का नक्सा टंगा हुआ था । बाबा ने फातिमा से कहा जानती हो यह नेपाल का नक्सा है । यह इतना टेढा मेढा क्यों है बतला सकती हो ?

,,ना बाबा हम यह सब क्या जाने ? आप ही बताईये । नेपाल के बारे में आप से सुनकर बडी उतसुकता हो रही है ।,,
,, तो सुनो । यह किसी के भी पुछने का बहुत बडा सवाल है । संसार मे किसी भी देशका नक्सा इतना टेढा–मेढा नहीं है । उतर मे पहाडों एवम हिमालय की ओर नक्से को टेढा मेढा होना समझ में आता है क्योकि पहाडियाँ टेढी–मेढी होती हैं । पर तराई तो बिल्कुल समतल मैदान है । पर दक्षिण मे तो नक्सा उतर से भी अधिक टेढा–मेढा क्यों है ?,,
,,ह बाबा यह तो है । यह हमने भी देखा है हमारे घर मे है । क्यों ऐसा है ?,, अब सिता ने भी पुछा ।

DO NOT COPY

,,जब आंग्रेजों ने नेपलियों से युद्ध जीत गये तब तुम्हारे ही गाँव के पास सुगौली में एक संधि हुई । ये नेपाली लोग झुठ बोलते हैं कि अंग्रेजों को तीब्बत के साथ व्यापार करना था इसिलिए अंग्रेजों ने नेपाल पर हमला किया । नेपाल अंग्रेज चाहते तो जीत कर तीब्बत चले जाते, क्या हर्ज था ? सुगौली की संधि अगर वे लोग नहीं करते तो कोई क्या कर लेता ? पर सुगौली की संधि हुई । संधि के बाद सिमांकन होने लगा । उस समय सिमा के स्थानिय लोगों से पूछा जाता था कि वे कहाँ रहना चाहते हैं । नेपाल में या भारत में ? तुमको जानकर आश्चर्य होगा कि उस समय कोई भी अंग्रेजों के राज्य में रहना नहीं चाहा । वे लोग हमारे हिन्दु देश नेपाल में ही रहना चाहते थे । जैसे–जैसे वताते जाते,सिमांकन होता । अंग्रेजो को इससे कोई लेना देना नहीं था । क्योंकि वे तो मधेश की जनता को दो हिस्सों में वाँटना चाहते थे । वाँट दिया । एक ही शरीर के दो टुकडे हो गये । आधी जनता नेपाल में और आधी जनता भारत में हो गयी । इस तरह अंग्रेज जनता को वाँट कर उससे होने वाले भावी खतरे से मुक्त होना चाहते थे । इस तरह नेपाल का नक्सा इतना टेढा–मेढा हुआ । सीमा के सभी लोगों ने नेपाल पसन्द किया । आज वही नेपाल, उसी जनता को भारतीय कह कर उसे विस्थापित करने के सारे सडयन्त्र कर डाले हैं । अंग्रेजों ने अनिच्छा से ही सही यह सर्त रखा कि इस जनता को नेपाल सरकार के द्वारा प्रताडित या कोई अहित नहीं करना होगा । पर वैसा कहाँ हो रहा है ? अंग्रेजं चले गये । अव किसी को क्या मतलब ? तुम,हम सब वही जनता हैं ।

सुनकर सभी लोग गम्भीर हो गये । फिर सबने मारवाडी भोजनालय में शाकाहारी खाना खाया और सो गये । यहाँ से थोडी दुर पर ||||||||||||||||||||||||||||||||||||||||||||||||||||||||||||||त्रिशुली गण्डकी का संगम है जिसे देवघाट कहते हैं । वही पर जहाँ सिता धरती में समा गयी थी वह

DO NOT COPY

पवित्र सिता खोल्सा है । देवघाट में लोग मोक्ष प्राप्त करने आते हैं । जीवन के सांध्य वेला में यह उनका पनाह है ।

ए ए ए

Copyright @ 2022by Dr Shiva Shanker Yadava

All rights reserved. No part of this book may be reproduced or used in any manner without permission of the copyright owner except for the use of quotations in a book review.

DO NOT COPY